आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रेल, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रेल, 2015 ★ वैशाख, 2072

ISSN
2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

\- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

\- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

\- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Rec 18/4/15 2976

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।
-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।
- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

समणा मु एगे वयमाणा,
पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा निरयं गच्छंति,
बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.7

अज्ञान भाव से हिंसा कर,
अपने को श्रमण बताते हैं।
पापदृष्टि से बालजीव,
मतिमन्द नरक में जाते हैं।।

अप्रैल, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
वैशाख, 2072

वर्ष 73 अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	जयतु इन्दौर-सम्मेलनम् –डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी –डॉ. धर्मचन्द जैन	11
	विचार-वारिधि –आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	संयम एवं सामायिक से होता है जीवन-निर्माण –आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
	वितरण एवं मर्यादा से बनते हैं महान् –उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.	18
	अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा करें आचरण –श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	22
शोधालेख-	स्थानांगसूत्र में ध्यान : एक अध्ययन –साध्वी श्रद्धाञ्जनाश्रीजी	28
	जैनदृष्टि तथा आधुनिक अर्थनीति –मुनि श्री मनीष सागरजी	40
अध्यात्म-	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (2) –श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	38
	भावना और भेदविज्ञान –डॉ. दिलीप धींग	57
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (9) –मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	49
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (93) –श्री धर्मचन्द जैन	54
संस्कार -	ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण ही होना चाहिए –आचार्य श्री विजय रत्नसुन्दरसूरिजी म.	61
युवा-स्तम्भ-	शासन के अनुशासन को सहज करें स्वीकार –श्री नितेश नागौता जैन	63
नारी-स्तम्भ-	जीवन-प्रबन्धन का अनमोल सूत्रः सकारात्मक दृष्टिकोण –प्रो.सुमेरचन्द जैन	66
अंग्रेजी-स्तम्भ-	ŚRĀVAKĀCĀRA AND PANCĀCĀRA (3) *-Dr. H. Kushal Chand*	73
संवाद-	जिनशासन की दीक्षा (4) –आचार्य विजययोगतिलकसूरिजी म.सा.	80
बाल-स्तम्भ -	उत्तराध्ययनसूत्र से सम्बद्ध संक्षिप्त कथाएँ –श्री दुलीचन्द जैन	87
चिन्तन/विचार-	प्रवचनांश –आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज	17
	संयम जीवन : आदर्श जीवन –श्री अनिल कुमार जैन	27
	दान –डॉ. धर्मचन्द जैन	37
	नारी सुरक्षा –श्रीमती पुष्पा मेहता	48
	नई पीढ़ी को दबाएं नहीं, निर्णय की आजादी भी दें –डॉ. पुष्पेन्द्रमुनिजी	60
	फाल्गुनी चौमासी पर्व पर सन्तों के अभिव्यक्त विचार –संकलित	84
कविता/गीत-	यही सत्य का सुखद मर्म है –श्री निर्मल जामड़	79
	समाधान भगवान से –श्री प्रमोदचन्द महनोत	86
	सुख-शान्ति –श्री पीरचन्द चोरडिया	90
	कौन हूँ मैं, कौन है मेरा? –सुश्री लक्ष्मी जैन	97
	लघु कविताएँ –डॉ. रमेश 'मयंक'	124
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (चतुर्थ) -संकलित	91
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य –डॉ. श्वेता जैन	96
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन -संकलित	98
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार -संकलित	125

सम्पादकीय

जयतु इन्दौर-सम्मेलनम्

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जिस प्रकार आत्मसुधार के लिए आत्म-दोषों का अवलोकन, उनकी शुद्धि हेतु प्रयत्न तथा भविष्य में दोषरहित जीवन जीने का दृढ़ संकल्प उपयोगी होता है, उसी प्रकार संघ एवं समाज के स्तर पर भी दोषों का आलोचन कर उनकी शुद्धि हेतु प्रयत्न तथा नूतन संकल्पों का सजगता एवं दृढ़ता के साथ पालन करना आवश्यक होता है।

अभी 20 से 29 मार्च 2015 तक इन्दौर नगर के महावीर बाग में श्रमण संघ के शास्ता ध्यानयोगी आचार्यप्रवर डॉ. शिवमुनिजी के सान्निध्य में आयोजित बृहद् साधु-साध्वी सम्मेलन में चतुर्विध संघ में आई शिथिलता एवं दोषों का अवलोकन कर परिष्कार हेतु विचार-मंथन किया गया। 550 से अधिक साधु-साध्वियों की सन्निधि में गहन मंथन के परिणामस्वरूप अनेक सुधारात्मक नये नियम बनाए गए, जो श्रमणसंघ के उज्ज्वल एवं श्रेयस्कर भविष्य हेतु महत्त्व रखते हैं।

पूर्व में भी स्थानकवासी श्रमण-संघ के सम्मेलन सन् 1933 में अजमेर में, सन् 1952 में सादड़ी में, सन् 1956 में भीनासर में तथा सन् 1987 में पुणे में भिन्न-भिन्न उद्देश्यों को लेकर सम्पन्न हुए हैं। इन सम्मेलनों में श्रमण संघ को सुदृढ़ एवं स्वच्छ बनाने हेतु प्रयत्न हुए। उसी शृंखला में 28 वर्ष पश्चात् इन्दौर में यह सम्मेलन पुनः श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के आह्वान पर आयोजित हुआ है। इस सम्मेलन की महती आवश्यकता थी, क्योंकि साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका अपनी मर्यादा को लांघ रहे थे।

इन्दौर नगर में साधु-साध्वियों का आगमन देश के विभिन्न भागों से मार्च माह के प्रारम्भ से ही होने लगा था। 8 मार्च को प्रेस्टीज परिसर में आयोजित समारोह में आचार्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. का नागरिक-अभिनन्दन किया गया। 11 मार्च को आत्मध्यान साधना का आधारभूत शिविर तथा 12-15 मार्च तक आवासीय ध्यान शिविर महावीर बाग में आयोजित हुआ, जिसमें सन्तों एवं महासतियों के साथ साधकों ने ध्यान का अभ्यास किया। 16 एवं 17 मार्च को महावीर भवन, इमली बाजार में आयोजित विशाल धर्मसभा में आचार्य डॉ. शिवमुनिजी ने कहा-"हमारा श्रमण संघ उदारवादी है, जो त्याग की नींव पर खड़ा है। हम सबको मिलकर इसके गौरव को बढ़ाना है।" 18 मार्च को इमली बाजार से 550 से अधिक श्रमण-श्रमणियों का विशाल मंगल जुलूस राजवाड़ा, यशवन्त रोड़, जवाहर मार्ग, महेश नगर चौराहा होता हुआ महावीर बाग पहुँचा। सम्पूर्ण मार्ग जैन-ध्वजों एवं स्वागत द्वारों से सजा हुआ था। सड़क के दोनों ओर पंक्तिबद्ध होकर हजारों लोगों ने आचार्यश्री एवं संत-सती

मण्डल के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। अनेक महिला मण्डलों, युवक-संघों के साथ नर-नारियों ने जय-जयकार करते हुए इस मंगल यात्रा में भाग लिया। मार्ग में अनेक स्वागत मंचों से सन्तों एवं साध्वी मण्डल का अभिनन्दन किया गया। महावीर बाग पहुँचने पर आचार्य डॉ. शिवमुनिजी ने हजारों श्रद्धालुजनों को मंगल-पाठ प्रदान किया। इन्दौर नगर के इतिहास में प्रथम बार श्री स्थानकवासी जैन समाज का इतना विशाल एवं अनुशासित जुलूस पूरे शहर में चर्चा का विषय बना रहा।

19 से 26 मार्च तक विभिन्न सत्रों में संयमी जीवन की समाचारी पर संत-सतियों ने आचार्य श्री की सन्निधि में गहन चिन्तन-मनन किया। युवाचार्य पद पर आसीन करने योग्य संत के सम्बन्ध में भी चिन्तन चला। सन्तों की शिक्षा, सुरक्षा, अनुशासन एवं मर्यादाओं के पालन आदि विषयों पर सकारात्मक चर्चा की गई।

27 मार्च को दलाल बाग परिसर में श्रावक-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें श्रमण संघ के महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी कुमुद ने **साधु-समाचारी** के सम्बन्ध में कृत निम्नांकित निर्णयों से अवगत कराया-

1. वर्ष 2015 के चातुर्मास से मोटर, कार, वेन आदि का उपयोग बन्द किया गया।
2. कालसर्पयोग आदि दोषों से सम्बन्धित सभी प्रकार के जाप आदि बन्द किये गए। मंत्र, तंत्र, टोना-टोटका आदि का प्रयोग भी वर्जित किया गया।
3. अनुष्ठान, कलश आदि की स्थापना को प्रतिषिद्ध किया गया।
4. सन्तों एवं साध्वियों द्वारा धन एकत्रित करने एवं इस प्रकार के कार्यक्रम में सहयोग करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई गई।
5. गरम पानी अथवा धोवन पानी के ही उपयोग का विधान किया गया, केन आदि का उपयोग बन्द किया गया। इस निर्णय से ध्वनित होता है कि शौचालयों का प्रयोग करते समय साधु-साध्वियों द्वारा अचित्त जल का उपयोग किया जाएगा।
6. कपड़े के चप्पल-जूते का उपयोग लम्बे विहार में ही हो सकेगा। यहाँ ध्यातव्य है कि साधु-साध्वियों के लिए कपड़े से विशेष प्रकार के जूते-चप्पल बनाए जाते हैं।
7. चातुर्मास की विनति हेतु 11 व्यक्ति उपस्थित हों, कोई भी संघ इससे अधिक व्यक्तियों को बसों के माध्यम से नहीं ले जाए। यह निर्णय श्रावकों से भी सम्बद्ध है। श्रावकों को निर्देश किया गया कि वे संघ द्वारा पारित प्रस्ताव का पत्र स्वीकृति हेतु सम्बन्धित पदाधिकारी संत को प्रस्तुत करें।
8. शहर या गाँव में रहते हुए टिफिन का उपयोग पूर्णतः बन्द किया गया। विहार में गृहस्थ के द्वारा अपने लिए लाए गए टिफिन में से आहार लेने की छूट रहेगी।

9. संत-सतियों के लिए मोबाइल, लेपटॉप आदि के प्रयोग पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगाया गया।
10. सभी बड़े समारोहों में अधिक धन-व्यय करवाने का निषेध किया गया।
11. सन्त एवं साध्वी-मण्डल शहरों के साथ ही छोटे-छोटे गाँवों में भी चातुर्मास करेंगे। वे 3 से 4 की संख्या में रहकर चातुर्मास करें, जिससे अधिक क्षेत्रों को लाभ मिले।

श्रावक-समुदाय को लक्ष्य में रखकर भी कई निर्णयों की घोषणा की गई जिनका समुपस्थित 10000 से अधिक भाई-बहिनों ने हाथ उठाकर समर्थन किया। इनमें कुछ निर्णय श्रमण-श्रमणियों एवं श्रावक-श्राविकाओं दोनों से सम्बद्ध हैं-

1. धार्मिक एवं सामाजिक समारोह की निमन्त्रण-पत्रिकाएँ संक्षिप्त एवं सादगी पूर्ण होंगी। इसका तात्पर्य है कि बहुरंगी एवं अधिक पृष्ठों की महंगी पत्रिकाओं पर रोक लगायी गई है।
2. भगवान महावीर, आचार्य भगवन्त एवं उपाध्याय भगवन्त तक की जन्म-जयन्ती एवं दीक्षा-जयन्ती मनाई जाएगी।
3. धर्म-सभाओं में अतिथियों का स्वागत शाल एवं माला से न करके भावपूर्ण शब्दों से किया जाएगा। सम्भव हो तो साहित्य भेंट किया जाएगा।
4. सन्तों के नाम पर समाधियाँ या मठ बनाने से मिथ्यात्व का पोषण होता है। अतः इनके स्थान पर वृद्ध एवं रोग से पीड़ित साधु-साध्वियों की सेवा हेतु स्थिरवास-धाम बनाए जायेंगे।
5. भक्तों के सहयोग से प्रकाशित साहित्य निःशुल्क वितरित हो रहा है, जिसका उपयोग न होने पर रद्दी में विक्रय कर दिया जाता है। अतः जैन कॉन्फ्रेंस विद्वानों की समिति बनाकर उपयोगी साहित्य-प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करेगी।
6. दीक्षा-प्रदान करने से पूर्व मुमुक्षु परिवार की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जानी चाहिए। दीक्षा से पूर्व पाँच वर्षों तक धार्मिक ज्ञान एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उसके पश्चात् आचार्य भगवन्त के समक्ष प्रस्तुत होकर दीक्षा दिये जाने का स्वीकृति-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होगा। दीक्षा-समारोह अत्यन्त ही सादगी पूर्ण रहेगा। दीक्षा की उम्र का निर्धारण देश-काल की परिस्थिति के अनुसार होगा।
7. तप का उद्देश्य आत्मसाधना व कर्मनिर्जरा करना है। तप में आडम्बर से तो कर्म बन्धन ही होता है। अतः तप समारोह सादगीपूर्ण विधि से सम्पन्न होंगे।
8. अक्षय तृतीया पर वर्षीतप के सामूहिक पारणे में सभी उपस्थित लोगों को गन्ने का रस पिलाने की प्रवृत्ति चल रही है। इस अविवेक के कारण असंख्य सूक्ष्म जीवों की हिंसा का पाप हो रहा है। इसलिए तपस्वी ही गन्ने के रस से पारणा करेगा।

9. स्थानीय श्रावक संघों के सहयोग से मार्ग में 'विहार धाम' बनाये जायेंगे, जिनमें साधु-साध्वी विश्राम कर सकें।
10. समाज के बच्चों के जीवन में धार्मिक ज्ञान व चारित्र निर्माण हेतु देश में संस्कार केन्द्र स्थापित किये जायेंगे।
11. विवाह समारोह सादगीपूर्ण व दिन के समय होगें ताकि जीव हिंसा न हो। भोजन में जमीकंद का निषेध रहेगा तथा 21 प्रकार के व्यंजनों से अधिक नहीं परोसे जायेगें। सड़कों पर नाचना व आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहेगा। फ्लावर डेकोरेशन नहीं होगा।
12. मांसाहारी होटलों में विवाह समारोह एवं अन्य सामाजिक आयोजन नहीं होंगे।
13. साधु-साध्वियों के विहार हेतु उनकी समुचित व्यवस्था स्थानीय श्री संघों के माध्यम से की जायेगी।

समाजहित के उपर्युक्त निर्णयों को सम्पूर्ण समाज में लागू करने हेतु समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जायेगा।

बृहद् साधु-साध्वी सम्मेलन में साधु-साध्वियों एवं श्रावक-समाज के परिष्कार हेतु किए गए उपर्युक्त निर्णय निश्चित रूप से सराहनीय हैं। इन निर्णयों की अनुपालना दो प्रकार से हो सकती है- 1. स्वेच्छा से शिरोधार्य करके, 2. अनुशासन का प्रयोग करके। जो साधु-साध्वी इन निर्णयों अथवा नियमों को आत्महित एवं जिनशासन के हित की दृष्टि से स्वीकार करेंगे, उन्हें इन नियमों का पालन करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। जो इन निर्णयों का संघ की आज्ञा एवं संघनायक की हितदृष्टि का आदर कर पालन करेंगे उन्हें भी स्वयं में सुधार का एवं प्रमोद का अनुभव होगा। सन्त एवं सतियों के सिंघाड़ों के प्रमुखों की इसमें महती भूमिका रहेगी। वे नियमों का पालन किस प्रकार कराते हैं, यह उनकी समझ एवं समन्वय की दृष्टि पर निर्भर करेगा। स्व-अनुशासन से बढ़कर आत्म-सुधार का अन्य कोई उपाय नहीं है। मैं दोष करूँ, किन्तु दूसरा न देखे वहाँ तक ठीक है, ऐसा समझने की दृष्टि भी बदलनी होगी। केवली भगवान से तो हमारा दोष छिप नहीं सकता तथा स्वयं से भी वह नहीं छिप सकता, इसलिए स्व-सजगता एवं स्वानुशासन से ही आत्मसुधार एवं संयम-जीवन की उत्कृष्टता का आस्वादन सम्भव होगा। दूसरी बात यह है कि अभी जो मोबाइल, इण्टरनेट आदि के माध्यम से बाहरी संसार में रस आ रहा है, वह आगम-स्वाध्याय एवं ध्यान का रस आने पर तुच्छ लगेगा। जो संत-साध्वी स्वेच्छा से निर्णयों की पालना नहीं कर सकेंगे, उनके लिए संघनायक का कठोर अनुशासन उपाय बनेगा। अनुशासन के अन्तर्गत प्रायश्चित्त एवं दण्ड-विधान का भी आवश्यक प्रयोग सहायक सिद्ध होगा। संक्षेप में कहें तो इन्दौर सम्मेलन में किए गए, इन निर्णयों की पालना किए जाने पर पाँच-दस वर्षों में श्रमण संघ के संत-सतियों की आचारनिष्ठा निखर जाएगी। **(शेषांश पृष्ठ 56 पर)**

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा।
णो हूवणमंति रातिओ, णो सुलभं पुणरावि जीवियं।।

-सूत्रकृतांग, 1.2.1

अर्थ- हे भव्यों! तुम बोध प्राप्त करो। बोध क्यों नहीं प्राप्त करते हो? मरने के पश्चात् परलोक में बोधि प्राप्ति दुर्लभ है। जो रात्रियाँ व्यतीत हो गईं, वे पुनः प्राप्त नहीं होती हैं और यह जीवन पुनः सुलभ नहीं है।

विवेचन- सूत्रकृतांगसूत्र की यह गाथा हमें सम्बोधि प्राप्त करने हेतु प्रेरित कर रही है। सम्यक् रूप से जानने की प्रेरणा कर रही है। सम्यक्रूप से जानने हेतु दृष्टि की निर्मलता एवं समता की आवश्यकता होती है। जिसकी दृष्टि मलिन है, आग्रही एवं दुराग्रही है वह सम्यक् रूप से जानने का प्रयत्न नहीं कर सकता। सूत्रकृतांग के टीकाकार आचार्य शीलाङ्क ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र की अवाप्ति को सम्बोधि कहा है- ''सम्बोधिः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रावाप्तिलक्षणा।'' उन्होंने सम्यग्दर्शन पूर्वक हुए सम्यग्ज्ञान के साथ आचरण का भी समावेश सम्बोधि में कर लिया है। वस्तुतः मानव-जीवन अत्यन्त दुर्लभ है। यह पुनः प्राप्त होगा या नहीं, इसकी कोई निश्चितता नहीं है, अतः इस जीवन को जितना सार्थक कर सकें, कर लेना चाहिए।

मनुष्य प्रायः रूढि एवं परम्पराओं अथवा अज्ञान के कारण ऐन्द्रियक सुखों में ही उलझा रहता है। वह इस जीवन का महत्त्व नहीं समझ पाता। अतः उसे सावधान करने के लिए कहा- समझो, क्यों नहीं समझते हो? सत्य को जानो, क्यों नहीं जानते हो? बोध प्राप्त करो, क्यों नहीं करते हो? साधु-सज्जनों की संगति या स्वाध्याय का अवसर मिलने पर जब शुभ भाव आते हैं तब बोधि प्राप्त करने का मन करता है, वह अवसर चूक गए तो फिर बोधि प्राप्त करने का पुन अवसर कठिन है। यह मनुष्य भव चला गया तो बोधि प्राप्त करना दुर्लभ है। यदि इस भव में प्रतिदिन टालमटोल करते रहोगे तो भी समय बीतता जाता है, ये जो रात्रियाँ बीत रही हैं तो यह पुनः प्राप्त होने वाली नहीं हैं (णो हु उवणंमति)। पुनः वैसा भाव आना भी कठिन है। यह जीवन पुनः मिलना आसान नहीं है, इसलिए इसका जितना सदुपयोग करना हो, कर लेना चाहिए। यह उपदेश प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा अपने 98 पुत्रों को दिया गया था, जो हर मानव के लिए समान रूप से आदरणीय है। उत्तराध्ययन में भी चार दुर्लभ अंग प्रतिपादित हैं- **(शेषांश पृष्ठ 53 पर)**

विचार-वारिधि

सामायिक

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- इस संसार में जितने भी दुःख द्वन्द्व, क्लेश और कष्ट हैं वे सभी चित्त के विषमभाव से उत्पन्न होते हैं। इन सबके विनाश का एकमात्र उपाय समभाव है। समभाव वह अमोघ कवच है जो प्राणी को समस्त आघातों से सुरक्षित कर देता है। जो भाग्यवान समभाव के सुरम्य सरोवर में सदा अवगाहन करता रहता है, उसे संसार का ताप पीड़ा नहीं पहुँचा सकता। समभाव वह लोकोत्तर रसायन है, जिसके सेवन से समस्त आंतरिक व्याधियाँ एवं वैभाविक परिणतियाँ नष्ट हो जाती हैं। आत्मा रूपी निर्मल गगन में जब समभाव का सूर्य अपनी समस्त प्रखरता के साथ उदित होता है तो राग, द्वेष, मोह आदि उलूक विलीन हो जाते हैं। आत्मा में अपूर्व ज्योति प्रकट हो जाती है और उसके सामने आलोक प्रसारित हो उठता है।
- सामायिक का अभ्यास वह अभ्यास है, जिससे आदमी अपने आपको चारित्र-मार्ग में ऊँचा उठा सकता है।
- पाँच प्रकार के चारित्र में पहला सामायिक चारित्र है। सामायिक में समस्त पापों का त्याग होता है। स्वाध्याय कहने से श्रुत अर्थात् ज्ञान आ गया और सामायिक कहने से क्रिया आ गई। स्वाध्याय और सामायिक में मुक्ति का मार्ग पूरा का पूरा आ गया। शास्त्रों में 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' इन दो मार्गों से तथा 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' इन तीन मार्गों से और तप का पृथक् उल्लेख कर 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तप' इन चार मार्गों से भी मुक्ति बताई है, वह सब इन दो में- स्वाध्याय और सामायिक में आ जाता है।
- दुःख का वास्तविक कारण आर्थिक विषमता नहीं, मानसिक विषमता है। यह मानसिक विषमता सामायिक की साधना द्वारा समताभाव लाकर मिटाई जा सकती है।
- साधना की अपेक्षा से सामायिक सम्यक्त्व, श्रुत, आगार और अनगार के भेद से चार प्रकार की होकर भी मूल में एक ही है। गृहस्थ विषय-कषाय के प्रगाढ पंक में रहकर भी क्षणिक समभाव की उपलब्धि कर सके, राग-रोष के जोर को घटा सके, इसलिए आचार्यों ने उसे सामायिक की शिक्षा दी है। समय, उपकरण और विधि की अपेक्षा परम्परा भेद होने पर भी सामायिक के मूल रूप में कोई अन्तर नहीं है। मौलिक रूप से आर्तध्यान, रौद्रध्यान तथा सावद्य कार्य का त्याग कर मुहूर्त्त भर समता में रहना सामायिक है। कहा भी है-**'त्यक्तार्तरौद्रध्यानस्य, त्यक्तसावद्यकर्मणः। मुहूर्तं समतायास्तं विदुः सामायिकं व्रतम्।।'** -*'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार*

प्रवचन

संयम एवं सामायिक से होता है जीवन-निर्माण

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा जैन स्थानक भवन, नीमच (मध्यप्रदेश) में 29 मार्च 2000 को भगवान आदिनाथ के दीक्षा-कल्याणक पर फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक जिनवाणी, जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान महावीर की वाणी के अनुसार लोक जीवन में जितनी समरसता, समृद्धि, शान्ति और सुन्दरता दिखाई दे रही है, उन सबके मूल में कोई तत्त्व है तो वह है संयम। दयालुता, विश्वसनीयता, सरलता, सदाचारिता, सन्तोष आदि जितने गुण आप कहना चाहें वे सारे गुण कोई देने वाला तत्त्व है तो वह है- संयम। आप संयम को चारित्र, दीक्षा, महाव्रत या धर्म किसी भी नाम से कह सकते हैं।

आज तीर्थंकर ऋषभदेव की दीक्षा का दिन है। अकर्म भूमि को कर्म भूमि में परिवर्तित करके असि-मसि-कृषि इन विधाओं को बताने के पश्चात् तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पुत्र युद्ध करने को तैयार हो गये। क्यों? क्या कमी थी उनको? दीक्षा लेने के पूर्व ऋषभदेव ने सबको समान रूप से सम्पदा का वितरण किया और राज्य का भाग बांटकर दीक्षित हुए। सम्पत्ति विपत्ति का कारण है। सम्पत्ति ममता जगाती है। ममता जगेगी तो विग्रह पैदा होंगे। एक-दूसरे की वस्तु हथियाने की कोशिश होगी। भाई-भाई से छीनने की वृत्ति जगेगी। 98 भाइयों के सामने एक भाई कहता है- "तुम मेरी अधीनता स्वीकार कर लो।" राज्य ऋषभदेव ने दिया है। मुझे कहना है भाइयों में लड़ाई किस कारण हुई। राज्य रूपी सम्पत्ति के लोभ से।

आपको क्या चाहिये? आपको धन-सम्पदा चाहिये या स्वाधीनता, समता, शान्ति और सन्तोष? आप सम्पत्ति की चाहना कर रहे हैं, चाहे वह विपत्ति में डालने वाली क्यों न हो। ऋषभदेव के 98 पुत्रों के मन में विचार आया कि लोग क्या कहेंगे? मैं आज की बात नहीं कर रहा हूँ, गाँव-गाँव और नगर-नगर की बात बता रहा हूँ, मात्र नीमच की बात नहीं बता रहा हूँ। मैं जो बात कहने जा रहा हूँ वह आदि तीर्थंकर आदिनाथ के समय की बात है। वे सोचने लगे- हमें लोग क्या कहेंगे? अगर नहीं लड़ना है तो क्या अधीनता स्वीकार कर लें? इधर कुँआ है, उधर खाई।

भगवान आदिनाथ के पुत्रों ने सोचा- जिन्होंने दिया है उन्हीं से पूछ लिया जाय- हमें

क्या करना है? वे विनीत पुत्र थे पृच्छा करने चल पड़े। आज आपके लड़के आपकी मानते हैं या नहीं, आपको सोचना है। शास्त्र का उद्घोष है- **"संबुज्झह किं न बुज्झह"**

भगवान के पुत्र भगवान के पास पहुँचे। प्रभु बोले- मैं तुम्हें ऐसा राज्य बताऊँ जो सदा रहता है। यह राज्य जिसके लिए तुम झगड़ने को तैयार हो वह आज है, कल नहीं रहेगा। सम्पत्ति भी रहने वाली नहीं है। राज्य और सम्पत्ति की क्या बात कहूँ तुम भी नहीं रहोगे।

धरती अखण्ड कंवारिया, वर किया कई लाख।
मुसलमान सब गड़ गये, हिन्दू हो गए राख।।

कितने चक्रवर्ती आए और चले गये। कितने राष्ट्रपति आए और चले गए। चक्रवर्ती क्या साथ लेकर गए? राष्ट्रपति आए और गए, पर साथ क्या ले गए? सम्पत्ति और साम्राज्य कई बार मिला, मिल सकता है, पर अगर समता नहीं आई, सम्यक्त्व नहीं आया तो प्राप्त सम्पत्ति और सम्पदा विपत्ति और विग्रह पैदा करेगी। लोक जीवन में समरसता सम्पत्ति के कारण से नहीं चारित्र के कारण से है, धर्म के कारण से है। धर्म के कारण राजा अपनी प्रजा का पुत्र की तरह पालन करता था। मालिक अपने पशुओं को बेटे की तरह रखता था। गाय-भैंस के लिए छप्पर लगाया जाता, टाट ओढ़ाया जाता। खुद के उपवास है, पर गाय-भैंस को वह स्वयं खिलाता। यह सेवा कौन करता है? पशु-पक्षियों की सेवा और सेवा की भावना वही दयामाता पैदा करती है। धर्म है, चारित्र है तो समता है, समरसता है। अगर समता और समरसता नहीं तो भाई-भाई से और बाप-बेटे से लड़ सकता है। लड़ाई कब होती है? जहाँ भी समता-स्नेह-सौहार्द खत्म हो गया, वहाँ झगड़ा है। ममता रक्तपात कराने वाली है।

आज त्याग का दिन है। तीर्थंकर ऋषभदेव पहले नरवर थे। तीर्थंकर ऋषभदेव आदि राजा थे। उन्होंने कर्म करने की कला सिखाने के बाद धर्म की कला इसलिए सिखाई कि धर्म के बिना कर्म के कारण विग्रह हो जाएगा, ऐसा मानकर प्रभु ने जीवन जीने की कला सिखाई। घर में रहो तो जल में जैसे कमल रहता है उस तरह से रहो। हजार-हजार रानियाँ हैं, लाखों का साम्राज्य है, देवताओं पर भी शासन करके चल रहा है। एक चक्रवर्ती को छोड़ते हुए अन्तर्मूहूर्त नहीं लगा। भरत को आरिसा भवन में केवल ज्ञान हो गया। आप सत्संग में बैठे हैं, वीतराग वाणी सुन रहे हैं तो भी प्रभाव नहीं। आप जीवन जीना सीखें। जीवन का निर्वाह तो आप कर रहे हैं, पेट भरने की कला जानते हैं, किन्तु समझने की आवश्यकता है कि जीवन का निर्माण कैसे हो?

जीवन का निर्माण चारित्र से होगा। जिनशासन की मैं क्या महिमा बताऊँ यहाँ जन्मते ही वैरागी बने हैं। आर्यवज्र इसके उदाहरण हैं। उन्हें पालना झूलते-झूलते वैराग्य हो गया।

बालक वज्र कितना सुन्दर, कितना सुकुमार, कैसा सलौना, वह लोरी सुनता है और पालना झूलते-झूलते वैराग्य का संस्कार आ गया। गर्भ में भी वैराग्य का संस्कार आ जाता है।

वज्र थोड़ा बड़ा हुआ तो सुना- ''पिताजी ने संयम ले लिया। संयम क्या है? चिन्तन चला तो जाति स्मरण ज्ञान हो गया। मैं पहले जन्म में संयमी था।'' आठ साल के वज्रमुनि ने ग्यारह अंग कण्ठस्थ कर लिये। मैं विनति करने वालों से पूछूँ- आप हमें क्यों ले जाना चाहते हैं? नीमच वाले विनति करने आए तब मैंने यही प्रश्न किया था? मुझे बताया गया कि हम 108 व्यक्ति धर्मस्थान में स्वाध्याय के साथ साप्ताहिक सामायिक करेंगे।

प्रश्न है- सामायिक क्यों करनी चाहिये? है जवाब आपके पास? रोटी क्यों खानी चाहिए? दुकान क्यों डालनी चाहिये? भोजन करते हुए ताकत नहीं आए तो विचार आता है। आप सामायिक कर रहे हैं आपको कभी विचार आया या नहीं कि आपके कषाय कम हुए या नहीं? कम नहीं हुए तो क्यों नहीं हुए? सामायिक करते अहंकार कम हुआ? क्या ममता घटी? क्या विषय-वासना छूटी? आप कुछ तो चिन्तन करें। आप 'करेमि भन्ते' के पाठ से रोज सामायिक करते हैं तो आपको विचार करना चाहिये कि आपके भीतर प्राणिमात्र के प्रति समता का संचार हो रहा है या नहीं? आपने सावद्य योग का त्याग किया है तो आपके मन में चिन्तन चलना चाहिये। आपके ही नहीं मेरे मन में भी चिन्तन आना चाहिये। सभी साधकों के मन में चिन्तन आना चाहिए।

आप स्वाध्याय के साथ सामायिक कीजिये। सुबाहूकुमार पौषधशाला में बैठे-बैठे भावना कर रहा था। भगवान पधार जायें तो मैं अणगार बन जाऊँ। आप धर्मस्थान में और सामायिक वेश में बैठे क्या चिन्तन करते हैं, इस पर विचार करने की जरूरत है। आप कुछ तो सोचें- मेरा आसक्ति भाव कितना घटा? मेरी ममता कितनी छूटी? धर्मस्थान में और सामायिक वेश में ममता नहीं छूटती है तो समझना चाहिये अभी सामायिक का रस नहीं आया।

एक दूल्हा घोड़ी पर बैठा है। उसे सासू-साली गालियाँ दें तब भी वह हँसता रहता है। वह सोचता है- ''मैं बींदराजा हूँ।'' राजनेताओं का विरोध आम बात है। मुर्दाबाद के नारे ही नहीं, उनके पुतले जलाये जाते हैं, फिर भी राजनेता अपना आपा नहीं खोते। राजनेता समभाव से प्रतिकूल परिस्थिति सहन करते हैं। कई समाजसेवी मिलेंगे जो भला-बुरा सुनकर भी समाज हित में सन्नद्ध रहते हैं। आप अभी भगवान की गादी पर बैठे हुए हैं तो आपको सोचना चाहिये कि मैं ममता में क्यों रहूँ। सामायिक करते-करते ममता छूटनी चाहिये, अहंकार कम होना चाहिये, विषय-वासना घटनी चाहिये, क्या ऐसा हो रहा है?

मैं अपने लिए सोचूँ, आप अपने लिए सोचें। अगर ममता नहीं छूट रही है तो समता

आयेगी कैसे? समता की मन में जरूरत है, घर में जरूरत है, संघ-समाज में भी इसकी जरूरत है। लोक व्यवहार में समता की ज़रूरत है। इसलिये समता लाने वाली सामायिक की आराधना आवश्यक है। क्षेत्र में समता की जरूरत है। आपके घर कोई मेहमान आ जाय तो आप लापसी-हलुआ बना लेते हैं, कोई बादाम का हलुआ बना लेता है, आप घर आए मेहमान का पूरा सत्कार करते हैं। मेहमान का सत्कार कैसे करना इसे आप भली-भाँति जानते हैं। कभी गाँव में संत पधार जायें और आप एक सामायिक भी नहीं करें तो क्या ऐसा करना महाराज का सत्कार है? कुछ लोग हैं जो प्रवचन में आकर तो बैठ जायेंगे, परन्तु सामायिक की साधना करने वाले कितने हैं? आप व्याख्यान सुन रहे हैं तो क्यों नहीं सामायिक की साधना में बैठते? कुछ सामायिक करने वाले हैं, कुछ मात्र सुनने वाले हैं। जो सामायिक करने वाले हैं वे सोचें कि सामायिक करते-करते मैंने क्या पाया? आप जो सामायिक की साधना कर रहे हैं वह शुद्ध है या नहीं। शुद्ध सामायिक जरूरी है। सामायिक साधु, उपाध्याय, आचार्य बनाने वाली है, अरिहन्त और सिद्ध भी इसी सामायिक से बना जा सकता है।

आज चारित्र का दिन है। आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ने आज ही के दिन चारित्र धर्म अंगीकार कर वीतराग मार्ग प्रशस्त किया था। चारित्र धर्म में समता जरूरी है। धर्म-क्षेत्र में ही क्या, व्यवहार क्षेत्र में भी समता उतनी ही जरूरी है। एक क्रोधी क्रोध में लाल-पीला हो रहा है उसके सामने समत्वभाव से ठण्डी नज़र से देख लिया जाय तो उसका क्रोध भी उपशान्त हो सकता है।

मैं कह गया- जन्मते वैरागी हुए हैं, आठ साल के वैरागी हुए हैं, मदालसा की लोरियाँ सुनते-सुनते वैराग्य होने के उदाहरण हैं। आप ऐसे उदाहरण सुनकर भी चारित्र धर्म में आगे नहीं बढ़ेंगे तो कब बढ़ेंगे? क्या नरक में जाकर आगे बढ़ेंगे? क्या देव गति में जाकर चारित्र धर्म में कदम बढ़ायेंगे? आप जरा चिन्तन करें। अनन्त काल बीत गया, चारित्र का उदय नहीं हो रहा है। आपको कभी विचार क्यों नहीं आया? आपने सुना तो होगा- माँग में सिन्दूर भरते-भरते वैराग्य हो गया। फेरे खाते-खाते वैराग्य हो गया। घोड़ी पर दूल्हा बैठा है, सासू नाक खींचने के लिए हाथ बढ़ाती है, दूल्हा गर्दन हिलाता है। गर्दन हिलाने के साथ साफा गिरता है और उसका वैराग्य जग जाता है। रामदास चंवरी में बैठे हैं, विवाह कराने वाले पण्डित ने कहा- 'सावधान।' सावधान शब्द सुनकर रामदास चौंके। दुबारा वही सावधान शब्द कर्णगोचर हुआ और तीसरी बार सावधान सुनते ही चंवरी से उठकर चल दिये एवं दीक्षित हो गए।

आपने सुना होगा साले-बहनोई का विनोद चल रहा था। बहनोई ने कहा- "पहाड़ पर संत खड़े हैं, उनके दर्शन कर लिये जायें।" साले ने मजाक किया- "वैराग्य आ गयो

दीखे है।'' बहनोई कहता है- ''ऐसे भाग्य कहाँ? वैराग्य आ जाय तो थांरी जबान ने गुड़-घी।'' जब पहुँच कर संत को वंदन किया तो सदा के लिए चरण-सेवा में समर्पित हो गया। साले ने कहा-'' मेरी बहिन का क्या होगा?'' प्रत्युत्तर मिला- ''वह राजकुमारी है, धर्मपत्नी है इसलिए धर्म में सहयोग करेगी, तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं।'' बीकानेर के दीक्षा प्रसंग पर घटित घटना आपने सुनी होगी। चार दीक्षाएँ थीं, नाई पाँच आ गये। पाँचवा नाई उदास बैठा था। उसकी उदासी देखकर एक सेठ ने कहा- ''थूँ रोवे क्यूं, ले मने मूँड।''

ऐसे अनेक दृष्टान्त हैं जिन्हें कहने के लिए समय चाहिये। मुझे कहना है इस जीवन का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य है जीवन-निर्माण और वह लक्ष्य प्राप्त होता है संयम से, चारित्र से। चारित्र के कारण मनुष्य देवताओं का प्यारा कहलाता है। आदिनाथ भगवान के चारित्र दिवस से आप चारित्र में चरण बढ़ायेंगे तो सुख-शान्ति आनन्द प्राप्त कर सकेंगे। ■

प्रवचनांश

आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज

आत्मविश्वास

किसान ने बीज को भूमि में सुलाकर ऊपर मिट्टी डाल दी। बीज निराश हो गया- ''अब कभी भी वह संसार का दर्शन नहीं कर सकेगा, उसे जीवित-समाधि जो दे दी गई है।''

भूमि की ऊष्मा और जल की आर्द्रता ने निराश बीज के जीवन को थपथपाया, उसका आत्म-विश्वास जगा और अवसर पाकर एक दिन धरती के बाहर सिर ऊँचा उठाए खड़ा हो गया।

मैंने देखा-''विपत्ति में भी जिनका आत्मविश्वास जीवित रहता है, वे मृत्यु की भूमि पर भी जीवन का अंकुर पैदा कर सकते हैं।''

समय पर

उचित समय पर कहा हुआ शब्द वैसा ही सुन्दर लगता है, जैसा कि सोने की अँगूठी में जड़ा हुआ नगीना। अयोग्य समय पर बोला हुआ सुन्दर शब्द भी वैसा ही निरर्थक प्रतीत होता है जैसा कि दिन में दीपक।

श्रोताओं की समस्या

आज के श्रोताओं की समस्या है कि कोई कुछ सुनना नहीं चाहते, सुनते हैं तो समझना नहीं चाहते, और समझते भी हैं तो उसे मन में उतारना नहीं चाहते।

प्रवचन

वितरण एवं मर्यादा से बनते हैं महान्

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. द्वारा कंवलियास, जिला-भीलवाड़ा में 13 सितम्बर 1994 को फरमाए इस प्रवचन का संकलन श्री अमोलक चन्द जी सुराणा द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

जीवन में मर्यादा व त्याग का अत्यन्त महत्त्व है। अपार वैभव, ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता के बीच जन्म लेकर भी इन सबका त्याग कर संयम के पथ पर चरण रखने वाले महापुरुषों की जीवन गाथाएँ यही सिद्ध कर रही हैं। हम ऐसे ही महापुरुषों का समय-समय पर गुण-कीर्तन करते रहे हैं। वस्तुतः महानता अर्जन या संग्रहण में नहीं है, महानता है अर्जित एवं संचित का उचित ढंग से वितरण करने में। समुद्र के पास अनन्त जलराशि है। वह अनेक नदी-नालों के पानी का संग्रहण करता हुआ अपनी जल-राशि को बढ़ाता ही जाता है। उधर सीमित जल-राशि को अपने अंक में छुपाए गगन में मंडराने वाला मेघ है। दोनों में से अधिक महत्त्व किसका? समुद्र का या बादलों का? आप लोग, कृषक-वर्ग, बच्चे-बूढ़े-युवा सभी जल की मांग किससे करते हैं? "काले मेघा पानी दे" या "मेह बाबा आजा" की जगह कभी यह तो नहीं कहते कि "सागर-सागर पानी दे" या "सागर बाबा आजा....।"

पानी के लिए मेघ से ही हाथ-जोड़कर विनति क्यों की जाती है? इन मेघों से ही पीने के पानी या खेती के लिए पानी की आशा रखी जाती है? क्योंकि वह अर्जन का विसर्जन करता है, क्योंकि वह संचित-राशि का त्याग करता है। समुद्र के पास वितरण करने की शक्ति नहीं है, पर मेघ के पास है। मर्यादा में रहकर त्यागवृत्ति रखना ही महानता है। जो लोग मर्यादित जीवन व्यतीत करते हैं, त्यागवृत्ति अपनाते हैं- संसार उन्हीं के गुण गाता है।

जीवन में मर्यादा होनी चाहिए। मर्यादा ही संयम है, वही अनुशासन है। मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति से जुड़े तीन योग होते हैं और इन तीनों योगों पर संयम, नियंत्रण, अनुशासन रखना ही श्रेष्ठ मर्यादित जीवन की निशानी है।

बहुत कठिन है मन को मर्यादा में बांधकर रखना। मन तो चंचल है, वह हवा से भी अधिक वेगवान है। वह धर्मसभा में बैठे व्यक्ति को विचारों की तरंगों पर लहरा कर कहीं से

कहीं ले जाता है। पंच-महाव्रतधारी मुनिराज ध्यानस्थ थे, किन्तु मन की गति उन्हें नरकायु के बंधन में पटकने को तैयार हुई और कुछ ही क्षणों में मन-परिवर्तन, विचारों में शुक्लता, चिन्तन की शुभ धारा में ऐसा उत्कृष्ट रसायन कि केवलज्ञान, केवल-दर्शन की प्राप्ति हो जाती है। यह है प्रसन्नचन्द्र राजर्षि का दृष्टान्त। तंदुल मत्स्य का उद्धरण भी मिलता है। न वह मछलियों को मुँह में लेकर उदरस्थ करता है, न वाणी से ही कुछ कहता है, पर केवल मन में ही सोचता है कि मैं यदि इस विशाल मगर-मत्स्य के स्थान पर होता तो मुँह के भीतर, जबड़ों के नीचे आई इन मछलियों में से किसी को भी वापस समुद्र में नहीं जाने देता ऐसा चिन्तन कर वह नरकायु का बंध कर लेता है।

वाणी सुनली जाती है, कार्य देख लिए जाते हैं और गुप्त रूप से करें तो भी उजागर होने का भय रहता है, पर मन न देखा जा सकता है, न सुना जा सकता है। अतः सर्वाधिक पापकर्मों का बंध मन से होता है, पर साथ ही यह भी सत्य है कि कर्मबंधन के तोड़ने में भी वही सर्वोच्च महत्त्व भी रखता है, अतः अति-दुष्कर होते हुए भी आप और हम मुनिजन, सभी मन को वश में करने के लिए प्रयत्नशील बनें। यदि मन वश में हो गया तो जीवन सफल हो गया। कहा भी है-"मन को जीते जीत है, मन के हारे हार।"

मन के बाद है वचन-योग अर्थात् वाणी। वाणी जिह्वा का कार्य है। शरीर की बाकी इन्द्रियाँ दो-दो होकर भी एक-एक कार्य करती हैं, पर जिह्वा एक होकर भी दो कार्य करती है। कान दो हैं, पर काम एक है-सुनना। आँखें भी दो हैं, पर कार्य एक है- देखना, नाक में दो छिद्र हैं, पर कार्य एक है- सूंघना। जिह्वा एक है पर कार्य दो हैं- बोलना और खाना (स्वाद लेना)। खूबचंदजी म.सा. ने एक जगह रसना के लिए कहा है- "खाय बिगाड़े धान ने अर बोल बिगाड़े मन"।

स्वाद और भाषा- दोनों पर नियंत्रण आवश्यक है। भाषा सत्य ही नहीं, अपितु निर्वद्य हो अर्थात् ऐसी भाषा हो जो किसी के मन को पीड़ा नहीं पहुँचाए। किसी के मर्म को चोट पहुँचे, ऐसी भाषा आध्यात्मिक जगत में तो वर्जित है ही, सांसारिक व्यवहार में भी ऐसी भाषा नहीं बोलने वाले को सम्मान मिलता है। वाणी पर नियंत्रण यदि नहीं रखा, मर्म को भेदने वाले वचन आगए तो कभी अनर्थ भी हो जाता है। व्यक्ति अंधा है तो उसे अंधा कहना या काणा है तो उसे काणा कहकर सम्बोधित करना उचित नहीं है। यह जबान ही झगड़े का कारण बन जाती है।

वाणी का सबसे बड़ा दुश्मन क्रोध है। क्रोध में आपा खोकर व्यक्ति जाने क्या कह बैठता है। सुनने वाला व्यक्ति मन ही मन कितना सन्ताप पाता है- यह भुक्तभोगी ही जान सकता है। कभी-कभी क्रोध में कही गई भाषा वैर के अनुबन्ध का कारण बन जाती है। मन

में भावना आ जाती है कि अवसर मिले तो इसका बदला जरुर लेना है। यह बात उसके मन में गांठ बन कर रह जाती है, परिणाम कितना भयंकर होता है, इसे बताना भी मुश्किल है।

मारवाड़ी में एक कहावत है-"रोग री जड़ खांसी ने झगड़ा री जड़ हाँसी।" हँसी-हँसी में कही गई एक बात अनर्थ का कारण बन जाती है। द्रौपदी ने हँसी-हँसी में ही कहा था- 'अंधे के बेटे अंधे ही होते हैं।' आए थे पांडव-कौरव द्रुपद नरेश के यहाँ। द्रुपद नरेश के कुशल कारीगरों ने उनके नगर-प्रवेश के पथ को ऐसा सजाया कि देखने वाले विस्मित हो जाएं। दुर्योधन के साथ कौरव आए। एक स्थान पर स्फटिक निर्मित पथ इतना स्वच्छ, इतना पारदर्शी था कि कौरवों ने समझा पानी है और वे अपने अधोवस्त्र हाथ में पकड़, ऊपर खींचते हुए सावधानी से कदम रखने लगे। एक स्थान पर दीवार बनी हुई थी, पर इतनी पारदर्शी कि समझा गया- यहाँ कोई द्वार है। प्रविष्ट होने लगे तो सिर फूट गया।

द्रुपद नरेश की राजकुमारी द्रौपदी ने यह सब देखा तो खिलखिलाकर हँस पड़ी और ऊँचे स्वर में उनका मजाक उड़ाते हुए कह गई- "अंधे के बेटे अंधे ही होते हैं।" दुर्योधन जलभुन गया। मन में गाँठ बंध गई। आगे जाकर मन की यही गाँठ द्रौपदी के चीरहरण का मूल कारण बनी, इसी गाँठ ने महाभारत जैसे महाविनाशकारी महायुद्ध को जन्म दिया।

व्यक्ति लोभ, हँसी, भय के वशीभूत होकर असत्य, अप्रिय, कटुक भाषण कर जाता है। गृहस्थ में रहते हुए भी भाई-बहन सभी यह ध्यान में रखें कि वाणी-विवेक गृहस्थधर्म का कर्त्तव्य और श्रावक धर्म का अंग है। मान लीजिए कोई बात है तो सत्य, पर कहने योग्य नहीं है तो ऐसे अवसर पर मौन धारण कर लेना ही श्रेष्ठ है। अनेक गृहस्थ क्रोध आने पर, स्वार्थ सिद्ध करने के निमित्त, लोभ या लालच से, काम-वासना के वशीभूत होकर, राज्य या दैविक भय के कारण असत्य भाषा का प्रयोग करते हैं। किन्तु ज्ञानियों की दृष्टि में यह सब अनुचित है।

संयमी-संतों को भी चाहे कैसी ही दुःसह परिस्थिति आ जाए, पर असत्य व पीड़ाकारी भाषा नहीं कहनी चाहिए। मर्यादित भाषा का विवेकपूर्ण प्रयोग ही सच्चे-संत का लक्षण है। 'संत हृदय नवनीत समाना'- वाक्य सही है, पर यदि संत किसी के दिल को वचनों से ठेस पहुँचाए तो वे कैसे संत हैं? संत पद-यात्री होते हैं। वे ग्राम-नगर-महानगर आदि सभी स्थानों पर भ्रमण करते हैं। संतों की सेवा में सभी तरह के दर्शनार्थी आते हैं। कहीं स्थितियाँ अनुकूल मिलती हैं, कहीं प्रतिकूल। संत सभी बातें जानते हैं, पर जानते हुए भी जो बात कहने लायक नहीं होती, उसे संत कहते नहीं हैं। संत-महात्माओं को पूर्ण सचेत रहना पड़ता है कि अमुक बात कहने योग्य है और अमुक कहने के लायक नहीं है। 'वचन का गोपन' संतों का आवश्यक गुण है। संत बिना कारण नहीं बोलें और बोलना आवश्यक

हो तो उपयोग सहित ही बोलें। कहा गया है-

वाणी ऐसी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

काय योग के संयम में आज ब्रह्मचर्य की बात रख रहा हूँ। जो व्यक्ति अब्रह्म-सेवन में मर्यादा का पालन करते हैं, उनकी सन्तानें हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ एवं संस्कारवान होती हैं। शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि राजा-महाराजाओं के अनेक रानियाँ-महारानियाँ होती थीं। पाँच-पाँच सौ, एक-एक हजार रानियों को एवं राज्य की अपार ऋद्धि-समृद्धि को त्याग कर संयम-पथ पर वे अग्रसर हो गए। भोग-सामग्री थी, पर उसमें आसक्ति छोड़ दी। यदि भोगों में आसक्ति रहती तो न राज्य छूटता, न वैभव और न महारानियाँ। आपके तो एक-एक ही पत्नी है, पर उसे त्याग सकते हैं क्या? छोड़ सकते हैं क्या? उसके प्रति मोह-भाव?

आप कहेंगे- "चोखा महाराज मिलिया, घर-बार छुड़ावे।" बहनें सोच रही होंगी- "ऐ केड़ा महाराज। पति-पत्नी रे, धणी-लुगायां रे जोड़ा ने बिछड़ावे।" खैर, नहीं त्याग सकते राग, मोह, आसक्ति की तो मर्यादा तो कीजिए। पशुओं में प्राकृतिक मर्यादाएँ होती हैं। सिंह अपने पूर्ण जीवन में केवल एक आध बार संभोग करता है, तभी वह बिना बनाए जंगल का राजा अनादि काल से बना हुआ है और शायद आगे भी रहेगा। प्रताप किसका? मर्यादा का। अन्य पशु-पक्षियों में अनेक का नियत प्राकृतिक समय होता है मैथुन का। कहना चाहिए उनके भी मर्यादा होती है, पर मनुष्य समाज में वह मर्यादा भी नहीं। फिर सन्तानें बलवान, स्वस्थ, नीरोगी और बुद्धिमान कैसे हों? पवन और अंजना ने वियोग में रहकर कितने वर्ष संयम का पालन किया था, परिणामस्वरूप वर्षों पश्चात् उत्पन्न उनकी सन्तान महाबली हुई थी। ब्रह्मचर्य का, अब्रह्म-सेवन में मर्यादा का अपना एक ओज होता है, एक निराली शक्ति होती है। श्रावक का चतुर्थ व्रत है-"स्वदार सन्तोष, परदार विवर्जन।" व्रत के इन शब्दों में वासना अपने आप सीमित हो जाती है, पर इस मर्यादा में बंधे कौन? व्रत को ग्रहण कर व्रती बने कौन? आप तो सभी अमर्यादित हैं और हो रहे हैं। यदि जीवन को सुखी और आत्मा को उज्ज्वल बनाना है तो मर्यादा ग्रहण करिए, मर्यादाओं का पालन करिए।

आप साधक हैं, व्रती भी हैं, अतः जीवन को मर्यादित कर मोह और कषायों के प्रति अपनी आसक्ति घटाइए, तभी आपके जीवन को सही दिशा मिलेगी और जो सही दिशा की ओर, सही पथ पर चलेगा वही जीवन को प्रगति के पथ पर बढ़ा सकेगा। साधना उन्हीं की सफल होती है जो जीवन को मर्यादा से चलाते हैं और त्याग, तप, व्रत, नियम से चलकर जीवन को शुद्ध, निर्मल, पवित्र बनाते हैं। यही महान् बनने का उपाय है। ■

प्रवचन

अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा करें आचरण

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा अलीगढ़-रामपुरा के निकट सौलतपुरा में 05 दिसम्बर, 2014 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनजी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

धर्मानुरागी सज्जनों!

हमारे जीवन में सद्गुणों के विस्तार के लिए त्रि-आयामी सिद्धांत है। यदि हम अपने जीवन में सद्गुणों का विस्तार करना चाहते हैं, तो उसके लिए तीन सिद्धान्त हैं। हम उन सिद्धांतों को 'त्रि-आयामी' सिद्धान्त कह सकते हैं। जो कोई भी इन तीन सिद्धान्तों को अपनाता है, उसके भीतर में सद्गुणों का विस्तार होता ही है।

बन्धुओं! गुण हमारी निजी सम्पत्ति हैं। गुण बाहर से उपलब्ध नहीं होते। उनका भीतर से प्रकटीकरण होता है। भगवान अनन्त गुणी हैं, अनन्त ज्ञानी हैं, पर भगवान के अनन्त गुण हमारे अंदर प्रवेश नहीं कर सकते। यदि गुणी के गुण हमारे अंदर प्रवेश करने लग जाएं तो फिर जैन दर्शन का मौलिक सिद्धांत कि हर आत्मा परमात्मा बन सकती है, निरर्थक हो जाएगा। कर्म सिद्धान्त वर्णन करता है कि हर आत्मा में अनन्त-अनन्त ज्ञान विद्यमान है। बस उसका प्रकटीकरण करना होगा।

जैन दर्शन का अभिमत है कि गुणी के गुण हमारे अंदर 'प्रवेश' नहीं कर सकते, पर जीवात्मा उन विद्यमान अनन्त गुणों को अपने भीतर 'प्रकट' जरूर कर सकता है।

बंधुओं! यह ध्यान में रहे। दुर्गुण बाहर से आ सकते हैं, पर गुण भीतर से ही प्रकट होते हैं। दुर्गुणों का प्रवेश जल्दी होता है और ज्यादा होता है। एक दुर्गुण जीवन में यदि स्थान बना लेता है तो वह अनेक दुर्गुणों को प्रवेश करा देता है।

मान लें, एक व्यक्ति में झूठ बोलने का दुर्गुण आ गया। एक झूठ हजारों बुराइयों का प्रवेश-द्वार बन जाता है। इसीलिये दुर्गुणों को दूर करने के लिए सद्गुणों के विस्तार के लिए, विचार करना परमावश्यक है। आज हम उस तत्त्व पर विचार करने के लिए समुपस्थित हैं- सद्गुण क्या है? कैसे आते हैं? समझें।

सद्गुणों के विस्तार के लिए तीन सिद्धान्त हैं। सबसे पहला सिद्धान्त है- अच्छा सोचें। दूसरा सिद्धान्त- अच्छा बोलें। तीसरा सिद्धान्त है- अच्छा आचरण करें। अच्छा

सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा आचरण करें, ये तीन सिद्धान्त जीवन में सद्गुणों का विस्तार करते हैं। अच्छा सोचें तो जीवन में सद्गुण आ सकते हैं। हमारी सोच अच्छी है तो जीवन भी निश्चित सुंदर बनेगा।

बन्धुओं! ज्ञानियों ने अच्छा बोलने को पहले नहीं रखा, पहले रखा-अच्छा सोचें। क्योंकि व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा बोलता है। और जैसा बोलता है, वैसा आचरण करता है। आप कहते हैं- जैसी कथनी वैसी करणी। जिसकी कथनी सही है, उसकी करणी भी सही होनी चाहिए। कथनी जैसी करणी देखकर लोग स्वतः कह देंगे, इसका क्या कहना? इसकी तो कथनी-करणी एक समान है, जैसा कहता है, वैसा करता है।

नारी जाति में दो पात्र हुए हैं। एक कौशल्या है, दूसरी कैकयी। कौशल्या किसे कहते हैं? जैसा बोल्या वैसा चाल्या, उसका नाम है- कौशल्या। और कैकयी? केवे कांई, करे कांई, उसका नाम है-कैकयी। कौशल्या जैसा बोलती है वैसा करती है और कैकयी जैसा कहती है वैसा नहीं करती। कथनी जैसी करणी कब बनती है? जैसा कथन वैसा आचरण। जो अच्छा सोचेगा, वह अच्छा बोलेगा, और उसका आचरण भी अच्छा होगा। इसीलिए ज्ञानियों ने पहले अच्छा सोचने को स्थान दिया। कहा जाता है-

जिसकी कथनी-करणी में अन्तर, वह बनता है वाणव्यन्तर।।

संत भी संयम स्वीकार करके विषम जीवन जीता है तो महाव्रतों का पालन करते हुए भी उसकी गति वाणव्यन्तर जैसी होती है। यह बात न केवल श्रावक के लिए है, अपितु साधु के लिए भी यही बात है। चार प्रकार की गतियाँ होती हैं- 1. नरक, 2. तिर्यंञ्च, 3. मनुष्य और 4. देव। श्रावक काल करके देवगति में जाता है, साधु भी देवगति में जाता है। देवता में कई भेद-प्रभेद हैं- 1. भवनपति, 2. वाणव्यन्तर, 3. ज्योतिषी, 4. वैमानिक। आराधक साधु की गति 70 बताई- 35 वैमानिक अपर्याप्ता और पर्याप्ता। आराधक साधु अर्थात् कथनी-करणी में एकता। आराधक साधु वैमानिक अथवा मोक्ष में जाता है। मगर विराधक साधु वाणव्यंतर का मेहमान बन जाता है, क्योंकि विराधक साधु की कथनी-करणी में अन्तर होता है। विराधक साधु जघन्य भवनपति तक एवं उत्कृष्ट पहले देवलोक तक जाता है। इसलिये ऐसा कहा जाता है-"**जिसकी कथनी-करणी में अन्तर, वह बनता है वाणव्यन्तर।**"

जीवन निर्माण के तीन सिद्धान्त यदि अपना लिए जायें तो सद्गुण प्रकट होंगे ही। बन्धुओं! हर जीव आगे बढ़ना चाहता है, मनुष्य तो क्या, जिसमें भी चेतना है, वह चाहे वनस्पति का जीव ही क्यों न हो? वह भी आगे बढ़ना चाहता है। एक बीज पेड़ बनना चाहता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आगे बढ़ना चाहता है। पर दो व्यक्ति जीवन में कभी

आगे नहीं बढ़ सकते। पहला- जिसके पैर में मोच हो। दूसरा- जिसके माथे में छोटी सोच हो। ये दोनों प्रकार के व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। सकारात्मक रूप में कहें तो हम इस प्रकार भी इसे समझ सकते हैं कि दो प्रकार के व्यक्ति ही जीवन में प्रगति को प्राप्त करते हैं- एक वह जिसके पैर में लोच (लचीलापन) हो, दूसरा वह जिसके माथे में सुन्दर सोच हो। हम सद्गुणों का विस्तार करना चाहते हैं तो पहले अच्छा सोचें। जो छोटी सोच रखता है, वह छोटा ही रहता है। सोच में विशालता, व्यापकता और सकारात्मकता होनी चाहिए। व्यक्ति के महान् बनने में सोच का बड़ा प्रभाव होता है। आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही आगे का मार्ग प्रशस्त होता है।

सोच के दो पहलू हैं- एक सकारात्मक, दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक सोच से जीवन स्वर्ग और नकारात्मक सोच से जीवन नरक बनता है। एक गिलास है उसमें पानी है। सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति कहता है- गिलास में आधा पानी भरा है, नकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति का कथन होता है- आधा गिलास खाली है। अनेकान्त की दृष्टि से देखा जाय तो दोनों का कथन अपनी-अपनी अपेक्षा से सही है। पर व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही उसका जीवन बनता चला जाता है। और देखिये, एक कहता है- दो रात के बीच में एक दिन आता है और दूसरा कहता है दो दिन के बीच में एक रात आती है। एक है जो दिन के उजाले को देख रहा है, दूसरा है जो रात के अन्धेरे को महत्त्व दे रहा है। भावार्थ है- सकारात्मक व्यक्ति उजाला देखता है, इसलिये उसका जीवन उज्ज्वल होता है और उसके जीवन में उज्ज्वलता (स्वर्ग) होती है, जबकि नकारात्मक व्यक्ति अंधेरे को देखता है इसलिये उसके जीवन में नारकी के समान अंधेरा होता है। व्यक्ति की सोच सही है तो कहता है- समय ज्यादा है, काम कम है। सोच विपरीत होने पर ये उद्गार मुँह से नहीं निकलते, अपितु वह तो कहता है- मेरे पास काम ज्यादा है, समय कम है।

जिस व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है उसका कार्य सृजनात्मक और व्यवहार समन्वयात्मक अपने आप होता है। यदि हम अपने कार्य को सृजनात्मक और व्यवहार को समन्वयात्मक बनाना चाहते हैं तो हमें सर्वप्रथम सोच सकारात्मक बनानी होगी।

आप अच्छा सोचें! सोच में लोच (लचीलापन) नहीं तो जीवन में विकास और प्रकाश होने वाला नहीं है। कहते हैं-

सोचो वही जो बोल सको।
बोलो वही जो लिख सको।
लिखो वही, जिसके नीचे हस्ताक्षर कर सको।।

व्यक्ति के मस्तिष्क में दिन भर में कितने विचार चलते हैं? हम सारे विचार व्यक्त

नहीं कर पाते। आज ऐसे कई व्यक्ति हैं, जिनका निरर्थक विचारों में समय बीत रहा है। विचारों में न जाने कितना कूड़ा भरा है। अलीगढ़ की गलियों में जितना कूड़ा नहीं उससे कहीं ज्यादा कूड़ा नकारात्मक सोच रखने वालों के विचारों में है। ध्यान रखियेगा, विचारों में यदि मलिनता है तो आत्मा में निर्मलता कैसे सम्भव है? आत्मा को पवित्र बनाना है तो विचारों की निर्मलता आवश्यक है।

सोचो वही जो बोल सको। घर में माता-पिता है, पत्नी है, बच्चे हैं, उन्हें कौनसी सोच अच्छी लगती है? अच्छी सोच सबके लिए अच्छी होती है। दिन भर में न जाने कितने-कितने विचार चलते हैं। दिन में ही क्यों? आगे बढ़कर कहूँ-रात्रि में व्यक्ति के सो जाने पर भी विचारों की गति मन्द और बन्द नहीं होती। दिन में और रात्रि में विचारों में एक फर्क है बताइये क्या? दिन में सिर्फ विचार उभरते हैं विचारों के साथ चित्र आकार रूप नहीं ले पाते हैं, मगर वही विचार व्यक्ति के सो जाने पर चित्र रूप में उभर कर हमारे सामने आते हैं। इसीलिये कहा गया-

दिन में जो विचार चलते हैं, उसे कल्पना कहते हैं।
रात में जो विचार चलते हैं, उसे सपना कहते हैं।।

हमें विचारों की परिक्रमा को समझना होगा, नहीं तो जीवन व्यस्त कम, अस्त-व्यस्त ज्यादा हो जाएगा। इसके लिए हमें सकारात्मक सोच रखनी चाहिये। इसीलिए ज्ञानियों ने पहला सूत्र दिया- 'अच्छा सोचो।' दूसरा सूत्र है- 'अच्छा बोलो।'

बोलना एक कला है। बोली से लाड़ होता है तो बोली से ही लड़ाई होती है। शरीर में पाँच इन्द्रियों की विशेषता देखिये। पाँच इन्द्रियों में से चार इन्द्रियों के काम एक हैं और द्वार एक से अधिक या अनेक हैं जबकि एक इन्द्रिय के द्वार एक है, काम दो हैं। इसे हम समझें-

पहली इन्द्रिय- श्रोत्रेन्द्रिय- कान-2 काम-1 (सुनना)

दूसरी इन्द्रिय- चक्षुन्द्रिय- आँख-2 काम-1 (देखना)

तीसरी इन्द्रिय- घ्राणेन्द्रिय- नाक-2 काम-1 (सूंघना)

चौथी इन्द्रिय- रसनेन्द्रिय- जीभ-1 काम-2 (बोलना, खाना)

पाँचवी इन्द्रिय- स्पर्शनेन्द्रिय- त्वचा (द्वार अनेक) काम-1 (स्पर्श करना)

बन्धुओं! पाँच इन्द्रियों में से चौथी इन्द्रिय जिसे रसनेन्द्रिय कहते हैं, इसके काम दो हैं, द्वार एक ही है। जबकि शेष चार इन्द्रियों के काम एक, द्वार एक से अधिक या अनेक हैं। रसनेन्द्रिय के दो काम है- बोलना और खाना। देखिये, बोलकर यह 'पैठ' (इज्जत) बिगाड़ती है और खाकर यह 'पेट' बिगाड़ती है।

बोलना एक कला है। जो इस कला को सीख लेता है, उसके जीवन में सद्गुण का

विस्तार होता है। जो अच्छा बोलता है, उसे सब सुनना चाहते हैं। तिर्यंच गति में दो तरह के प्राणी हैं- 1. कोयल और 2. कौआ। कोयल और कौआ दोनों गति की अपेक्षा से समान हैं- दोनों की गति 'तिर्यंच गति' है। दोनों जाति की अपेक्षा भी समान हैं- दोनों की जाति पंचेन्द्रिय है। दोनों वर्ण की अपेक्षा भी समान हैं- दोनों का वर्ण कृष्ण (काला) है। गति, जाति, वर्ण की अपेक्षा समान होते हुए भी वाणी में दोनों की समानता नहीं है।

कोयल को सब सुनना चाहते हैं, कौए को कोई भी नहीं। कोयल अपनी मीठी वाणी से सबके दिल को भा जाती है, वहीं कौआ अपनी कर्कशता के कारण कंकर-पत्थर का शिकार बन जाता है। इसीलिये कहा जाता है-

कुछ लोगों की कुछ बातों का इतना असर होता है कि,
कुछ दिल में उतर जाते हैं, कुछ दिल से उतर जाते हैं।

बन्धुओं! संसार में दो तरह के व्यापारी होते हैं। एक मिठाई बेचने वाला, दूसरा मिर्ची बेचने वाला। मिठाई मीठी होती है, मिर्ची चरकी। पर मीठा बोलने वाला मिर्ची अर्थात् चरकी चीज को बेच देता है, जबकि कड़वा बोलने वाले की मीठी चीज भी धरी-की-धरी रह जाती है।

एक चिन्तक ने पूछा- आज के युग में लोगों को 'सुगर' की बीमारी ज्यादा क्यों हो रही है? समाधान दिया- आज के लोग मीठा तो खाते हैं, पर मीठा बोलते नहीं, इसलिये उनके शरीर में सुगर पैदा हो जाती है। कहना होगा- मीठा खा लेने से जीभ कुछ समय के लिये मीठी जरूर हो सकती है, मगर मीठा बोलने से तो जीवन ही मीठा हो जाता है। इसलिए सद्गुणों के विस्तार के लिए दूसरा सिद्धान्त है-अच्छा बोलो। हम सबको त्रिसूत्रीय मंत्र को अपनाना है- अच्छा सोचो, अच्छा बोलो, और तीसरा सिद्धान्त है- अच्छा आचरण करो। आचरण हमारा आगम सम्मत होना चाहिये। आगम सम्मत जिनका आचरण होता है वे आगामी काल में निकट भव में मुक्ति गामी होते हैं। शिष्य ने गुरु से जिज्ञासा की भगवन्! हमारा जीवन कैसा हो? गुरु ने कहा- आगम में लिखने जैसा हो।

बन्धुओं! जिनका उत्तम आचरण होता है, उन्हीं का आगम में उल्लेख होता है।

अभी पाँचवा आरा है। कालचक्र के हिसाब से बारह आरे होते हैं। छः उत्सर्पिणी और छः अवसर्पिणी। अभी अवसर्पिणी का पाँचवा आरा है। इस आरे में हम अच्छा सोचेंगे, अच्छा बोलेंगे और अच्छा आचरण करेंगे तो इस आरे का असर हमारी आत्मा पर नहीं होगा। पाँचवे आरे के मनुष्य की तीन पहचान हैं- 1. मन का टेढ़ापन, 2. वचन का खारापन, 3. व्यवहार का उतावलापन। हम भले ही पाँचवे आरे में जन्मे हैं, पर पाँचवे आरे का असर हमारे पर नहीं होना चाहिए।

पाँचवे आरे का असर है तो समझ लेना चाहिये, मोक्ष जाने में कसर है। पाँचवे आरे के असर को कम करने के लिए तीन सूत्र हैं- 1. अच्छा सोचें, 2. अच्छा बोलें, 3. अच्छा आचरण करें। अच्छा सोचेगें तो मन का टेढ़ापन खत्म हो जाएगा। अच्छा बोलेंगे तो वचन का खारापन समाप्त हो जाएगा और अच्छा आचरण करेंगे तो व्यवहार का उतावलापन भी उतर जाएगा। हम धार्मिक जीवन जीना चाहते हैं तो काल के प्रभाव से प्रभावित नहीं होकर निजस्वभाव में आने के लिए त्रि-सूत्रीय मंत्र काम में लें। अच्छा सोचें, अच्छा बोलें, अच्छा आचरण करें।

हमारे तीन योग हैं- मन योग, वचनयोग और काय योग।

मनयोग का सदुपयोग है- अच्छा सोचना।

वचन योग का सदुपयोग है- अच्छा बोलना।

काय योग का सदुपयोग है- अच्छा आचरण करना।

आचार्य भगवन्त का कल अलीगढ़-रामपुरा में मंगलमय पदार्पण होने की सम्भावना है। आप सब गुरु के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति रखने वाले हैं। इसलिए गुरु चरण सन्निधि का सुयोग पाकर योगों का सदुपयोग करेंगे। अर्थात्- अच्छा सोचेंगे, अच्छा बोलेंगे, अच्छा आचरण करेंगे। इन्हीं मधुर मंगल मनीषा के साथ.....। ■

संयम जीवन : आदर्श जीवन

श्री अनिल कुमार जैन

संयम का पथ प्यारा-प्यारा, करता जीवन में उजियारा।
शान्ति सुधा की बरसे धारा, मोक्ष मार्ग का पथ है न्यारा।।

'संयमः खलु जीवनम्' संयम ही जीवन में सुख का सफल साधन है। संयमी पुरुष अपने मन, वचन और शरीर को नियंत्रित रखता है, उन्हें उच्छृंखल नहीं होने देता और कर्म-बंधन का कारण नहीं बनने देता है। आचार, विचार एवं परस्पर व्यवहार में विकृतियों का प्रवेश न होने देना संयम है। इन्द्रियों के विषय-सेवन को नियंत्रित करना संयम है। इच्छाओं को रोककर इन्द्रियों को वश में करना संयम है।

गृहस्थ हो या गृह त्यागी, जो भी अपने जीवन को पवित्र और सुखमय बनाना चाहता है, उसे संयमी बनना चाहिये। संयम और तप से विहीन जीवन किसी भी दृष्टि से सराहनीय नहीं बन सकता। कुटुम्ब, समाज, देश आदि की दृष्टि से वही जीवन धन्य माना जा सकता है, जिसमें संयम और तप मौजूद हों।

- 'सूरज सदन', मकान नं. 7, सुमनभारती स्कूल के पास,
गुलाबबाड़ी, लाडपुरा, कोटा-324006 (राज.)

शोधालेख

स्थानांगसूत्र में ध्यान : एक अध्ययन

साध्वी श्रद्धाञ्जनाश्रीजी

आगम वाङ्मय में द्वादशांगों को तीर्थंकरों की वाणी के आधार पर गणधरों द्वारा ग्रथित माना जाता है। द्वादशांगी अथवा 'गणिपिटक' का तीसरा अंग 'स्थानांगसूत्र' है। इसकी विषय-वस्तु का संख्या के क्रमानुसार स्थानों के रूप में विषयों का वर्णन किया गया है।

जिसमें एक-एक पदार्थों की विवेचना है, वह 'प्रथम स्थान' है। जिसमें दो-दो पदार्थों का वर्णन है, वह 'द्वितीय स्थान' है। इस तरह क्रमशः उत्तरोत्तर संख्या के क्रम से विषय-वस्तुओं का उल्लेख हुआ है।

चार प्रकार के ध्यान

इसी 'स्थानांगसूत्र' के चतुर्थ स्थान के अन्तर्गत प्रथम उद्देशक में चार ध्यानों की सुन्दर विवेचना की गई है। सूत्रगत प्रत्येक ध्यान के प्रकारों, उपप्रकारों, लक्षण, आलम्बन तथा अनुप्रेक्षा का वर्णन किया गया है।[1] स्थानांगसूत्र में ध्यान के निम्नांकित चार प्रकार कहे गये हैं- 1. आर्त्तध्यान, 2. रौद्रध्यान, 3. धर्मध्यान, 4. शुक्लध्यान।[2] क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय ये दो ध्यान अप्रशस्त तथा शेष दो ध्यान प्रशस्त माने गये हैं। अप्रशस्त ध्यान साधना के लिए अनुपयोगी तथा व्यवधानात्मक हैं, क्योंकि ये राग-द्वेष जनित हैं, बन्धन के हेतु और संसारवृद्धि के कारण हैं। जबकि प्रशस्त ध्यान मुक्ति के हेतु हैं।[3] यहाँ उनका जो उल्लेख हुआ है वह इस बात को लक्ष्य रखकर हुआ है कि आर्त्त, रौद्र ध्यान अशुभ हैं। अशुभ का परित्याग करके शुभ तथा शुद्ध को ग्रहण कर साधक अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।[4] यहाँ दो प्रशस्त ध्यानों के साथ-साथ अप्रशस्त ध्यानों को भी समझना जरूरी है। विश्व में तीन प्रकार के पदार्थ होते हैं- 1. हेय, 2. ज्ञेय और 3. उपादेय।

जगत् के जानने योग्य समग्र पदार्थ ज्ञेय हैं और जो पदार्थ आत्मा को विकारग्रस्त करे अर्थात् कषायवृद्धि का कारण बने ऐसे छोड़ने योग्य पदार्थ हेय हैं, जबकि आत्मकल्याण या आत्मोत्कर्ष में सहयोगी ग्रहणयोग्य पदार्थ उपादेय माने जाते हैं। साधक ज्ञेय को जानकर उपादेय का ग्रहण तथा हेय का परित्याग करें।

(1) आर्त्तध्यान (अशुभ ध्यान)

मानसिक दुःख को उत्पन्न करने वाला ध्यान आर्त्तध्यान है। चिन्तायुक्त मन की एकाग्रता आर्त्तध्यान है। आर्त्तध्यान के निम्न उपप्रकार हैं[5]-

1. **अमनोज्ञ (अप्रिय) संप्रयोग समुत्पन्न–** अनभीष्ट वस्तु का संयोग होने पर उसको दूर करने का बार–बार चिन्तन करना अमनोज्ञ आर्त्तध्यान है।
2. **मनोज्ञ (प्रिय) वियोग–समुत्पन्न–** इष्ट वस्तु का वियोग न हो, बल्कि पुनः पुनः संयोग हो, ऐसा बार–बार चिन्तन करना मनोज्ञ आर्त्तध्यान है।
3. **आतंक संप्रयोग जन्य–** घातक रोग आदि से ग्रसित होने पर उसके पलायन के लिए बार–बार चिन्तन करना आतंक आर्त्तध्यान है।
4. **काम–भोग की लालसा जन्य–** काम–भोग का संयोग होने पर उसका संयोग बना रहे, ऐसा बार–बार चिन्तन करना प्रीतिकारक आर्त्तध्यान है।

प्रायः सांसारिक जीव यही समझते हैं कि हमें जीवन में कभी दुःख न मिले, किन्तु संसारी आत्मा कर्माधीन होती है। भविष्य से सभी अनभिज्ञ होते हैं। जब व्यक्ति की इष्ट वस्तु का वियोग होता है, तब वह आकुल–व्याकुल हो जाता है। उसका ध्यान बार–बार उसी स्थिति में एकाग्र रहता है। यहाँ एकाग्रता तो है, परन्तु परिणाम दूषित है, अतः यह ध्यान (एकाग्रता) साधक के लिए अश्रेयस्कर है।

आर्त्तध्यान के लक्षण[6]:–

1. **क्रन्दनता–** ऊँची–ऊँची आवाज करके रुदन करना। ऐसी स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब किसी प्रियतम का वियोग होता है।
2. **शोचनता–** दीनता का प्रदर्शन करते हुए शोक करना।
3. **तेपनता–** दीनता के समय नेत्रों से अश्रु बहना।
4. **परिदेवनता–** करुणा–जनक शब्दों में विलाप करना।

जब किसी व्यक्ति में ये लक्षण दिखाई दे तब यह समझ लेना चाहिए कि वह व्यक्ति आर्त्तध्यान की स्थिति में है। इसमें होने वाली क्रन्दन, रुदन आदि अशुभ–क्रियाएँ कर्मबन्ध की कारण हैं।

(2) रौद्रध्यान

हिंसादि क्रूर प्रवृत्तियों में निरन्तर मानसिक परिणति रूप एकाग्रता रौद्रध्यान है। आरंभ–समारम्भ की प्रवृत्ति में लगे रहना, दूसरों के दुःख का विचार न करके उन्हें पीड़ित करने में आनन्द मनाना, इन सभी कार्यों में चित्त की एकाग्रता रौद्रध्यान रूप ही है।

रौद्रध्यान के उपप्रकार[7]:–

1. **हिंसानुबन्धी–** निरन्तर हिंसक प्रवृत्तियों में तन्मयता कराने वाली चित्त की एकाग्रता हिंसानुबंधी रौद्रध्यान है।

2. **मृषानुबन्धी–** असत्य भाषण-सम्बन्धी चित्तवृत्तियों की एकाग्रता मृषानुबन्धी रौद्रध्यान है।
3. **स्तेयानुबंधी–** निरन्तर चोरी करने-कराने की प्रवृत्ति सम्बन्धी चित्तवृत्ति की एकाग्रता स्तेयानुबन्धी रौद्रध्यान है।
4. **संरक्षणानुबन्धी–** परिग्रह के अर्जन तथा संरक्षण सम्बन्धी तन्मयता संरक्षणानुबन्धी रौद्रध्यान है।

रौद्रध्यान के लक्षण[8]–

1. **उत्सन्न दोष–** हिंसादि किसी एक पाप में सतत प्रवृत्ति करना।
2. **बहुदोष–** हिंसादि सभी पापों में सदैव संलग्न रहना।
3. **अज्ञानदोष–** मिथ्यादृष्टिकोण के कारण हिंसादि अधार्मिक कार्यों को धर्म मानना।
4. **आमरणान्त दोष–** मरण काल तक भी हिंसादि करने का अनुताप न होना।

रौद्र शब्द का अर्थ कठोरता, निष्ठुरता, क्रूरता भरा आचरण है। हिंसा की प्रवृत्ति ऐसी भयानक होती है कि जिसे करते समय व्यक्ति के भीतर अत्यन्त क्रूरतायुक्त भाव उत्पन्न होते हैं। करुणा, दया, कोमलता के भावों का सर्वथा अभाव हो जाता है। जो व्यक्ति निरन्तर ऐसी हिंसक प्रवृत्तियों में संलग्न रहता है, उस व्यक्ति को अति रुद्र स्वभाववाला व्यक्ति कहा जाता है।

(3) धर्मध्यान

तीर्थंकरों द्वारा प्रणीत श्रुत-धर्म तथा चारित्रधर्म के चिन्तन-मनन में एकाग्रता धर्मध्यान है। अन्य सभी ओर से चित्तवृत्तियों को हटाकर वीतराग के धर्मोपदेश में ही लीन रहने वाला साधक धर्मध्यान की स्थिति में कहा जाता है।[9]

धर्मध्यान के उपप्रकारों का वर्णन[10]–

1. **आज्ञाविचय–** जिनाज्ञा अर्थात् परमात्मा के प्रवचन के चिन्तन में संलग्न रहना आज्ञाविचय धर्मध्यान है। आज्ञा से तात्पर्य वीतरागदेव की धर्म-देशना से है तथा विचय का अर्थ सोचना-विचार करना है। इस ध्यान में साधक स्वयं को तत्त्व के चिन्तन-मनन या विचार-विमर्श में संलग्न रखता है।
2. **अपायविचय–** संसार वृद्धि के हेतुओं का विचार करते हुए उनसे बचने का उपाय करना। अर्थात् हेय क्या है? इसको समझकर छोड़ने के प्रयत्न का विचार करना ही अपायविचय धर्मध्यान है।
3. **विपाक-विचय–** कर्मों के फल का विचार करना। जीव तो कर्माधीन है। पूर्वदूषित

कर्मों के परिणामस्वरूप यदि दुःख की स्थिति आये, तब भी समतापूर्वक उसे सहनकर उसके कारणों का चिन्तन करना ही विपाक-विचय धर्मध्यान है।

4. **संस्थानविचय**- अपने-अपने कर्मों के अनुसार जीव के जन्म-मरण के आधार रूप पुरुषाकार लोक (चौदह राजुलोक) के स्वरूप के चिन्तन में मन को एकाग्र करना संस्थानविचय धर्मध्यान है।

धर्मध्यान के इन चार प्रकारों में एक विशेषता यह है कि ये व्यक्ति को अन्तर्मुखी बनने की प्रेरणा देते हैं। अलग-अलग विषयों से सम्बद्ध होने के बावजूद भी ये सभी आत्मा से सीधे संलग्न होते हैं। वीतरागदेव की वाणी सत्य, तथ्य स्वरूप है। इसका चिन्तन-मनन करते-करते मन में उन तत्त्वों पर स्वतः ही श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है, जिससे कि आत्मा पवित्रता की ओर अग्रसर होती जाती है। श्रद्धाभाव होने पर संसार में पतन के हेतुओं से अपने आप को दूर रखने के चिन्तन में एकाग्रता सहज ही हो जाती है तथा साधक शुभाशुभ परिणति के लिए विचार-विमर्श करता है अर्थात् कर्मविपाक पर चिन्तन जागृत होते ही, लोक के विराट् स्वरूप का स्वतः ही भान होने लगता है। धीरे-धीरे उसकी कषायों में मंदता आने लगती है तथा अपने निजस्वरूप का ज्ञान होने लगता है।

धर्मध्यान के चार लक्षण[11]-

1. **आज्ञारुचि**- जिनाज्ञा के चिन्तन-मनन में रुचि का होना।
2. **निसर्गरुचि**- धर्मकार्यों के करने में सहज ही रुचि उत्पन्न होना।
3. **सूत्ररुचि**- आगम, सिद्धान्तों तथा शास्त्रों के पठन-पाठन में रुचि होना।
4. **अवगाढ़रुचि**- द्वादशांगी के अवगाहन में प्रगाढ़ रुचि होना।

यहाँ धर्मध्यान की पहचान के लिये ये चार लक्षण परिभाषित किये गये हैं। जिन-प्ररूपित तत्त्वों पर श्रद्धा उत्पन्न होने के बाद, जीव स्वतः ही जिनवाणी को, तत्त्वों को अपने ध्यान का, चिन्तन का विषय बना लेता है तथा धार्मिक कार्यों के लिए सहज रुचि पैदा हो जाती है। सत्य धर्म के प्रति रुचि होने पर वह उसको जानने के लिए आगमों के पठन-पाठन में लीन होने लगता है। जब पठन-पाठन, चिन्तन-मनन के साथ बोधप्राप्ति हेतु संलग्न हो जाता है तब साधक को तत्त्व ज्ञान सम्यक् प्रकार से आत्मगत हो जाता है। इस प्रकार वह आगम के अनुशीलन में एकाकार हो जाता है।

धर्मध्यान के आलम्बन[12]-

1. **वाचना**- आगम, सूत्रादि का पठन करना।
2. **प्रतिपृच्छना**- शंका के निवारणार्थ गुरुजनों को पूछना।

3. **परावर्तना**– पठित सूत्रों का पुनरावर्तन करना।
4. **अनुप्रेक्षा**– उन पठित सूत्रों के अर्थ का चिन्तन करना।

वाचना अर्थात् समझपूर्वक पढ़ना। यदि कुशाग्रबुद्धि वाला व्यक्ति है तो वह अपनी शंका का समाधान स्वतः ही कर लेता है ,लेकिन साधारण बुद्धि-वाले व्यक्ति को शंका उत्पन्न होती है तो वह उसके निवारण के लिए गुरुजनों से समाधान प्राप्त करता है। यही तो प्रतिपृच्छना है। सूत्रों की बार-बार पुनरावृत्ति करते रहना परावर्तना है। आगमों के अर्थ पर चिन्तन-मनन करना अनुप्रेक्षा है। कुछ विद्वानों की मान्यता यह भी है कि संसार की अनित्यता का चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है।

धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ[13] –

1. **एकत्वानुप्रेक्षा**– जीव के द्वारा सदा अकेले संसार में परिभ्रमण करना और सुख-दुःख भोगने का चिन्तन करना एकत्वानुप्रेक्षा है।
2. **अनित्यानुप्रेक्षा**– सांसारिक वस्तुओं की अनित्यता का चिन्तन अनित्य अनुप्रेक्षा है।
3. **अशरणानुप्रेक्षा**– जीव के लिए धन-परिवार आदि शरणभूत नहीं है, ऐसा चिन्तन करना अशरणानुप्रेक्षा है।
4. **संसारानुप्रेक्षा**– चतुर्गति रूप संसार की दशा का चिन्तन करना संसारानुप्रेक्षा है।

यहाँ यह परिज्ञातव्य है कि शास्त्रकारों ने आर्त्त और रौद्रध्यान के विषय में जो कथन हमारे समक्ष प्रस्तुत किये हैं, वे ज्ञेयत्व एवं हेयत्व की दृष्टि से हैं यानी उनको समझकर उनका परित्याग कर देना है। लेकिन धर्मध्यान का स्वरूप उपादेयत्व की अपेक्षा से है अर्थात् उसे अंगीकार करके, मानसिक-वाचिक तथा कायिक प्रवृत्तियों को उससे एकीकृत कर देना है। उसके लक्षणों, आलम्बनों तथा अनुप्रेक्षाओं में अपने मन को एकाग्र कर देना है। एकत्व, अनित्यत्व, अशरणत्व और संसारानुप्रेक्षा के स्वरूप को जानकर आत्मस्वरूपोन्मुख बनने का पुरुषार्थ करना है।

(4) शुक्लध्यान

कर्मक्षय के कारणभूत शुद्धोपयोग में लीन रहना शुक्लध्यान कहलाता है। यह ध्यान आत्मसिद्धि का अंतिम सोपान है। जो ध्यान सम्पूर्ण कर्माग्नि को (कषायाग्नि को) बुझा देता है तथा समग्र कर्मदलिकों को समाप्त कर देता है, वह ध्यान शुक्लध्यान है। इसके द्वारा सम्पूर्ण कर्मों का क्षय होने पर आत्मा अपने निजस्वरूप में रमण करते हुए अनन्तानन्द, परमानन्द या परमसुख को उपलब्ध कर लेती है।

शुक्लध्यान के उपप्रकार[14]–

1. पृथक्त्ववितर्कविचार– स्थानांगसूत्र की वृत्ति के अनुसार जब कोई वज्रऋषभनाराच संहननवर्ती, सातवें गुणस्थान में स्थित अप्रमत्त-संयत साधक मोहनीय कर्म के क्षपण में आगे प्रयत्नशील होता है तब वह अग्रिम कक्षा अपूर्वकरण नामक आठवें गुणस्थान में प्रवेश करता है। प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि के द्वारा उसके शुद्धोपयोग स्वरूप वीतराग-परिणति और शुक्लध्यान के प्रथम चरण का प्रारम्भ हो जाता है। यह पृथक्त्ववितर्कविचार शुक्लध्यान है।

वितर्क अर्थात् भावश्रुत के आधार से द्रव्य, गुण और पर्याय का विचार करना। विचार का अर्थ है- व्यंजन पर्याय और योग का परिवर्तन। जब ध्यानस्थित साधु एक पदार्थ का चिन्तन कर, दूसरे पदार्थ का चिन्तन करता है या फिर किसी एक पर्याय का चिन्तन करने लगता है तब उस पृथक्-पृथक् मनन को पृथक्त्ववितर्कविचार कहते हैं। दूसरे शब्दों में इससे श्रुतज्ञान के आलम्बन से भिन्न-भिन्न आयाम से जड़-चेतन, मूर्त्त-अमूर्त्त तथा द्रव्य-गुण-पर्याय का चिन्तन किया जाता है।

2. एकत्ववितर्कविचार– बारहवें गुणस्थानवर्ती क्षीणमोह क्षपक-साधक की चित्तवृत्ति इस हद तक स्थिर एवं निश्चल बन जाती है कि वहाँ द्रव्य, गुण या पर्याय के चिन्तन में परिवर्तन नहीं आता है मात्र व्यंजन, योगों का संक्रमण होता है। वह किसी एक पर्याय पर सूक्ष्मता से, गंभीर रूप से चिन्तन में निमग्न हो जाता है, यह शुक्लध्यान की दूसरी सीढ़ी है।

अन्तराय कर्म की सम्पूर्ण प्रकृतियों का नाश कर अनंत-ज्ञान, दर्शन, वीर्य का धारक सयोगी जिन बनकर तेरहवें गुणस्थान में प्रवेश पा जाता है।

3. सूक्ष्मक्रिय-अनिवृत्ति– शुक्लध्यान की यह तीसरी सीढ़ी है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती सयोगी केवली मात्र अड़तालीस मिनिट प्रमाण आयु शेष रहने पर आयुष्यकर्म के समान नाम, गोत्र एवं वेदनीय कर्म की स्थिति करने के लिए समुद्घात करते हैं। उससे नाम, गोत्र तथा वेदनीय कर्म भी आयुष्य कर्म के समान रह जाते हैं। तत्पश्चात् स्थूल मानसिक-वाचिक तथा कायिक व्यापार का निरोध करते हैं। फलतः सूक्ष्म काययोग के आधार पर सूक्ष्मक्रिया शेष रह जाती है। अतः इसे ही सूक्ष्मक्रिय-अनिवृत्ति कहते हैं।

4. समुच्छिन्नक्रिय-अप्रतिपाति– सूक्ष्म काययोग का निरोध होने पर जीवात्मा चौदहवें गुणस्थान में प्रवेश करती है। यहाँ सूक्ष्म योगों की प्रवृत्ति का सम्पूर्णतया क्षय हो जाने के साथ ही आत्मा अयोगी-अवस्था अर्थात् सिद्धावस्था को प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार वह अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच जाती है।

शुक्लध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं[15], वे निम्नांकित हैं–

1. **अव्यथ–** उपसर्गादि से पीड़ित होने पर भी शुक्लध्यानी का क्षोभित नहीं होना।
2. **असम्मोह–** देवादिकृत माया से मोहित नहीं होना, अर्थात् मोहग्रस्त नहीं होना।
3. **विवेक–** सभी संयोगों को आत्मा से भिन्न मानना।
4. **व्युत्सर्ग–** आधि, व्याधि तथा उपाधि के ममत्व को त्यागकर पूर्णतः निःसंग होना।

साधना का मार्ग बड़ा कठिन है। साधक जब स्व-पर के भेद-विज्ञान से सर्वथा अभिज्ञ हो जाता है तब स्व-पर पदार्थों के प्रति उसकी आसक्ति, उसका ममत्व मिट जाता है। यहाँ तक कि अपनी देह के लिए उपयोगी वस्तुओं में भी चित्त की वृत्ति अनासक्तिमय बन जाती है।

शुक्लध्यान के आलम्बन[16]– 1. क्षान्ति (क्षमा), 2. मुक्ति (निर्लोभता), 3. आर्जव (सरलता) और 4. मार्दव (मृदुता)।

मूलतः शुक्लध्यान के जो आलम्बन हैं, वे कषायों के अभाव के हेतु हैं। जब साधक के जीवन में क्षान्ति समा जाती है, तब क्रोध का स्वतः ही पलायन हो जाता है और मुक्ति में तो लोभ का अस्तित्व ही नहीं रहता है। आर्जव माया के परित्याग का सूचक है तो मार्दव मान कषाय के त्याग का सूचक है।

शुक्लध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ निम्नांकित हैं[17]–

1. **अनन्तवृत्तितानुप्रेक्षा–** संसार में परिभ्रमण की अनन्तता का विचार करना।
2. **विपरिणामानुप्रेक्षा–** वस्तुओं के विविध परिणमनों का विचार करना।
3. **अशुभानुप्रेक्षा–** संसार, देह और भोगों की अशुभता का विचार करना।
4. **अपायानुप्रेक्षा–** राग-द्वेष से होने वाले दोषों का विचार करना।

यह सामान्य साधकों के लिए सरल नहीं है, क्योंकि अतिसूक्ष्म ध्यान आन्तरिक अनुभूति का विषय है। जो महान् अध्यात्मयोगी उच्चतम गुणस्थानों को प्राप्त कर चुके हैं वे योगी ही इसकी अनुभूति कर सकते हैं और इस प्रकार वे जीवन के परमलक्ष्य निर्वाण या मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं।

संदर्भः–

1. स्थानांगसूत्र, चतुर्थ स्थान 1.3, सूत्र 60-72, पृष्ठ 222-226
2. (क) 'चत्तारिझाणा पण्णत्ता, तं जहा-अट्टे झाणे।
रोद्देझाणे, धम्मेझाणे सुक्केझाणे।' -स्थानांग, चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र-60, पृष्ठ 222)
(ख) आवश्यक निर्युक्ति, गाथा- 1495 (ग) भगवती सूत्र, 25.7.509-513
(घ) समवायांगसूत्र -समवायांग 32, पृष्ठ 93

(ड) आवश्यकचूर्णि -पृष्ठ 50, प्रतिक्रमणाध्याय, जिनदासगणि महत्तर

(च) पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं,

अट्टेणं झाणेणं, रुद्देणं झाणेणं, धम्मेणं झाणेणं सुक्केणं झाणेणं।

-पगामसिज्झाय, आवश्यक श्रमण सूत्र

3. (क) परे मोक्षहेतू -तत्त्वार्थसूत्र 9.30

(ख) एयंचउव्विहं राग-दोस-मोहंकियस्स जीवस्स।

अट्टज्झाणं संसारवद्धणं तिरियगइमूलं।।- ध्यानशतक गाथा नं. 10 जिनभद्रगणिकृत

(ग) आर्त्त रौद्रं धम्मं तथा शुक्लं चेति चतुर्विधम्।

तत्राद्यं संसृतेर्हेतुर्द्वयं मोक्षस्य तत्परम्।।- ध्यानस्तव, श्लोक-8, भास्करनंदीकृत

(घ) आर्त्तं रौद्रं च दुर्ध्यानं..........।। -ध्यानदीपिका, प्रकरण 5, श्लोक 69

4. अट्ठ रुद्दाणि वज्जिता, झाएज्जा सुसमाहिए।

धम्म सुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहावए।। (उत्तराध्ययन सूत्र, 30-35)

5. (क) अट्टझाणे चउविव्हे पण्णत्ते, तं जहाः-

अमणुण्ण-संपओगं-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।

मणुण्ण संपओगं-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।।

आयंकसंपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओगसति समण्णागते यावि भवति।

परिझुसियकामभोगसंपओग संपउत्ते तस्स अविप्पओग सति समण्णागते यावि भवति।।

- स्थानांग चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र-61, पृष्ठ 222

(ख) अमणुण्णाणंसद्दाइ............मच्चंतं।। -ध्यानशतक, गाथा-6-9, जिनभद्रगणिकृत

(ग) विप्रयोगे मनोज्ञस्य......... स्मृतिः।। -ध्यानस्तव, श्लोक 9, भास्करनंदीकृत

(घ) आर्त्तममनोज्ञानां ....।। -तत्त्वार्थसूत्र, 9.31-35, उमास्वातिकृत

(ड़) समवायांग -चतुर्थ समवाय पृ. 27-28, संपादक मधुकर मुनि

(च) औपपातिक सूत्र -सूत्र 30, तप विवेचनान्तर्गत पृ. 49 मधुमर मुनि संपादन

(छ) अनिष्टयोगजं चाद्य...........लक्षणं।। -ध्यानदीपिका प्रकरण 5, श्लोक 70-75

6. (क) अट्टस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-कंदणता, सोयणता तिप्पणता, पडिदेवणता। (स्थानांग चतुर्थ स्थान, उद्देश्क 1, सूत्र-62, पृष्ठ 222)

(ख) तस्सऽक्कंदण-सोयण-परिदेवण-ताडणाइं लिंगाइं।

इट्ठाऽणिट्ठविओगाऽविओग-वियणानिमित्ताइं।। (ध्यानशतक, गाथा 15)

7. (क) रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-हिंसाणुबन्धि, मोसाणुबन्धि-तेणाणुबंधि सारक्खणाणुबन्धि।-स्थानांग, चतुर्थ स्थान,उद्देशक 1,सूत्र 63,पृ. 223

(ख) सत्तवह-वहे-बन्धण.......।। -ध्यानशतक, गाथा 19-22

(ग) 'हिंसाऽनृतस्तेयविषय संरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः' -तत्त्वार्थ सूत्र 9.36

(घ) हिंसनासत्यचौर्यार्थरक्षणेभ्यः........।। (ध्यानस्तव श्लोक 11)

(ड) ज्ञानार्वण, 24.3 (च) समवायांग, 4

(छ) दुष्ट क्रूराशयो जंतु रौद्रकर्मकरो यतः.........।। -ध्यानदीपिका प्रकरण 6, गाथा 81

8. लिंगाइं तस्स उस्सण्ण-बहुल-नाणाविहाऽऽमरणदोसा।
तेसिं चिय हिंसाइसु बाहिरकरणोवउत्तस्स।। (ध्यानशतक गाथा, 26)

9. झाणस्स भावणाओ देसं कालं तहाऽऽसणविसेसं।
आलंबणं कमं झाइयव्वयं जे य झायारो।। (ध्यानशतक गाथा, 27)

10. (क) धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते,
तं जहा-आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए।
-स्थानांग 4, उद्देशक 1, सूत्र 65

(ख) 'आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य'। -तत्त्वार्थ 9.37

(ग) जिनाज्ञा-कलुषाय ....।। (ध्यानस्तव, श्लोक-12)

(घ) सुनिउणमणाइणिहण........।। (ध्यानशतक, 45-48)

11. 'धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता तं जहा-
आणारुई, णिस्सगरुई, सुत्तरुई, ओगाढ़रुई' -स्थानांग, चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र 66, पृ. 224)

12. (क) स्थानांगसूत्र, चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, गाथा-67, पृष्ठ 224

(ख) तत्त्वानुशासन, 9.8

(ग) योगशास्त्र, 10.7

(घ) ज्ञानार्णव, 30.5

(ङ) सामाइयायाइं सद्धम्मावस्सयाए।। -ध्यानशतक, गाथा, 42

(च) औपपातिक सूत्र (तपविवेचनान्तर्गत)

13. (क) झाणोवरमेऽवि...............।। (ध्यानशतक-66)

(ख) प्रविश्याथ शमाम्मोधिं.......।। -ध्यानदीपिका प्रकरण 7, श्लोक-97-136 तक विवेचना

14. (क) 'सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोआरे पण्णत्ते।
तं जहा-पुहुतवितक्के ......अप्पडिवाती।।
-स्थानांग चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र 69, पृष्ठ 225

(ख) 'पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति व्युपरतक्रियानिवृत्तीनि'।(तत्त्वार्थ सूत्र, 9.41)

(ग) उप्पाथ-ट्ठिइ ....।। -ध्यानशतक गाथा 78-84

(घ) सवितर्कसविचारं............विभो।। -ध्यानस्तव श्लोक 17

(ङ) योगशास्त्र, 11.2

(च) शुक्लं चतुर्विधं ....।। -ध्यानदीपिका प्रकरण 9, श्लोक 195

(छ) समवायांग (समवाय-4)

15. (क) सुक्कस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता,
तं जहा-अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे।।
-स्थानांग, चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र 70, पृ.226

(ख) अवहाऽसंमोह-विवेग.......।। (ध्यानशतक 91-93)

16. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता,
तं जहा-खंती, मुत्ती, अज्जवे मद्दवे।। -स्थानांग, चतुर्थ स्थान उद्देशक 1, सूत्र 71, पृष्ठ 226

17. (क) सुक्कस्सणं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-अणंतवतियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा।
-स्थानांग, चतुर्थ स्थान, उद्देशक 1, सूत्र 72, पृष्ठ 226

(ख) सुक्कज्झाणसुभावियचित्तो चिंतेई झाण विरमेऽवि। (ध्यानशतक-88)

अक्षय तृतीया

दान

डॉ. धर्मचन्द जैन

जो संयोग से हमें प्राप्त है उसे हित बुद्धि से जरूरतमंद को अथवा सत्पात्र को देना दान है। प्रमुखतः दान के चार प्रकार निरूपित हैं- आहार दान, औषध दान, ज्ञान दान और अभयदान। इन चार प्रकार के दानों का सम्बन्ध साधु और गृहस्थ दोनों से है। साधु-साध्वी गृहस्थ से आहार एवं औषध ग्रहण करते हैं। ज्ञान का दान प्रायः साधुओं के द्वारा गृहस्थों को किया जाता है, किन्तु कदाचित् विद्वान् गृहस्थ भी साधु को ज्ञान दान कर सकता है। अभयदान ऐसा दान है जिसमें मात्र अहिंसा के पालन से अन्य प्राणियों की रक्षा कर उन्हें निर्भयता प्रदान की जाती है। भयभीत प्राणियों को निर्भय बनाना एवं उनके प्राणों की रक्षा करना भी दान की कोटि में आता है। इसमें दाता स्वयं का इतना सामर्थ्य बढ़ा लेता है कि वह दूसरों को निर्भय बनाने में समर्थ होता है। यह अभयदान साधु-साध्वियों एवं गृहस्थों दोनों के द्वारा किया जाना सम्भव है। इसे श्रेष्ठदान माना गया है- **दाणाण सेट्ठमभयप्पयाणं।**

उपर्युक्त चार प्रकारों के अतिरिक्त भी दान का प्रकार संभव है। गृहस्थ को जो कुछ प्राप्त है उसे यदि वह परहित के लिए अन्य को देता है तो वह दान है। नकद राशि, धन सम्पत्ति आदि का दान, रक्तदान, अंगदान, शरीरदान, वस्त्रदान, कन्यादान, समयदान आदि अनेकविध दान भी प्रचलन में हैं, किन्तु सम्प्रति 'दान' शब्द का मुख्य अर्थ प्रायः धन-दान ही समझा जाता है।

रिद्धि सहावतरला, रोग-जरा-भंगुरं हि सरीरं।
दोण्हं पि गमणसीलाणं कियच्चिरं होज्ज संबंधो।।

लक्ष्मी स्वभाव से चंचल है और यह शरीर रोग एवं जरा से युक्त होने के कारण भंगुर है। शरीर और लक्ष्मी दोनों गमनशील हैं अतः मनुष्य से इनका सम्बन्ध स्थायी नहीं हो सकता।

-3 के 24-25, कुडी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

अध्यात्म

दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (2)

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

27. सुख का प्रलोभन, सुख की आशा, सुख का भोग, सुखासक्ति, सुख की दासता ये सब समस्त दुःखों के कारण हैं।
28. दुःख से मुक्त होने के लिए सुख के प्रलोभन, आशा, भोग, आसक्ति व दासता का त्याग करना अनिवार्य है।
29. शरीर को मैं और संसार को मेरा मानना ही पराधीनता, जड़ता, वियोग के दुःख में आबद्ध होना है।
30. शरीर और संसार से संबंध जोड़ना ही बंधन है। इनसे संबंध विच्छेद करना असंग होना ही बंधन से मुक्ति पाना है, दोष से मुक्त होना है।
31. शरीर और संसार नश्वर व जड़ है। इनसे असंग होने पर स्वतः अविनाशी के चिन्मय आनन्द का अनुभव होता है।
32. दुःख का कारण दोष (पाप) है। दोष प्राणी के करने से होता है, स्वतः उत्पन्न नहीं होता।
33. दुःखों से मुक्ति वस्तुओं के संबंध-त्याग से होती है, वस्तुओं के त्याग से नहीं।
34. नवीनता के सुख का भोगी सनातन का पुजारी नहीं हो सकता।
35. अशांति का कारण कामना है। अशांति के दुःख से मुक्त होने का उपाय कामना का त्याग करना है।
36. पराधीनता व बंधन का कारण ममता है। ममता के त्याग से स्वाधीनता व मुक्ति के अक्षय-अखंड सुख का अनुभव स्वतः होता है।
37. अहंता (अभिमान) का कारण शरीर और संसार से तादात्म्य है। इनके तादात्म्य का त्याग करने पर शरीर और संसार से अतीत के अनंत सुख के साम्राज्य में विचरण होता है।
38. सुख का प्रलोभन समस्त दोषों और दुःखों का जनक है। सुख के प्रलोभन का सर्वांश में त्याग करते ही समस्त दोषों और दुःखों से स्वतः मुक्ति हो जाती है और शांति के अक्षय सुख, मुक्ति-स्वाधीनता के अखंड सुख एवं प्रीति के अनन्त सुख की अभिव्यक्ति व अनुभूति हो जाती है।

39. कामना के त्याग से शांति मिलती है। शांति के भोगी को सुख का अनुभव होता है, परन्तु सुख के भोगी को शांति नहीं मिलती है।
40. समस्त दुःखों का कारण इन्द्रिय-सुख का भोग है। सुख के भोग का त्याग करते ही सुख-दुःख से अतीत सच्चिदानन्द के साम्राज्य में प्रवेश हो जाता है।
41. अभाव का होना ही दरिद्रता है। अभाव का अनुभव कामना की उत्पत्ति में है। कामना के त्याग से ही समस्त अभावों से, दरिद्रता से मुक्ति मिल जाती है, यह ही सच्ची समृद्धि एवं ऐश्वर्य है।
42. शरीर और संसार बंधन नहीं हैं। इन्हें अपना मानना बंधन है, पराधीन होना है।
43. सम्मान चाहने वाले को ही अपमान का दुःख भोगना पड़ता है।
44. धन के लोभी को अभाव (दरिद्रता) का दुःख भोगना पड़ता है।
45. कामना उत्पत्ति के साथ अभाव, अशांति और चिंता आदि दुःखों की उत्पत्ति हो जाती है।
46. ममता की उत्पत्ति के साथ पराधीनता, जड़ता व सब विकारों-दोषों दुःखों की उत्पत्ति हो जाती है।
47. अहंभाव के कारण ही जीव अनन्त वैभव, विभुता एवं मुक्तावस्था से विच्छिन्न होकर सीमित चारदीवारी के कारागार में आबद्ध हो गया है।
48. विषयभोग का सुख प्रतिक्षण क्षीण होकर नष्ट हो जाता है। परन्तु सेवा से होने वाला प्रमोद व प्रसन्नता रूप सुख सदैव ज्यों का त्यों रहता है, अक्षय होता है।
49. शरीर और संसार को अपना न माने, इनसे सुख लेने का त्याग कर दे तो इसी क्षण मुक्ति के सुख की अनुभूति हो जायेगी।
50. विनाशी की आसक्ति का त्याग किए बिना अविनाशी की प्रीति का परमानन्द नहीं मिलता।
51. कामना के रहते शांति के अक्षय सुख की, ममता के रहते मुक्ति के अखंड सुख की और अहंता के रहते प्रीति के अनंत सुख की अनुभूति कदापि संभव नहीं है।
52. कामना, ममता और अहंता का त्याग करने में, शांति-मुक्ति-प्रीति का अक्षय, अखंड, अनंत सुख पाने में मानव-मात्र समर्थ और स्वाधीन है, क्योंकि त्याग में देश, काल, वस्तु आदि अपने से भिन्न की आवश्यकता नहीं होती। अतः शांति, मुक्ति और प्रीति पाने में स्वयं को असमर्थ मानना व निराश होना अपना घोर अहित करना है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

शोधालेख

जैनदृष्टि तथा आधुनिक अर्थनीति

मुनि श्री मनीष सागर जी

जैन जीवनदृष्टि मूलतः निवृत्ति-प्रधान एवं आध्यात्मिक विचारधारा है। इसमें अर्थ के प्रति सापेक्षिक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। जैनदर्शन में यद्यपि साध्य के रूप में मोक्ष एवं साधन के रूप में धर्म पुरुषार्थ को स्वीकार किया गया है, किन्तु अर्थ एवं काम को सर्वथा हेय नहीं माना गया है।[1] साधु धर्म एवं मोक्ष पुरुषार्थ के प्रति पूर्ण समर्पित होते हैं, किन्तु गृहस्थ को जीवन-यापन के लिए अर्थोपार्जन की आवश्यकता होती है। अन्यथा वह भूख-प्यास रूप शारीरिक-वेदना तथा अपयश, अनादर, अप्रीति रूप मानसिक-वेदना से प्रभावित होकर असमाधि एवं अवसाद से ग्रस्त हो सकता है। साथ ही वह धर्म एवं मोक्ष से भी विमुख होकर विसंगतियों का शिकार हो सकता है।

ऐसी अवांछनीय स्थिति से बचने के लिए तथा मोक्षानुकूल धर्म-साधना की अभिवृद्धि के उद्देश्य से साधक को न्याय-नीतिपूर्वक ही अर्थ-पुरुषार्थ करना चाहिए। इस प्रकार अर्थ परोक्ष-साधन के रूप में उपयोगी सिद्ध होता है। न्यायोपार्जित अर्थ के प्रति जैनदर्शन में सम्माननीय दृष्टिकोण है। डॉ. सागरमल जैन ने कहा है-"जो धर्म-अर्थ-काम परस्पर समन्वित होकर मोक्षाभिमुख होते हैं, वे जैनदर्शन के अनुसार आचरणीय हैं और जो मोक्ष-विमुख होते हैं, वे निश्चित रूप से अनाचरणीय एवं हेय हैं।"[2] उपर्युक्त आशय को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण पर्याप्त हैं-

1. आर्य भद्र (ईसा की द्वितीय शताब्दी) के अनुसार धर्म-अर्थ-काम को भले ही अन्य विचारक परस्पर विरोधी मानते हों, किन्तु जिनवाणी के अनुसार औचित्यपूर्ण ढंग से प्रयुक्त होने पर ये परस्पर अविरोधी हो जाते हैं। इस प्रकार किए जाने वाले धर्म-कार्य, स्वच्छ आशययुक्त अर्थ एवं सुमर्यादित काम परस्पर अविरोधी होते हैं।[3]
2. डॉ. सागरमल जैन के अनुसार-"जैनदर्शन में अर्थ एवं काम को एकान्त हेय नहीं माना गया है, क्योंकि यदि ऐसा होता तो भगवान ऋषभदेव स्त्रियों की चौसठ तथा पुरुषों की बहत्तर कलाओं का विधान क्यों करते?"[4]
3. एक प्राकृत-सूक्ति के अनुसार- ब्राह्मण को ज्ञान से, क्षत्रिय को असि (सुरक्षाकार्य) से, वणिक् को वाणिज्य से तथा कर्मशील को शिल्पादि से धनार्जन करना चाहिए।[5]

4. जैन-परम्परा में मोक्षमार्ग के आराधकों के चार अंग मान्य हैं- साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका।[6] जहाँ साधु-साध्वी आर्थिक क्रियाकलापों को विराम देकर, गृह-त्याग कर मोक्षमार्ग की आराधना करते हैं, वहीं श्रावक-श्राविका गृहस्थ रहकर आवश्यकता के अनुसार अर्थोपार्जन करते हुए मोक्षमार्ग का अभ्यास करते हैं। यह संघ-व्यवस्था इस बात की द्योतक है कि जैनदर्शन में मोक्षमार्ग की निचली कक्षा में अर्थ का निषेध न करके मोक्षमार्ग की साधना के साथ उसका समन्वय किया गया है।

5. प्राचीन जैनशास्त्रों में अर्थशास्त्र सम्बन्धी अनेक उल्लेखों का मिलना अर्थ के महत्त्व को और अधिक स्पष्ट करता है, जैसे-

(1) अर्थ प्राप्ति से सम्बन्धित शास्त्रों को 'अत्थसत्थ' अर्थात् अर्थशास्त्र कहा गया है।[7]

(2) निशीथचूर्णि में अर्थार्जन करने की प्रक्रिया को 'अट्ठुप्पत्ति' कहा गया है।[8]

(3) प्रश्नव्याकरण से ज्ञात होता है कि उस काल में अर्थशास्त्र विषयक ग्रंथ लिखे जाते थे।[9]

(4) बृहत्कल्पभाष्य में कहा गया है कि आजीविकोपार्जन के लिए गृहस्थ अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करते थे।[10]

(5) नन्दीसूत्र के अनुसार वैनयिकी बुद्धि से मनुष्य अर्थशास्त्र आदि लौकिक शास्त्रों में निष्णात हो जाते थे।[11]

(6) ज्ञाताधर्मकथासूत्र के अनुसार सम्राट् श्रेणिक का पुत्र अभयकुमार अर्थशास्त्र का विद्वान् था।[12]

(7) वसुदेवहिण्डी में कहा गया है कि अगडदत्त कौशाम्बी निवासी आचार्य दृढ़प्रहारी के पास अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए ही गया था।[13]

(8) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में भरत के सेनापति सुषेण को अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र दोनों में निपुण कहा गया है।[14]

(9) अधिक क्या कहना, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवजी को जैन-परम्परा में अर्थ-व्यवस्था का आदिसंस्थापक माना गया है।[15]

(10) आदिपुराण के अनुसार उन्होंने अपने पुत्र भरत के लिए अर्थशास्त्र का निर्माण किया था।[16]

इस प्रकार गृहस्थोचित कर्त्तव्यों के सम्यक् निर्वाह के लिए जैन-परम्परा में अर्थ का

समुचित स्थान माना जाता रहा है।

6. उपासकदशांगसूत्र में कहा गया है कि भगवान महावीर के काल में दस श्रेष्ठियों ने अपने अपार धन-वैभव को मर्यादित करते हुए व्रतमय जीवन व्यतीत किया था। इनके नाम इस प्रकार हैं[17]- 1. आनन्द, 2. कामदेव, 3. चुलनीपिता, 4. सुरादेव, 5. चुल्लशतक, 6. कुण्डकौलिक, 7. शकडालपुत्र, 8. महाशतक, 9. नन्दिनीपिता, 10. सालिहीपिता।

   इसके अतिरिक्त प्राचीनकाल से ही बड़े-बड़े चक्रवर्ती, सम्राट्, राजा-महाराजा, मंत्री, सेनापति, कोषाध्यक्ष एवं नगरसेठ आदि जैनधर्म के अनुयायी रहे हैं। इन्होंने अपनी-अपनी भूमिकानुसार धर्मानुकूल एवं मोक्षानुकूल अर्थोपार्जन किया था।[18]

7. जैन-पौराणिक कथाओं में भी अनेक बार प्राचीन सामाजिक संस्कृति के आधार पर अर्थ के महत्त्व को सूचित किया गया है, जैसे- समराइच्चकहा, कुवलयमालाकहा, पउमचरियं, कल्पसूत्र आदि।[19]

असन्तुलित, अमर्यादित एवं अव्यवस्थित अर्थनीति के दुष्परिणाम

जीवन में अर्थ के महत्त्व का सम्यक् निर्धारण करने के साथ-साथ सन्तुलित, सुमर्यादित एवं सुव्यवस्थित सम्यक् अर्थनीति का निर्माण करना भी अत्यावश्यक है। मेरी दृष्टि में इस अर्थनीति के तीन पक्ष होने चाहिए, जो इस प्रकार हैं-

1. **सन्तुलित अर्थनीति-** वह नीति, जिसमें अर्थ के साथ-साथ जीवन के अन्य आवश्यक पहलुओं, जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार, समाज, धर्म, अध्यात्म आदि को उचित महत्त्व दिया जाए वह सन्तुलित अर्थनीति है। इसमें किसी भी आवश्यक पहलू की न एकान्त से गौणता होती है, न मुख्यता, बल्कि साम्य (Equilibrium) होता है। इसका एक सुन्दर उदाहरण महात्मा गाँधी के जीवन में झलकता है, जो नियमित रूप से प्रातः सात बजे सूत कातने के लिए चरखा चलाते थे (अर्थ क्रिया), सायं सात बजे प्रभु-प्रार्थना में डूब जाते थे (धर्म क्रिया) और शेष समय अपने बाकी कर्त्तव्यों का निर्वाह करते थे।

2. **सुमर्यादित अर्थनीति-** वह नीति, जिसमें मानवीय, सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक सभी मानदण्डों की मर्यादा के अनुरूप आर्थिक क्रियाएँ की जाएँ, सुमर्यादित अर्थनीति है। इसमें आर्थिक क्रियाकलापों के अतिरेक पर अंकुश लगाकर उचित आवश्यकताओं की पूर्ति का लक्ष्य होता है। आर्थिक-प्रक्रियाओं में साधन-शुद्धि, साध्य-शुद्धि, विधि-शुद्धि, स्थान-शुद्धि, समय-शुद्धि आदि के मापदण्ड

सुनिश्चित किए जाते हैं। इसमें अर्थ का अर्जन कैसे करना? क्यों करना? किस प्रक्रिया से करना? कब करना? आदि का सुनिर्धारण किया जाता है।

3. **सुव्यवस्थित अर्थनीति–** वह नीति, जिसमें अर्थ की संप्राप्ति सुगमता, सहजता, सुप्रबन्धता, सुज्ञता और सुक्रमता के साथ की जाए, सुव्यवस्थित अर्थनीति है। यह अर्थोपार्जन के विविध साधनों– व्यक्ति, पूंजी, प्रबन्ध, भूमि आदि के सुसमन्वय पर जोर देती है।

आधुनिक युग में विद्यमान असन्तुलित, अमर्यादित एवं अव्यवस्थित अर्थनीति

वर्तमान में व्यक्ति ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया है, आर्थिक क्षेत्र में भी वह समृद्धि, सम्पन्नता एवं सुविधा की अधिकाधिक प्राप्ति हेतु अग्रसर है। भौतिकवादी दृष्टिकोण से देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवन–स्तर में हुई अभिवृद्धि वर्तमान की सफल अर्थनीति का ही सुपरिणाम है। उत्पादन, वितरण एवं उपभोग सभी क्षेत्रों में अपूर्व उन्नति हुई है। सड़क, बिजली, दूरसंचार, परिवहन, जल, आवास आदि सुविधाएँ सुलभता से उपलब्ध हो रही हैं। यह सब आधुनिक अर्थनीति की ही देन है। किन्तु आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्ति आज कोरा भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी (Self-centred) होता जा रहा है।[20] उसकी सेवा, सहयोग और सहृदयता की भावनाओं में दिनोंदिन कमी होती जा रही है। इससे अनेकानेक वैयक्तिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इस तरह सर्वांग समीक्षा करने पर आधुनिक अर्थनीति की सफलता पर अनेक सवाल खड़े हो जाते हैं। संक्षेप में, इस अर्थनीति को हम सर्वथा गलत नहीं, किन्तु असन्तुलित, अमर्यादित एवं अव्यवस्थित अर्थ नीति कह सकते हैं। इसका पर्यालोचन करना ही प्रस्तुत अनुच्छेद का उद्देश्य है, जिससे सम्यक् अर्थनीति के निर्माण का आधार बन सके एवं जीवन में अर्थ का सम्यक् प्रबन्धन हो सके। आधुनिक अर्थनीति की विसंगतियों को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है–

आधुनिक अर्थनीति के आधारभूत बिन्दु

1. आधुनिक अर्थनीति पूर्णतया भौतिकवादी है, जिसमें नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के लिए कोई स्थान नहीं है।
2. इसमें आध्यात्मिक विकास तो दूर की बात, मानवीय दृष्टिकोण की भी उपेक्षा की जा रही है।
3. इसमें एकान्त रूप से अर्थ का सर्वोच्च मूल्य मान लिया गया है, क्योंकि इसकी दृष्टि में अर्थ संसार की समस्त शक्तियों का केन्द्र है।[21]

4. इसके अनुसार, जीवन का लक्ष्य सिमटकर सिर्फ अर्थ तक ही सीमित हो जाता है।
5. इसमें समृद्धि, सुविधा और विलासिता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, क्योंकि इन्हें ही जीवन-स्तर (Status) की उन्नति का मापदण्ड मान लिया गया है।[22]
6. यहाँ अंतरंग सम्पन्नता के स्थान पर बाह्य-सम्पन्नता को ही समृद्धि एवं अमीरी का पैमाना मान लिया गया है, क्योंकि आधुनिक अर्थशास्त्रियों की दृष्टि में वैयक्तिक एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि ही विकास का सूचक है।[23]
7. इसका एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है- 'इच्छाओं को बढ़ाओ, अपना माल खपाओ और धन कमाओ'[24] क्योंकि अर्थशास्त्री ऐसा मानते हैं कि इच्छा से आवश्यकता बढ़ती है और आवश्यकता से बाजार में माँग। माँग बढ़ने से पूर्त्ति के प्रयत्न बढ़ते हैं। पूर्त्ति हेतु अधिक परिश्रम करके तथा अधिक संसाधनों का दोहन करके अधिक उत्पादन किया जाता है। यह उत्पादन ही उपभोक्ताओं की उद्दीप्त इच्छाओं की सन्तुष्टि करता है, जिससे वैयक्तिक एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।
8. इसमें न केवल इच्छाओं को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है, अपितु इच्छाओं को अनियंत्रित एवं असीम बनाने पर भी जोर दिया जाता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों का मुख्य सूत्र ही है-'अनियंत्रित इच्छाएँ ही हमारे लिए कल्याणकारी और विकास का हेतु है। जहाँ इच्छाओं को नियंत्रित करेंगे, वहाँ विकास ही अवरुद्ध हो जायेगा।'[25]
9. इसमें इच्छाओं के सीमाकरण की कोई व्यवस्था नहीं है, इसलिए बढ़ती हुई इच्छाएँ असंयमित, अनियंत्रित एवं असीम हो जाती हैं। उपभोक्ता की किसी वस्तुविशेष को लेकर उत्पन्न इच्छा एक बार के उपभोग से ही सदा के लिए शान्त नहीं हो पाती। यद्यपि उपभोग के पश्चात् वस्तु की उपयोगिता तो नष्ट हो जाती है, किन्तु एक अन्तराल के बाद पुनः इच्छा जाग जाती है और वह एक नई आवश्यकता बन जाती है। इससे पुनः माँग उठती है, माँग की पूर्ति के लिए उत्पादन बढ़ाया जाता है और उपभोक्ता बाजार से वस्तु का क्रय कर उसका उपभोग करता है। इस प्रकार यह अन्तहीन सिलसिला बना ही रहता है। इतना ही नहीं, ये इच्छाएँ सतत बढ़ती ही चली जाती हैं, इसे ही आधुनिक अर्थशास्त्री प्रगतिशील आर्थिक-चक्र (Developing Economic cycle) कहते हैं। आधुनिक अर्थनीति का मुख्य आधार ही है- आर्थिक चक्र का विकास करना और इसकी कुंजी है व्यक्ति के भीतर भौतिक इच्छाओं को उकसाना और भड़काना।[26]
10. आधुनिक अर्थनीति में 'खूब उत्पादन और खूब उपभोग' के सूत्र को प्रधानता दी गई

है। ऐसा माना जाता है कि इससे निम्न लाभ प्राप्त होंगे[27]-

(i) अधिक उत्पादन से गरीबी मिटेगी और धनाढ्यता बढ़ेगी।

(ii) अधिक उपभोग से जीवन-स्तर उन्नत होगा, जीवन सुविधामय एवं विलासितायुक्त बनेगा।[28]

(iii) बढ़ती हुई जनसंख्या को रोजगार मिल सकेगा।

(iv) विज्ञान एवं तकनीकी-विकास को प्रोत्साहन मिलेगा और इससे प्रकृति पर मनुष्य का प्रभुत्व बढ़ेगा।

(v) व्यक्ति की व्यस्तता बढ़ जाने से सामाजिक विकृतियों, जैसे- क्लेश-कलह, मारपीट, आपसी रंजिश, दंगे-फसाद, व्यर्थ की गप-शप, तमाशगिरी, प्रमाद आदि पर स्वतः अंकुश लग सकेगा। कहावत भी है- 'खाली दिमाग शैतान का घर।'

(vi) इसके अतिरिक्त विश्वव्यापी आर्थिक प्रतिस्पर्धाओं का डटकर सामना हो सकेगा तथा विश्व में राष्ट्रीय वर्चस्व स्थापित हो सकेगा।

(vii) राष्ट्रीय वर्चस्व स्थापित होने से राष्ट्र की भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं सामरिक सुरक्षा सुदृढ़ होगी।

11. आधुनिक अर्थनीति में इच्छाओं को उकसाने, बढ़ाने एवं भड़काने के लिए विविध संचार-साधनों (Mass Communication) को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। इन साधनों के मुख्यतः चार प्रकार हैं[29]- 1. विज्ञापन (Advertisement),2. लोक-प्रचार (Publicity), 3. व्यक्तिगत-विपणन (Personal Selling), 4. विपणन-प्रोत्साहन (Sales Promotion)

ये साधन विविध मनोज्ञ-उत्पादों के लिए सूचित, प्रभावित एवं सम्मोहित करके व्यक्ति की सुप्त वासनाओं को जगा देते हैं।[30] ये वासनाएँ तब तक शान्त नहीं होती, जब तक कि वस्तु का उपभोग न हो जाए। इन साधनों की अनेकानेक खामियाँ हैं, जैसे[31]-

(i) ये अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने और भोगने के लिए व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक रूप से दबाव डालते हैं।

(ii) विज्ञापनों में भद्दी पोशाकों, अश्लील दृश्यों एवं फूहड़ शब्दों का प्रयोग होने से सामाजिक सभ्यता और संस्कृति का पतन होता है।

(iii) इनमें धन का भी बहुत अधिक अपव्यय होता है।[32]

(iv) विज्ञापनों में अधिकांशतः झूठी अथवा अतिशयोक्तिपूर्ण जानकारियाँ ही दी जाती हैं। किसी ने कहा है- किसी समाचार पत्र की एक झलक लेने अथवा दूरदर्शन के समक्ष चन्द घण्टे बैठने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अधिकतर विज्ञापन झूठे, अरुचिकर एवं सन्तापकारी होते हैं।[33]

12. आधुनिक अर्थनीति में कार्य की नैतिकता पर तो जोर है ही नहीं, साथ ही कार्यविधि में भी नैतिकता का स्थान नहीं है। यहाँ अर्थोपार्जन हेतु अपनाए जा रहे अवैधानिक शॉर्ट-कट्स, जैसे- रिश्वतखोरी, घोटाले, गबन आदि की रोकथाम के लिए नैतिक प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। दूसरे शब्दों में, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के लिए कोई सम्माननीय स्थान नहीं है।

13. इसमें उत्पादन एवं उपभोग का महत्त्व इतना अधिक है कि प्राकृतिक संसाधनों (पर्यावरण) के अतिदोहन एवं प्रदूषण पर कोई नियंत्रण नहीं है।

14. आधुनिक अर्थनीति में निम्न प्रणालियों या व्यवस्थाओं को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिसमें से कुछ उचित हैं, तो कुछ अनुचित भी- 1. वैश्वीकरण (Globalization), 2. निजीकरण (Privatisation), 3. उदारीकरण (Liberalisation), 4. विदेशी कम्पनियों को बढ़ावा (Promotion of Multinational Companies), 5. यान्त्रिकीकरण एवं स्वचालीकरण (Machanisation & Automation), 6. शस्त्रीकरण (Armament), 7. तकनीकी विकास (Technological Development), 8. सुविधा एवं विलासिता (Comforts & Luxuries), 9. उपभोक्तावाद (Consumerism), 10. संरचनात्मक विकास (Infrastructural Development), 11. बृहद्स्तरीय उद्योग (Large Scale Industries), 12. आयात-निर्यात (Foreign Trade), 13. महानगरीय व्यवस्था (Metropolitan City's System)।

इस प्रकार, एक सामान्य व्यक्ति इस अर्थनीति से आकर्षित होकर आर्थिक चक्रव्यूह में फँस जाता है। भले ही इस अर्थनीति का सपना प्रियकर, चित्ताकर्षक और मनोज्ञ है, फिर भी जैनदृष्टि के आधार पर इसे हितकर नहीं कहा जा सकता। इच्छाओं की असीमता और संसाधनों की सीमितता के फलस्वरूप अनेक विसंगतियाँ पैदा हो जाती हैं। उत्तराध्ययनसूत्र में इसीलिए कहा गया है-

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि, इच्छा उ आगास समा अणन्तिया।।[34]

कदाचित् कैलास के समान सोने एवं चाँदी के असंख्य पर्वत प्राप्त हो जाएँ, फिर भी

लोभी पुरुष को उनसे तृप्ति नहीं होती, क्योंकि इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं।

संदर्भ सूचीः-

1. भारतीय जीवनमूल्य, डॉ. सुरेन्द्र वर्मा, पृ. 127
2. डॉ. सागरमल जैन अभिनन्दनग्रन्थ, पृष्ठ 188
3. दशवैकालिकनिर्युक्ति, 262-264
4. डॉ. सागरमल जैन अभिनन्दनग्रन्थ, पृष्ठ 188
5. प्राकृतसूक्तिसरोज, 11.7 (डॉ. सागरमल जैन अभिनन्दनग्रन्थ, पृष्ठ 188 से उद्धृत)
6. व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र, 20.8
7. आवश्यकमलयगिरि (प्रथमखण्ड) (अभिधानराजेन्द्रकोष, 1.511 से उद्धृत)
8. अट्ठुप्पत्ती ववहारो- निशीथचूर्णि, 6397
9. प्रश्नव्याकरणसूत्र, 5.4,पृष्ठ 148
10. बृहत्कल्पभाष्य, 1.388
11. निमित्ते, अत्थसत्थे अ- नन्दीसूत्र, 50, पृष्ठ 95
12. अत्थसत्थे मई विसारए- अंगसुत्ताणि, खण्ड 3, पृष्ठ 4
13. ईस-अत्थसत्थ रहचरियसिक्खाकुसले।-आयरिउ संघदासगणि वसुदेवहिण्डी, 1.36, (प्राचीन जैन साहित्य में आर्थिक जीवन, डॉ. कमल जैन, पृष्ठ 9 से उद्धृत)
14. अत्थसत्थ कुसले- जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, 3.66, पृष्ठ 117
15. प्राचीन जैन साहित्य में आर्थिक जीवन, डॉ. कमल जैन, पृष्ठ 9
16. भरतायार्थशास्त्रं च, भरतं च ससंग्रहम्।
    अध्यायैरतिविस्तीर्णैः, स्फुटीकृत्य जगौ गुरुः।।-आदिपुराण, 16.119
17. आणंदे कामदेवे य, गाहावइ चुलणीपिया।
    सुरादेवे चुल्लसयाए, गाहावइ कुंडकोलिए।
    सद्दालपुत्ते महासयए, नंदिणीपिया सालिही पिया।-उपासकदशांगसूत्र, 1.2
18. उत्तराध्ययनसूत्र : दार्शनिक परिशीलन, साध्वी डॉ. विनीतप्रज्ञाश्री, पृष्ठ 550
19. (क) समराइच्चकहा, हरिभद्रसूरि, 246
    (ख) धम्मत्थो कामोवि होहिइ अत्थासो सेसपि- कुवलयमाला कहा, पृष्ठ 57
    (ग) जस्सत्थो तस्स सुहं..जस्स अहिंसा समुदिट्ठा।- पउमचरियं, 35.66-67
    (घ) अभिसेयदाम- कल्पसूत्र, सूत्र 5 (प्राचीन जैन साहित्य में आर्थिक जीवन, डॉ. कमल जैन, पृष्ठ 9, 11 से उद्धृत)
20. महावीर का अर्थशास्त्र, आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. 17
21. कहीं रुको कभी रुको, आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरि, पृ. 5
22. प्रो. बी.एल. जैन से चर्चा के आधार पर

23. वही
24. महावीर का अर्थशास्त्र, आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. 33
25. वही, पृ. 18
26. प्रो. बी.एल. जैन से चर्चा के आधार पर
27. वही
28. महावीर का अर्थशास्त्र, आचार्य महाप्रज्ञ, पृ. 82
29. Oragnization & Management, R.D. Agrawal. p. 428
30. do, p. 427
31. do, p. 427
32. do, p. 427
33. Oragnization & Management, R.D. Agrawal, p. 444
34. उत्तराध्ययनसूत्र, 9.48

-'जीवन-प्रबन्धन के तत्त्व' पुस्तक से संकलित

नारी सुरक्षा

श्रीमती पुष्पा मेहता

आजकल लड़कियों को अपने काम के लिए अपने शहर से बाहर भी रहना होता है, जहाँ उनका रक्षक दूसरा कोई न होकर वे स्वयं होती हैं। अपनी सुरक्षा के लिए वे पाश्चात्य परिधानों का अनुसरण न करके भारतीय परिधान अपनाएँ। इससे काफी हद तक वे अपने को सुरक्षित रख सकेंगी। स्वयं की सुरक्षा के लिए अपनी भावनाओं को, अपने विचारों को, अपनी जीवन शैली को मर्यादित एवं संयमित रखना चाहिए, क्योंकि हमारा देश पुरुष प्रधान देश है। पुरुष सभी तरह से स्वतन्त्र है, परन्तु नारी के लिए यह सब संभव नहीं। नारी को स्वयं मज़बूत बनना होगा, अपने आपको सुरक्षित रखना होगा। कामुक वस्त्र भावनाओं को भड़काते हैं, उत्तेजना पैदा करते हैं। अतः शील की रक्षा के लिए कुलीन वेशभूषा अपनाएँ, अंग प्रदर्शन न करें, अत्याचार का खुलकर मुकाबला करें, अपराधियों से डरें नहीं, क्योंकि डरने वाला सारे जीवन डर-डर कर मरता रहता है। हमें अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठानी होगी।

पुरुष वर्ग से भी यह अपेक्षा की जाती है वह परस्त्री का त्याग करे, वासनाओं पर नियन्त्रण रखे, नशे का त्याग करे, खान-पान शुद्ध रखे। परायी स्त्री को माँ, बहन, बेटी के रूप में देखना भी इसका उपाय है।

-अध्यक्ष : रूपा सती जैन महिला मण्डल, पीपाड़सिटी, जिला-जोधपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (9)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।**-सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(उन्नीसवाँ अध्ययन-मृगापुत्रीय (2))

दारुण केशलोच का करना, पाप कर्म से डरना,
सुख भोगो सुकुमार अभी तुम, काहे दुःख में पड़ना,
पात्र नहीं साधु-जीवन का, घर का धर्म निभालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।212।।

विराम नहीं साधु जीवन में, भार गुणों का बोझिल,
निज बाहों से सागर तिरना, पुत्र! बड़ा है मुश्किल,
दुर्गम संयमव्रत पालन, दुविधा में मत डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।213।।

संयम नीरस होता जैसे, बालू रेत को चखना,
तप भी दुष्कर होता जैसे, असिधार पर चलना,
मानो लोह के चने चबाना, दिल में बात धरालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।214।।

सर्प की भांति निश्चल दृष्टि, रखना बड़ा कठिन है,
अविचल मोक्ष साध्य की दृष्टि, होती बड़ी गहन है,
भटक न जाओ इन राहों में, मेरी बात न टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।215।।

यौवन में साधु जीवन का, पालन होता दुष्कर,
जैसे जलती आग को लेना, अपने मुख के अन्दर,

संयम की दुष्करता जानो, सुख में आज नहालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।216।।

जैसे कठिन हवा से भरना, होता वस्त्र का बसना,
कठिन बड़ा संयम के पथ पर, कायर का है चलना,
सत्त्वहीन के लिए कठिन है, निर्मम भाव छुड़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।217।।

निर्भय निश्चय श्रमण धर्म का, पालन होता दुर्भर,
मानो मेरु भार तोलना, एक तराजू रखकर,
संयम सागर पार विकट है, इसका बोध करा लो।
जीवन धन्य बनालो.....।।218।।

सुनो पुत्र अब सीख हमारी, मन में इसे विचारो,
घर में भोग भोगकर के तुम, फिर संयम को धारो,
इस वय में दुष्कर है संयम, इस पर भार न डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।219।।

मात-पिता जो कहा आपने, सही जगत में लगता,
प्यास बुझी भोगों की जिसकी, निस्पृह हो जो रहता,
कुछ भी नहीं है दुष्कर उसको, अपना मन समझालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।220।।

विस्तृत बातें कही आपने, श्रमण धर्म पालन में,
अनन्त गुणी झेली है पीड़ा, चहुँगति के आंगन में,
जन्म-मरण के दारुण दुःख थे, उनको याद करालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।221।।

उष्ण-शीत नरक के वेदन, सहे अनन्ती बारी,
नरक कुम्भी में मुझे पकाया, दारूण दुर्व्यवहारी,
तप्त हुई बालू से मुझको, अब तो मात! बचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।222।।

नरक कुम्भी में बांधा मुझको, ऊपर लटका करके,
दीन-हीन हो चिल्लाता था, आरे से मैं कटके,
तीव्र वेदन कांटों की थी, उनके घाव भरालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।223।।

अशुभ कर्मवश पेरा जाता, इक्षु रस की भांति,
परमाधामी पटक-पटक कर, करते थे उत्पाती,
छेदन-भेदन हुआ निरन्तर, अब तो मुझे छुड़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।224।।

युग! कीलक से युक्त लोह के, जलते रथ में जोता,
हांका था चाबुक रस्सी से, मुझको शूल चुभोता,
मुझे पकाया भैंसे के सम, परवशता से निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।225।।

वैक्रिय रूप में पक्षी आये, बल से मुझको नोंचा,
प्यास बुझाने चला वैतरणी, घबराकर जब सोचा,
जल धारा ने काटा मुझको, अब तो प्यास बुझालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।226।।

तीक्ष्ण धार की छुरियों से थी, चमड़ी मेरी उतारी,
मृग की भांति कूट जाल में, बन्धन था दुःखकारी,
विवश फंसा मैं मत्स्य जाल में, अब ना फंदा डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।227।।

बाज पक्षी ने पकड़ा मुझको, लेपों से चिपकाया,
कुल्हाड़ी से पेड़ की भांति, बार-बार कटवाया,
पीटा गया लोह की भांति, घावों को सहलालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।228।।

लोहा-सीसा पिघला करके, मुझको खूब पिलाया,
मेरे तन का मांस मुझे ही, बार-बार खिलवाया,
जलती चर्बी, रुधिर पिलाया, गर्हित कृत्य रुकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।229।।

नरकादिक दुर्गति की मैंने, सही वेदना कितनी,
रोम-रोम कंपित हो उठता, व्यथा कहूँ क्या अपनी,
इक पल चैन न पाया मैंने, दुर्गति को अब टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।230।।

इस भव से भी अनन्त वेदना, नरक गति में लगती,
कुछ भी सुख ना देखा माते! कर्म गति ना हरती,

शेष रहे कर्मों को काटूँ, मुक्ति पथ में चालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।231।।

बेटे की बातें सुनकर के, बोल पड़ी तब माता,
भले प्रव्रजित हो जाओ तुम, जिसमें लगती साता,
होता नहीं उपचार मुनि का, इसकी सोच जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।232।।

प्रश्न ठीक पर माते सुनलो, समाधान क्या कहता?
वन में पीड़ित मृग-पक्षी की, कौन चिकित्सा करता?
विचरण करता हिरण अकेला, एकल भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।233।।

जब होता मृग रोगी वन में, कौन औषधि देता?
खाना-पीना कौन है देता, कौन सुधि है लेता?
रोग-मुक्त हो चरने जाता, मृगचर्या अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।234।।

अपना करके मृगचर्या मुनि, पदचारी वन विचरे,
भिक्षा ले वे कई घरों से, निन्दा के स्वर ना उभरे,
नियताचारी नहीं हो भिक्षु, मुक्ति मार्ग सम्भालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।235।।

मृगचर्या से विचरूँगा माँ! तजता हूँ उपधि को,
जिनमें सुख हो करो पुत्र अब, पाओ संबोधि को,
मात-पिता की अनुमति पाकर, भिक्षु धर्म निभालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।236।।

नानाविधि से मात-पिता को, बेटे ने समझाया,
तोड़ चला ममता का बन्धन, पा आज्ञा हर्षाया,
जैसे नाग केंचुली छोड़े, जग का बन्ध छुड़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।237।।

रज को झाड़े वस्त्र से जैसे, छोड़ दिया परिजन को,
निकल पड़ा संयम के पथ पर, तोड़ सभी अड़चन को,
हुआ प्रव्रजित मृगा-पुत्र फिर, संयम स्वाद चखालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।238।।

पंच महाव्रत समिति-गुप्ति, तप से था अभिसंगी,
अहंकार -ममकार रहित हो, बन गया वो निःसंगी,
समभावी था सब जीवों पर, समता रंग रंगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।239।।

लाभ-अलाभ, अरु सुख-दुःख में, जीवन और मरण में,
मान और अपमान सभी में, सम था अन्तःकरण में,
निन्दा और प्रशंसा में सम, ऐसे भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।240।।

गौरव कषाय-दण्ड-शल्य-भय, हास्य-शोक से निवृत्त,
कांक्षा नहीं प्रतिष्ठा यश की, बन्ध-निदान से वंचित,
लौकिक सुख की नहीं कामना, कर्म काट अब डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।241।।

निरोध किया आस्रव द्वारों का, लीन हुआ आतम में,
रत्नत्रयी से भावित था वो, श्रमण-धर्म पालन में,
अनशन करके एक मास का, सिद्धि का पद पालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।242।।

जैसे निवृत्त हुए भोग से, मृगापुत्र से ऋषिवर,
वैसे ही निवृत्त होते हैं, ज्ञानी और मुनीश्वर,
चरित श्रवण कर मृगापुत्र का, धर्म धुरा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।243।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

आगमवाणी का शेषांश

मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, उस पर श्रद्धा एवं संयम में पराक्रम। यहाँ पर मनुष्य जन्म एवं सम्बोधि (धर्मश्रवण+श्रद्धा) को दुर्लभ बताया गया है। आचार्य शीलाङ्क का अर्थ स्वीकार करें तो संयम में, पराक्रम भी सम्बोधि का ही स्वरूप प्रकट करता है। मनुष्य अपनी आदतों में इतना जकड़ा हुआ है कि वह अपनी सोच में बदलाव लाने को भी तत्पर नहीं है। उसके लिए दुःखमुक्ति सम्भव नहीं है। सम्बोधिपूर्वक ही दुःखमुक्त हुआ जा सकता है। इस सम्बोधि में अनित्यता, अशरणता, एकत्व आदि भावनाएँ भी सहायक हैं।**-सम्पादक**

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः93)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा- तेरहवें भव का स्थान किन-किन जीवों के लिए वर्णित है?

समाधान- तेरहवें भव के स्थान में पाँच स्थावर एवं तीन विकलेन्द्रिय जीवों की आगति का वर्णन किया गया है। इस स्थान को मोटे रूप में तीन भागों में बांटा गया हैं- 1. पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय के घरों में आते हैं। 2. तीन विकलेन्द्रिय, पाँच स्थावर के घरों में आते हैं। 3. तीन विकलेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय के घरों में आते हैं।

जिज्ञासा- उक्त तीन भेदों वाले जीव किन-किन गमों से कितने-कितने भव करते हैं?

समाधान- पाँच स्थावर के जीवों में जिस प्रकार बतलाया गया था, उसी प्रकार यहाँ भी समझना चाहिए कि 1,2,4,5 इन चार गमों से आने वाले उक्त तीन भेदों वाले जीव भी जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट संख्यात भव कर सकते हैं। शेष बचे 3,6,7, 8,9वें गमे से आने वाले ये जीव जघन्य 2, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकते हैं। अर्थात् जिन दो घरों की अपेक्षा जिस जीव के भव करने की बात कही जा रही है, उन्हीं दो घरों में उक्त 5 गमों से उत्कृष्ट 8 भव ही हो सकते हैं, उससे अधिक नहीं। किन्तु वही जीव दूसरे घरों में पुनःपुनः 8 भव उत्कृष्ट कर सकता है।

जिज्ञासा- तीन विकलेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय के रूप में उत्कृष्ट संख्यात काल तक लगातार रह सकता है, संख्यात काल से क्या ग्रहण करना चाहिए?

समाधान- इस तेरहवें भवस्थान में वर्णित तीनों भेदों वाले जीव लगातार संख्यात काल तक रह सकते हैं। संख्यात काल से तात्पर्य उस जीव के आठ भवों की उत्कृष्ट में होने वाली स्थिति के बराबर समझना चाहिए। अर्थात् जिस जीव की एक भव की जितनी उत्कृष्ट स्थिति है, उसे आठ से गुणा करने पर जितनी स्थिति आती है, उतनी उस जीव की उत्कृष्ट कायस्थिति समझनी चाहिए। जैसे- बेइन्द्रिय का कोई जीव लगातार बेइन्द्रिय के घर में उत्पन्न होता है तो उसकी अधिकतम काय स्थिति 12 वर्ष x 8 भव = 96 वर्ष के बराबर

समझना चाहिए। इन 96 वर्षों में जितने भव हो सकते हैं, उतने संख्यात भव समझना चाहिए।

जिज्ञासा– तेरहवें भव स्थान में वर्णित जीवों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान– तेरहवें भवस्थान में वर्णित जीवों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय के जीव आपस में 9 ही गमों से आ सकते हैं।

2. तीन विकलेन्द्रिय में ऐसे जीव जो पूर्व भव से सास्वादन समकित लेकर आये हैं, उनमें अपर्याप्त अवस्था में थोड़ी देर तक सास्वादन समकित रहती है, ऐसे जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते, इस कारण वे जघन्य गमों से नहीं आते। क्योंकि जघन्य गमों से आने वाले पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय जीव नियमा अपर्याप्त ही काल करते हैं।

3. तीन विकलेन्द्रिय के अपर्याप्त जीवों में सास्वादन समकित मिलने का कारण यह है कि उन्हें पिछले सन्नी मनुष्य-तिर्यंच के भव में उपशम समकित प्राप्त हुई हो, उसके पहले आयु मिथ्यात्व दशा में विकलेन्द्रिय की बांध ली हो। मृत्यु के अन्तर्मुहूर्त पहले उपशम समकित आयी और बाद में 6 आवलिका शेष रहते अनन्तानुबन्धी चौक का उदय हो जाने से वे तिर्यंच-मनुष्य सास्वादन समकित में आ गये। सास्वादन में रहते ही आयु पूर्ण करके मरण को प्राप्त होकर विकलेन्द्रिय के रूप में उत्पन्न हो गये। उत्पन्न होने के बाद जब तक 6 आवलिका की स्थिति पूर्ण नहीं हो जाती, तब तक उन विकलेन्द्रिय जीवों में अपर्याप्त अवस्था में सास्वादन समकित रह सकती है। उसके बाद तो उन्हें मिथ्यात्व में आना ही पड़ता है। यही कारण है कि विकलेन्द्रिय जीवों के अपर्याप्त में 2 ज्ञान तथा 2 अज्ञान के उपयोग एक जीव की अपेक्षा भी माने जाते हैं, अनेक जीवों की अपेक्षा तो होते ही हैं।

4. अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय जीवों की उस भव में अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग की ही होती है। पर्याप्त अवस्था होने पर अपने-अपने भव की उत्कृष्ट अवगाहना मिल सकती है।

5. इस तेरहवें भवस्थान में वर्णित पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय के जीवों में सेवार्त्तक संहनन, हुण्डक संस्थान, व्यवहार भाषा, प्रथम तीन समुद्घात (वायुकाय में वैक्रिय समुद्घात भी हो सकती है) प्रथम तीन लेश्याएँ मिलती

हैं, किन्तु बादर पृथ्वी, पानी, वनस्पति के कतिपय अपर्याप्त जीवों में तेजोलेश्या भी मिल सकती है।

6. ये जीव असन्नी अर्थात् बिना मन वाले होते हैं। इनमें एक नपुंसक वेद ही पाया जाता है। ये बिना माता-पिता के संयोग एवं बिना गर्भ-धारण के ही उत्पन्न हो जाते हैं, इसलिए इन्हें सम्मूर्च्छिम भी कहते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

सम्पादकीय का शेषांश-

श्रावक-समाज के हित में किए गए निर्णयों का पालन श्रावकों के हाथ में है। श्रावकों को भी सजग होना होगा तथा संघ एवं समाज के हित को व्यक्ति-हित एवं निहित स्वार्थों से ऊपर रखना होगा। श्रावकों में ही यह बल है कि वे संत-सतियों के आचार एवं विचार को निर्मल रख सकते हैं। इसीलिए उन्हें संत-सतियों के माता-पिता की संज्ञा दी गई है। समाज में आ रही विभिन्न विकृतियों से समाज को ही हानि होती है। हमारा समाज धर्म-निष्ठ समाज है, अतः धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में उसका प्रभाव दृष्टिगोचर होना चाहिए।

यह शुभ संकेत है कि सम्मेलन में भावी पीढ़ी को भी ध्यान में रखकर संस्कार केन्द्रों की स्थापना के लिए विचार किया गया है। निरन्तर अनावश्यक छप रही पुस्तकों पर भी लगाम लगाई गई है। स्वागत की समययापिनी परम्परा को रोका गया है तथा निमन्त्रण-पत्रिकाओं में सादगी का संचार किया गया है। समाज अभी धर्म-साधना में कम एवं धार्मिक मंचों के माध्यम से अपना नाम रोशन करने में अधिक रुचि ले रहा है, जो धर्म-संघ को उसके लक्ष्य से भटकाता है। टोने-टोटके, मंत्र-तंत्र आदि के प्रयोग तथा अन्य देवी-देवताओं की उपासना जैन धर्म के मूलस्वरूप से मेल नहीं खातीं, अतः उन पर भी रोक लगाना प्रशस्त कदम है। शहरों के साथ गाँव में चातुर्मास करने के निर्णय साध्वाचार के पालन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। मठ एवं समाधियों के निर्माण पर रोक लगाकर स्थानकवासी परम्परा की मूल भावना को पुष्ट किया गया है।

सम्मेलन अत्यन्त सार्थक रहा है, क्योंकि इसमें कतिपय निर्णय संघ एवं समाज को परिष्कार के मार्ग पर आगे बढ़ाने वाले हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन निर्णयों का पालन स्वानुशासन से अथवा संघानुशासन से पूरी तरह हो। इस प्रकार के सम्मेलन छोटे रूप में ही सही पाँच-दस वर्षों में होते रहना चाहिए, ताकि अशुद्धियों का प्रवेश यथासमय रोका जा सके। जयतु इन्दौर-सम्मेलनम्। ★

अध्यात्म

भावना और भेदविज्ञान

डॉ. दिलीप धींग

शब्द-जगत छोटा होता है। अर्थ-जगत उससे कई गुना बड़ा होता है। अर्थ-जगत से भी कई गुना बड़ा होता है भाव-जगत। भावनाओं का कोई ओर-छोर नहीं होता है। भावनाएँ विराट् भी होती हैं और सूक्ष्म भी। वे गहरी भी होती हैं और ऊँची भी। भावना से जुड़कर ही ज्ञान और ज्ञान का आचार हृदयस्पर्शी बनता है। जैन आगमों में भावना का बहुत महत्त्व बताया गया है। आचारांग सूत्र[1] में पाँच महाव्रतों की पच्चीस भावनाएँ बताई गई हैं। तत्वार्थ सूत्र[2] में भी प्रत्येक व्रत की पाँच-पाँच भावनाओं का वर्णन है। व्रत केवल क्रिया तक सीमित नहीं रहे, इसके लिए इन पच्चीस भावनाओं का बहुत महत्त्व है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने महाव्रतों के साथ जुड़ी भावनाओं की चर्चा चारित्र पाहुड में की है। भाव पाहुड में उन्होंने आत्मशुद्धि के लिए, शुद्धात्मा के अनुभव के लिए भाव और भावना का महत्त्व बताया है। आचार्य वट्टकेर ने मूलाचार के नौवें 'अणगार भावनाधिकार' में व्रतों के साथ भावना और सजगता पर बल दिया है। आचार्य जिनसेन ध्यान के लिए चार भावनाओं का महत्त्व बताते हैं - ज्ञान, दर्शन, चारित्र और वैराग्य भावना।[3] इन चार भावनाओं के भी पुन: उपभेद किये गये हैं। तत्त्वार्थसूत्र[4] में तीर्थंकर नाम कर्म के उपार्जन के सोलह कारण या गुण बताये गये हैं। इन कारणों या गुणों को भी 'षोडश कारण भावना' के नाम से जाना जाता है। आचार्य अमितगति ने मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ, इन चार भावनाओं की चर्चा की है। मैंने एक चतुष्पदी में लिखा -

भावों से उत्थान-पतन है।
भावों से व्यवहार-वचन है।
वातावरण प्रभावित होता,
भावों से बनता जीवन है।[5]

अलग-अलग ग्रंथों में विविध सन्दर्भों के साथ विभिन्न अर्थों में 'भावना' शब्द प्रयुक्त हुआ है। भावना शब्द-प्रयोग में एक बात की सर्वत्र समानता दिखाई पड़ती है और वह है, जो कुछ करना उसे पूरे मनोयोग से करना, आत्मा के स्पर्श के साथ करना तथा अनासक्त होकर करना। ऐसा होने पर आत्मा अशुभ भाव से शुभ भाव में आएगा और शुभ भाव से

शुद्ध भाव को पाएगा। आत्मस्पर्शी चिन्तन ही भावना बन पाता है। इसीलिए बारह अनुप्रेक्षाओं को बारह भावनाएँ भी कहा जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने 'द्वादशानुप्रेक्षा' में इन बारह भावनाओं की चर्चा की है। सभी भावनाओं का परम उद्देश्य आत्मा और अनात्मा की भिन्नता को जानना और महसूस करना है। समयसार में कुन्दकुन्दाचार्य का मुख्य सन्देश है कि साधक भेदविज्ञान को जाने और अपने शुद्ध आत्मभाव को प्रकट करे। इसी दृष्टि से समयसार में बार-बार आत्मभाव में रमण करने की प्रेरणा दी गई है। समयसार में कहा गया है -

को णाम भणिज्ज बुहो णादुं सव्वे पराइये भावे।
मज्झमिणं ति य वयणं जाणंतो अप्पयं सुद्धं।[6]

पर पदार्थों को पर एवं निज शुद्ध आत्मा को निज जानता हुआ ऐसा कौन ज्ञानी पुरुष होगा, जो पर पदार्थों को 'यह मेरा है' ऐसा कहेगा? पर को पर एवं निज को निज कहने को अन्यत्व भावना कहते हैं। भेदविज्ञान में भावना का बहुत महत्व है। अन्यत्व अनुप्रेक्षा (भावना) करते हुए जीव भेदविज्ञान को समझता है। स्वामीकुमार कहते हैं -

जो जाणिऊण देहं जीव-सरूवादु तच्चदो भिण्णं।
अप्पाणं पि य सेवदि कज्जकरं तस्स अण्णत्तं।[7]

जो आत्मस्वरूप से शरीर को यथार्थ में भिन्न जानकर अपनी आत्मा का ही ध्यान करता है, उसकी अन्यत्व अनुप्रेक्षा कार्यकारी है। शरीर और आत्मा के भिन्नत्व-विचार को अन्यत्व अनुप्रेक्षा कहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ[8] कहते हैं, जब यह अवस्था घटित होती है, तब चिन्तन की धारा बदल जाती है। चिन्तन की मूढ़ अवस्था में परिवर्तन आ जाता है। जब साधक कहता है, 'मैं शरीर नहीं हूँ', तब इससे चिन्तन का स्रोत निकलता है, जिसे हम अन्यत्व अनुप्रेक्षा कहते हैं। 'मैं शरीर से भिन्न हूँ' इस भावना से मूर्च्छा पर तीव्र प्रहार होता है और मोह का किला ढह जाता है। क्योंकि मोह का उद्गम स्थल शरीर है। आदमी शरीर को ही सबकुछ मानकर कार्य करता है। जब मोह टूट जाता है तो अनादिकालीन भ्रम की दीवार खण्ड-खण्ड हो जाती है। तब यह बोध प्रकट होता है कि मैं शरीर नहीं हूँ और शरीर मेरा नहीं है। यह बोध ही भेदविज्ञान है।

अन्यत्व भावना के अलावा अनित्य, अशरण, एकत्व, अशुचि, आश्रव, संवर, निर्जरा आदि भावनाएँ भी भेदविज्ञान का ज्ञान कराने में सहायक होती हैं। शरीर और परभावों की अनित्यता या क्षणिकता की तुलना में आत्मा और आत्मभाव नितान्त भिन्न होते हैं। इसलिए देह की अनित्यता का बोध भी भेदविज्ञान जागृत करता है। देह अपवित्र है,

उसमें राग करने जैसा कुछ नहीं है, यह अशुचि भावना है। एकमात्र अपना आत्मा ही सच्चा शरण है। इसके अलावा सभी शरण अस्थायी और दु:खदायी हैं। इसी अशरण भावना का गहराई से स्पर्श करके अनाथी मुनि विरक्त हो गये थे।[9] यह अशरण भावना भी भेदविज्ञान के लिए बहुत हितकारी है। एकत्व भावना का स्वरूप बताते हुए कहा गया है -

एगो मे सासओ अप्पा, णाणदंसणलक्खणो।

सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा।[10]

ज्ञान दर्शन स्वरूप आत्मा शाश्वत है। यही मैं हूँ। शेष सांयोगिक पदार्थ मेरे से भिन्न हैं। उनके साथ मेरा संयोगसम्बन्ध मात्र है। वे 'मैं' नहीं हूँ, वे मेरे नहीं हैं। भेदविज्ञान संयोग की इस परम्परा को तोड़ देता है। अन्यत्व भावना देह और आत्मा की भिन्नता दर्शाती है और एकत्व भावना एक आत्मा और आत्मभाव में ही एकत्व बुद्धि से लीन हो जाने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार भावशक्ति से भेदविज्ञान की आराधना करता हुआ साधक सम्यग्दृष्टि से सम्पन्न हो जाता है। समयसार में कहा गया है -

अप्पाणमयाणंतो अणप्पयं चावि सो अयाणंतो।

किह होदि सम्मदिट्ठी जीवाजीवे अयाणंतो।[11]

जो आत्मा को नहीं जानता है और अनात्मा को नहीं जानता है, जीव को नहीं जानता है और अजीव को नहीं जानता है, वह सम्यग्दृष्टि कैसे बन पायेगा? अर्थात् आत्मा और अनात्मा के भेदज्ञान को नहीं जानने वाला, भेदविज्ञान को नहीं समझने वाला सम्यग्दृष्टि से सम्पन्न नहीं बन सकता है। समयसार नाटक में ऐसे ही सम्यग्दृष्टि को नमन किया गया है, जिनके घट (हृदय) में भेदविज्ञान का जागरण हुआ है-

भेदविज्ञान जग्यौ जिन्हके घट, सीतल चित्त भयौ जिम चन्दन।
केलि करैं सिव मारग मैं, जग मांहि जिनेसर के लघु नंदन।
सत्यरूप सदा जिन्हकै, प्रगट्यौ अवदात मिथ्यात-निकंदन।
सांतदसा तिन्हकी महिचानी, करै कर जोरि बनारसि वंदन।[12]

जिनके हृदय में भेदविज्ञान प्रकट हुआ है, उनका चित्त चन्दन के समान शीतल है। वे कषायों से तपे हुए नहीं हैं। आत्म-कल्याण के मार्ग में आनन्द करने वाले भेदविज्ञानी जिनेश्वर परमात्मा के लघु नन्दन हैं। भेदविज्ञान के सुफल के रूप में उनका चिरकाल का मिथ्यात्व नष्ट हुआ है और उन्हें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई है। अत: वे शीघ्र ही अरिहन्त पद को प्राप्त करेंगे। भेदविज्ञान को प्रकट करके सम्यग्दृष्टि हुए ऐसे जीवों को कवि बनारसीदास हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं।

सन्दर्भ :

1. आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, 15 वाँ भावना अध्ययन। देखें, युवाचार्य मधुकरमुनि संपादित आचारांग सूत्र, द्वितीय श्रुतस्कंध, पृष्ठ 360
2. (क) तत्स्थैर्यार्थं भावना: पंच पंच - तत्वार्थ सूत्र, 7/3,

   (ख) पद्मभूषण पं. सुखलालजी द्वारा सम्पादित तत्वार्थ सूत्र पृष्ठांक 168-170
3. उपाध्ये, आदिनाथ नेमीनाथ (डॉ.), कार्तिकेयानुप्रेक्षा की अंग्रेजी में प्रस्तावना, पृष्ठ 39
4. (क) तत्वार्थ सूत्र 6/23. देखें, पं. खूबचन्द्र द्वारा अनूदित सभाष्यतत्वार्थाधिगमसूत्रम्, पृष्ठ 315-316.

   (ख) श्वेताम्बर ग्रंथों में तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन के बीस बोल (कारण) बताये गये हैं।

   (ग) आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास (संक्षिप्त), पृष्ठ 40
5. जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई से 2014 में प्रकाशित पुस्तिका 'भाव-प्रतिक्रमण', पृष्ठ अन्तिम।
6. समयसार, गाथा 300
7. स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा 82
8. महाप्रज्ञ (आचार्य), अमूर्त का चिन्तन, पृष्ठ 47 (तुलसी अध्यात्म नीडम् से प्रकाशित)
9. उत्तराध्ययन सूत्र, बीसवाँ 'महानिर्ग्रन्थीय' अध्ययन
10. समणसुत्तं, गाथा क्रमांक 516
11. समयसार चयनिका में गाथा क्रमांक 104. (डॉ. कमलचन्द सोगानी द्वारा संपादित)
12. समयसार नाटक, मंगलाचरण, 6

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

नई पीढ़ी को दबाएं नहीं, निर्णय की आजादी भी दें

घर के बड़ों को चाहिए कि जब वे अपने व्यवसाय में घर के बच्चों को उतारें तो उन्हें सिर्फ अपने अनुभव का सहारा दें, लेकिन हर बात पर उन्हें अपने फैसलों से बाँधना ठीक नहीं। युवा विचारों का भी सम्मान हो, उसे भी कुछ निर्णय लेने की स्वतंत्रता दें। बड़े अपने निर्णय छोटों पर थोप देते हैं। कई बड़े परिवारों में दुराव सिर्फ इसी कारण हो रहा है।

अगर अपने पारिवारिक व्यवसाय में आप छोटों को प्रवेश देते हैं तो उन्हें केवल दैहिक रूप में ही प्रवेश न दें। उनके साथ आने वाले नवाचार, नए विचार और योजनाओं का भी स्वागत करें। सिर्फ अनुभव ही सबकुछ नहीं होता, कई बार अतार्किक लगने वाली बात भी बहुत अच्छा परिणाम दे सकती है। *-डॉ. पुष्पेन्द्रमुनि*

संस्कार

ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण ही होना चाहिए

आचार्य श्री विजय रत्नसुन्दरसूरिजी म.

भोजन का लक्ष्य,
क्षुधाशान्ति।
पानी पीने का लक्ष्य,
तृषाशान्ति।
दवासेवन का लक्ष्य,
रोगशान्ति।
बातचीत-चर्चा का लक्ष्य,
कलहशान्ति।
व्यापार का लक्ष्य,
फायदे की प्राप्ति।
संबंधों का लक्ष्य,
प्रेम और आश्वासन की अनुभूति।
पर...ज्ञान का लक्ष्य?
चरित्र का निर्माण।
चरित्र का निर्माण किसे कहा जाता है?
अलग-अलग दृष्टिकोण से इसके
अलग-अलग उत्तर दिये जा सकते हैं,
पर चरित्र निर्माण की सरलता से सहज समझ में
आ जाए ऐसी व्याख्या करनी हो तो
यह कह सकते हैं कि,
अंधेरे में स्वयं के सामने और उजाले में
शिष्टपुरुषों के सामने लेशमात्र
अपराध भाव के बिना
प्रसन्नतापूर्वक बहादुरी से खड़े रह सकें
ऐसी जीवनपद्धति का नाम है चरित्र।

इस व्याख्या के आधार पर हमें आत्मनिरीक्षण
करने की आवश्यकता है।
ऐसा निंद्य आचरण-जिसकी भले ही
किसी को जानकारी न हो- हमारे जीवन में नहीं है ना
जो अंतःकरण की अदालत में खुद को अपराधी
साबित करता हो?
ऐसा कोई निंद्य आचरण हमारे जीवन में तो नहीं है ना
कि जो शिष्टपुरुषों की नज़रों में गिरा देता हो?
खुद के पास सम्यक् समझ होने का यदि
हमारा दावा है, हमारे पास जो भी समझ है
उसे यदि हम 'ज्ञान' मान बैठे हैं तो
चरित्रनिर्माण का लक्ष्य,
उसकी यह कसौटी है।
मेरे ज्ञान से मुझे सामने वाले को
प्रभावित नहीं करना है बल्कि
स्वयं को प्रक्षालित करना है।
मेरे ज्ञान से मुझे मात्र संपत्ति अर्जित नहीं करते रहना है,
सद्गुणों को विकसित करते रहना है।
मेरे ज्ञान से मुझे अहंकार के आसमान में
उड़ते नहीं रहना है, बल्कि
नम्रता के मानसरोवर में डुबकियाँ लगाते रहना है।
किसी अज्ञात शायर ने अपनी पंक्तियों के
माध्यम से ईश्वर से बहुत सुन्दर प्रार्थना की है-
''नहीं मेरी कोई याचना कि पहुँचा दो मंजिल पर,
केवल यह विश्वास दिला दो कि
मैं सही दिशा में हूँ।''
''चरित्र निर्माण, यही मेरा लक्ष्य है''
हृदय के कोने-कोने में यह ध्वनि गूंजायमान कर दें।

-'शिक्षा के दूध में संस्कार की शक्कर' पुस्तक से साभार

युवा-स्तम्भ

शासन के अनुशासन को सहज करें स्वीकार

प्राणिमित्र श्री नितेश नागौता जैन

चाहे क्षेत्र हो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या राजनैतिक, हर क्षेत्र में अनुशासन बेहद जरूरी है। एक बच्चा जो विद्यालय में जाता है उसे भी अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है और वह भी पूर्ण अनुशासित होकर विद्यार्जन करता है। पुलिस में कार्यरत पुलिस के जवान भी पूर्ण अनुशासित होकर अपने नीति-नियमों का पालन करते हैं। सड़क पर वाहन चलाने वाले वाहन चालक को भी सड़क यातायात नियमों का पालन करना होता है। सार सिद्धांत यही है कि अनुशासन जीवन को सुन्दर एवं व्यवस्थित बनाने के लिए आवश्यक है। इसीलिए ज्ञानी गुरु भगवंत बार-बार यही फरमाते हैं कि-

व्यवस्थाओं को लागू करता है शासन, जीवन के लिए जरूरी है राशन।
यदि जीवन का करना है सर्वांगीण विकास, तो बेहद जरूरी है आत्मानुशासन।।

अर्थात् जीवन के सर्वांगीण विकास व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अनुशासन प्रथम आवश्यकता है। इसलिए कहा गया- ''निज पर शासन, फिर अनुशासन।''

यदि हम हमारे जीवन व्यवहारों का निरीक्षण करें तो हमें पता चलता है कि सवेरे से शाम तक, शाम से रात तक, बचपन से यौवन तक, यौवन से वृद्धावस्था व जन्म से मृत्यु तक हम हर व्यवस्था व परिस्थिति में किसी न किसी प्रकार के अनुशासन को स्वीकार करते हैं और जब कहीं अनुशासनहीनता करते हैं तो वहीं हमें मुँह की खानी पड़ती है। इसी सारे व्यवहार और चरित्र को देखकर अनन्त उपकारी पूज्य गुरु भगवंत भी बार-बार हमें यही प्रतिबोध देते हैं कि हम भी ''शासन के अनुशासन'' को स्वीकार करें। अर्थात् धर्म-साधना करते हुए अपनी मनमानी करना, अपनी अनुकूलता-प्रतिकूलता के लिए धर्म-सिद्धांतों को तोड़-मरोड़कर रख देना भी जिनशासन में अनुशासनहीनता का उदाहरण है।

ज्ञानी गुरुभगवंत यही फरमाते हैं कि यदि हम व्यावहारिक जीवन में अनुशासन को पसंद करते हैं और उसके सम्मान का पालन करते हैं तो आध्यात्मिक क्षेत्र में भी हमारी इसी तरह जागृति रहनी चाहिए।

आज स्थिति विपरीत है, क्योंकि हमारा ध्यान व्यवहार की ओर अधिक व धर्म के प्रति कम है। इसीलिए यदि हम दुकान 9 बजे खोलते हैं और ग्राहक यदि 8 बजे आ जाए तो, उसका सम्मान करते हुए 9 की जगह 8 बजे ही दुकान खोल देते हैं। किन्तु यदि पूज्य गुरु

भगवंत फरमा दें कि 9 की जगह 8 बजे धर्मस्थान में आकर दो सामायिक कीजिए तो हम विचारावस्था में पहुँच जाते हैं। सोचिए, क्या हमने शासन के अनुशासन को स्वीकार किया? किसी बगीचे व दर्शनीय स्थान पर सूचना पट्ट लगा है कि यहाँ टेका लेना व सहारा लेकर बैठना सख्त मना है, यदि कोई आज्ञा का उल्लंघन करेगा तो 1000 रुपये का दण्ड है, तो सोचिये क्या हम वहाँ अनुशासन का ध्यान नहीं रखेंगे? वहाँ अनुशासन का पालन हम कर्तव्य समझेंगे तथा पूर्ण जागृति से अनुशासन का पालन करेंगे। किन्तु सामायिक-प्रतिक्रमण व धर्मसाधना करते समय क्या जागृति व अनुशासन में रहने का विचार हम बना पाते हैं? सामायिक में हाथ-पैर फैलाकर, सहारा लेकर बैठना, मानो हमारे लिए आज जरूरी बन गया है। इसलिए आज धर्म-सिद्धांतों में जगह-जगह गलियाँ नज़र आने लगी हैं जो कि एक पीड़ादायक विडम्बना है।

हम यही सोचते हैं कि- 'पैसो लगे न टक्को, ढूँढियो धर्म पक्को, श्रावक धर्म सोना रो रूप, जितणो चाहो रक्खो' अर्थात् श्रावक आगार धर्म होने का यह मतलब नहीं है कि हर जगह आगार का लाभ उठा लिया जाए और धर्म-सिद्धान्तों को मनमाना रूप दे दिया जाए। हर क्षेत्र में अनुशासन, एकरूपता व सैद्धान्तिक बातों को पसंद करने वाले हम साधकों को यही पसंद धार्मिक क्षेत्र में भी रखनी चाहिए। अर्थात् सदैव मन में यही भावना रहनी चाहिए कि-

जिनशासन के नीति-नियमों को, सदा सहज स्वीकार करें।
जीवन के हर रूप रंग में, धर्म-ध्यान से प्यार करें।
शासन रक्षा, धर्मदृढ़ता का, घर-घर में प्रचार करें।
शासन के अनुशासन को, दृढ़ता से स्वीकार करें।।

अर्थात् पूज्य गुरु भगवंतों के प्रवचन चिंतन-कण व जिनवाणी सुनने एवं शास्त्र, धार्मिक पुस्तकें पढ़ने और धर्मचर्चा-विमर्श एवं सभाएँ करने का एक मात्र सार यही है कि हम अपने मन-वचन-काया को नियंत्रित करने वाले पाप भीरू, विवेकवान व कथनी-करनी में एकरूपता वाले शासन गौरव अनुशासित साधक बनें। क्योंकि आज क्रिया व आचरणनिष्ठ साधकों का अभाव है और धर्मनिष्ठ, आचरणनिष्ठ, ज्ञानवान साधक ही जिनशासन की शान हैं।

साधु-साध्वी वर्ग अपने व्रत-नियमों, महाव्रतों का निर्दोष रीति से पालन करें, उनके संयम के प्रति जागृति व पैनी नज़र रहे आदि विचार प्रायः सभी श्रावक-श्राविकाओं के रहते हैं, किन्तु स्वयं के श्रावकत्व को आदर्श प्रेरणादायी बनाने के लिए हम क्या कर पा रहे हैं? यह चिंतन भी आज श्रावक समाज के लिए बेहद जरूरी है। वस्तुतः संघ समाज के प्रत्येक श्रावक-श्राविका का यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि वे भी अपने आचार-विचार व्यवहार में पूर्ण सजगता, सावधानी और ईमानदारी बरतें व स्वयं जागृत रहकर कथनी-करनी की

एकरूपता धारक आदर्श श्रमणोपासक बनें।

ट्रेन के लिए जल्दी पहुँचते हैं, स्कूल/सिनेमा/बस लाइन में व्यवस्थित बैठते हैं, परीक्षा देना है अवश्य देते हैं, हर वर्ष कक्षा आगे बढ़ते हैं। नियमों, उपनियमों की जानकारी रखते हैं। ठीक इसी प्रकार साधक जीवन में अपनी आत्मिक सजगता व सावधानी के लिए ज्ञान के साथ-साथ की गई प्रवृत्ति में सजगता परम आवश्यक है। यदि कभी कोई हमें हमारी त्रुटि या स्खलना, कमजोरी या गलती बताता है तो उस पर नाराज या क्रोधित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह हमारा शत्रु नहीं साधना का सहयोगी, हमारा अनन्त उपकारी है। अतः हमारे लिए समय निकालकर हमें सजग व सावधान कर रहा है। आप स्वयं ही सोचिये कि हम गाड़ी चला रहे हैं और यदि गाड़ी का फाटक खुला रह जाये, या टायर पंक्चर हो जाये व कोई पथिक यदि हमें इसकी जानकारी देता है तो हम उसे डांटते हैं? या उस पर क्रोध करते हैं?....... नहीं हम हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। ठीक इसी प्रकार से आत्मलक्ष्य की ओर बढ़ने वाली हमारी साधना-आराधना रूपी गाड़ी के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की स्खलना या त्रुटि के बारे में हमें कोई बता रहा है तो वह हमारे पर अनन्त उपकार कर रहा है। ऐसे में हमें उसका हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करके अति सजगता से अपनी त्रुटि का सुधार करते हुए आत्मलक्ष्य की ओर पूर्ण सजगता व समर्पित भावों से आगे बढ़ना है।

सोचिये, जब हम अनुशासन की बात दूसरों को कहें और कोई दूसरा उस अनुशासन के विपरीत व्यवहार करे तो हमें कितना बुरा लगता है। ठीक उसी प्रकार हमें स्वयं के व्यवहार, आचरण, प्रवृत्तियों पर भी इसी प्रकार चिंतन करना चाहिए। क्योंकि धर्म-सिद्धान्तों-नियमों व मर्यादाओं का उल्लंघन सर्वथा अनुचित है। ध्यान रहे हमारी कोई भी प्रवृत्ति और व्यवहार ऐसा ना हो, जिससे लोगों की धर्म श्रद्धा में कमी आए व हमारे आचरण व व्यवहार से दूसरे लोग धर्म से विमुख हों।

अद्‌भुत अनुपम जैन दर्शन के अनुयायी होने के नाते हम सभी साधक वर्ग आचार संहिता के अनुरूप अपना जीवन व्यवहार बनाएँ और सादगी, सरलता, निराडम्बरता की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते हुए अपने मर्यादित व विवेकपूर्ण जीवन व्यवहार से जिनशासन की शान बढ़ाएँ, क्योंकि सच्चाई तो यही है कि-

कुंडा माही रत्न पड्‌यो, मिल्यो पंचम भव प्यारो।
इण भव में नहीं चेत्या तो, होवे आगे मुंडो कालो।।

अतः मनोभावना यही है कि हम सभी धर्मनिष्ठ, पापभीरू एवं विवेकवान बनकर अपने गंतव्य की प्राप्ति के लिए दिशाबद्ध पुरुषार्थ करते रहें। वस्तुतः हमें बनना है आदर्श आत्मार्थी श्रमणोपासक, पल, प्रतिपल सदा ही प्रयासरत रहना है सम्यक् पुरुषार्थ के लिए।

-175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानी मण्डी-326502 (राज.)

नारी–स्तम्भ

जीवन-प्रबन्धन का अनमोल सूत्र : सकारात्मक दृष्टिकोण

प्रो. सुमेरचन्द जैन

दृष्टिकोण या विचार व्यक्ति के विकास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कोई भी आचार या व्यवहार व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। दृष्टि और आचार–व्यवहार दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं। आदमी का आचार व्यवहार वैसा ही होगा, जैसा उसका दृष्टिकोण होगा।

दृष्टिकोण के दो भेद– सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ है– अपने आपको देखना, अपनी विशेषताओं और साथ–साथ कमियों को भी देखना और सुधारने का प्रयत्न करना। महत्त्व की बात यह है कि आदमी अपने मुँह को देख सके। शीशे में हम अपना मुँह देख सकते हैं किन्तु हमें ऐसे दर्पण की जरूरत है जिसमें आदमी झांककर अपने भीतर को देख सके, भीतर तक प्रवेश कर सके। सकारात्मक दृष्टिकोण, सम्यक् दृष्टिकोण, सम्यग्दर्शन एक सुन्दर दर्पण है। यह जिसके पास है, वह अपने आपको देख सकता है और उसे पता लगता है कि वह कहाँ है, कैसा है?

नकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण होने पर व्यक्ति स्वयं को नहीं देखता, दूसरे को देखता है, नकारात्मक दृष्टिकोण जीवन का ज़हर है। नकारात्मक दृष्टि के लोग सदैव औरों का नुकसान करके प्रसन्न होते हैं। नकारात्मक सोच वाला इन्सान गिरता है, उसका आचरण घटिया होता है, सोच के बिगड़ने से उसका विचार बिगड़ता है, व्यवहार बिगड़ता है, जीवन जीने की शैली बिगड़ती है। नकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति विपरीतता को देखकर परेशान हो जाता है कि अब वह जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता। जहाँ सकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति अपने भाग्य की रेखाओं को बदलने में समर्थ होता है, वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति अपनी सुधरी हुई रेखाओं को भी बिगाड़ देता है।

सकारात्मक दृष्टिकोण के सूत्र

1. **सामुदायिक जीवन–** सकारात्मक दृष्टिकोण का पहला सूत्र है कि जीने के लिए मुझे समय–समय पर दूसरों की अपेक्षा रहती है। मनुष्य के भीतर अनेक वृत्तियाँ हैं। उनको समाधान देने के लिए उसे दूसरे की जरूरत है। जब दूसरे से उसे वात्सल्यपूर्ण व्यवहार मिलता है, तो जीवन में सरसता आती है, अन्यथा वह मुरझाया रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे के सान्निध्य की अपेक्षा रहती है। अतः पहला सूत्र यह बनाया जाना

चाहिए कि मैं अकेला जी नहीं सकता, मुझे दूसरों के साथ जीना है। इस सच्चाई को स्वीकार करने वाला सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर लेता है।

2. **शान्त जीवन**– आज के इस तनावपूर्ण युग की बड़ी समस्या है– मानसिक अशान्ति। उसका मुख्य कारण है कि आदमी का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है। जब दृष्टि सकारात्मक होती है तब मानसिक शान्ति स्वतः आती है तथा आदमी प्रसन्न रहता है, उसकी उलझनें समाप्त हो जाती हैं, वह भयमुक्त जीवन जीता है। अतः सकारात्मक दृष्टिकोण का दूसरा सूत्र है– मैं शान्ति के साथ जीना चाहता हूँ। लड़ाई, झगड़ा, कलह, कदाग्रह, विग्रह में मैं जीना नहीं चाहता, मैं शान्ति के साथ जीना चाहता हूँ।

3. **सापेक्षता का दृष्टिकोण**– सकारात्मक दृष्टिकोण का तीसरा सूत्र है– सापेक्षता का दृष्टिकोण। यह चिन्तन रहे कि मैं निरपेक्ष रहकर शान्तिपूर्ण जीवन नहीं जी सकता। मुझे मेरा ध्यान रखना है तो दूसरे का भी ध्यान रखना है। यह सापेक्ष दृष्टिकोण है। यह सापेक्षता शान्तिपूर्ण जीवन की सच्चाई है। व्यक्ति, परिवार या समुदाय के साथ जीता है और कहता है कि मुझे किसी से कोई मतलब नहीं है, तो वह अच्छा जीवन नहीं जी सकता। जब यह समझ में आ जाए कि मुझे काम अच्छी तरह चलाना है तो दूसरे का सहयोग लेना जरूरी है। यह सहयोग का भाव सापेक्ष दृष्टिकोण का निर्माण करता है।

4. **निरपेक्ष दृष्टिकोण का परिहार**– सकारात्मक दृष्टिकोण का चौथा सूत्र है– निरपेक्ष दृष्टिकोण का परिहार। जिसका दृष्टिकोण निरपेक्ष है वह परिवार और समाज में शान्ति का संचार नहीं कर सकता। मुझे किसी से कोई मतलब नहीं, यह चिन्तन समाज की भूमिका में सम्मत नहीं हो सकता। हिमालय की गुफा में कोई अकेला रह सकता है, किन्तु समुदाय में अकेला नहीं रह सकता। जहाँ सबके साथ जीना है, वहाँ निरपेक्ष दृष्टिकोण नहीं चल सकता। अनेकान्त का प्रयोग है सापेक्ष दृष्टिकोण। निरपेक्ष दृष्टिकोण से केवल अस्तित्व की व्याख्या कर सकते हैं। अस्तित्व निरपेक्ष हो सकता है, पर कोई भी व्यक्ति निरपेक्ष नहीं हो सकता। सामुदायिक जीवन में निरपेक्ष दृष्टिकोण नहीं चल सकता। अतः हम शान्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए निरपेक्ष दृष्टिकोण से बचें।

5. **स्वार्थ-संयम**– सकारात्मक दृष्टिकोण का एक अन्य सूत्र है– स्वार्थ-संयम की क्षमता। व्यक्ति में स्वार्थ नहीं होता, यह नहीं मानना चाहिए। व्यक्तिगत स्वार्थ को कभी पछाड़ा नहीं जा सकता। यह मनुष्य की प्रकृति है, किन्तु स्वार्थ को संयमित करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है। एक सीमा तक स्वार्थ मान्य हो सकता है,

किन्तु स्वार्थ इतना असीम न बन जाए कि व्यक्ति सबकुछ स्वार्थ के लिए ही करे, असीम स्वार्थ समाज के लिए खतरनाक होता है।

चिन्तन यह रहे कि मुझे अपनी सुख-सुविधा पर तो ध्यान देना है, किन्तु साथ में दूसरे की सुख-सुविधा पर भी ध्यान देना है। बहुत से लोग अपनी सुख-सुविधा पर तो बहुत ध्यान देते हैं, लेकिन साथ वालों की सुख-सुविधा पर उनके द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता, उनके विकास पर ध्यान नहीं दिया जाता। यह सबसे बड़ा नकारात्मक दृष्टिकोण है। यह सामूहिक जीवन में अशान्ति पैदा करने वाला और समस्या पैदा करने वाला है।

दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है- ''सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता।' सब सुख-सुविधा चाहते हैं, कष्ट कोई नहीं चाहता। अगर मैं सुख-सुविधा चाहता हूँ, तो दूसरा भी चाहता है। मैं अपने लिए सारा उपयोग करूँ और उनकी सुख-सुविधा पर ध्यान ही न दूँ तो शांतिपूर्ण सह अस्तित्व कैसे होगा?

6. **सहनशीलता-** सकारात्मक दृष्टिकोण का छठा सूत्र है- सहनशीलता। मैं चाहता हूँ दूसरे लोग मेरी प्रकृति को सहन करें तो मुझे भी दूसरे की प्रकृति को सहन करने का अभ्यास करना है। केवल दूसरों के लिए नियम बना दूँ कि सब मुझे सहन करें, तथा दूसरों को सहन करने का प्रसंग हो तब यह बात गौण हो जाय तो उचित नहीं है। स्मरणीय है कि सहनशीलता का व्यावहारिक रूप बनना चाहिए। जिसका दृष्टिकोण सकारात्मक बन गया वह व्यक्ति सहन करने में समर्थ होता है और दूसरों को भी समर्थ बना सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यदि सकारात्मक दृष्टिकोण के उपर्युक्त सूत्र अपना लिए जाएँ तो हमें अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण वाले समाज में मानसिक शान्ति, समस्या मुक्ति, अनासक्ति, करुणा और सत्यनिष्ठा की घटनाएँ स्वतः घटित होती हैं।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर (राज.)

जैनों को संदेश

1. ईसाइयों को अंग्रेजी आती है, तो वे बाइबिल पढ़ लेते हैं।
2. मुस्लिमों को फारसी आती है, तो वे कुरान पढ़ लेते हैं।
3. सिक्खों को पंजाबी आती है, तो वे गुरुग्रन्थ पढ़ लेते हैं।
4. जैनों को प्राकृत नहीं आती है, इसलिए वे आगम नहीं पढ़ पाते हैं।

-संकलित Whatsapp

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

सूर्यनगरी जोधपुर की पावन धरा पर

जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि जिनशासन गौरव आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 **श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** की आज्ञा एवं आत्मार्थी शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न **श्री मानचन्द्र जी म.सा.** के मुखारविन्द से सूर्यनगरी-जोधपुर में

मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा

की जैन भागवती दीक्षा

वि.सं. 2072 वैशाख शुक्ला सप्तमी, शनिवार, दिनांक 25 अप्रेल, 2015 को

जोधपुर में सम्पन्न होगी।

परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.**, मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोजित दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

विनीत

मोफतराज मुणोत	ज्ञानेन्द्र बाफना	पी.शिखरमल सुराणा	आनंद चौपड़ा	पारसमल गिड़िया
संयोजक संरक्षक मण्डल	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	क्षेत्रीय प्रधान-मारवाड़ सम्भाग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आयोजक

धनपतचन्द सेठिया	सुभाष हुण्डीवाल	सुभाष गुन्देचा	अमरचन्द चौधरी
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष	संयोजक-दीक्षा समिति

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

निवेदक-वीर परिवार

गिरधारीलाल, घेवरचन्द, लूणचन्द, उसबचन्द, अशोक, सुरेश, महेन्द्र, दीपचन्द, दिनेश, गौतम, ललित, विमल, प्रवीण, महावीर, नरेन्द्र, भरत, प्रमोद, महेश, आकाश, तरुण, अक्षय, ऋषभ, कार्तिक, खुश, रौनक, दिव्यांक, मोहित, सिद्धार्थ, युग, समय एवं समस्त सालेचा खिमोणी परिवार,हाल मुकाम हुबली, मरुधर में जेवन्तरी (राज.)

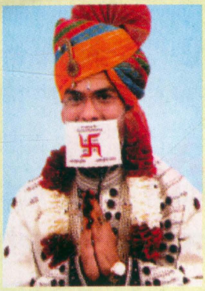

मुमुक्षु भाई

श्री अविनाश सालेचा : परिचय

जन्मतिथि- 07 अगस्त 1991

जन्मस्थान- हुबली(कर्नाटक) व्यावहारिक शिक्षा-बीए

मूल निवासी-जेठन्तरी, जिला-बाडमेर (राज.)

पारिवारिक परिचय

बड़े दादा-दादी	:	स्व. श्री केशरीमलजी-स्व. श्रीमती बदामीदेवीजी सालेचा
वीर दादा-दादी	:	स्व. श्री पुखराजजी-श्रीमती पानीदेवीजी सालेचा
छोटे दादा-दादी	:	स्व. श्री चम्पालालजी- स्व. श्रीमती बदामीदेवीजी सालेचा, श्री गिरधारीलालजी-श्रीमती मोहनीदेवीजी सालेचा
बड़े पिता-माता	:	श्री घेवरचन्दजी-श्रीमती कमलादेवीजी सालेचा
वीर पिता-माता	:	श्री उसबचन्दजी-श्रीमती शोभादेवीजी सालेचा
चाचा-चाची	:	श्री सुरेशकुमारजी-गुणवन्तीदेवीजी सालेचा, श्री ललितकुमारजी- पिंकीदेवी जी सालेचा, श्री विमलकुमारजी-पिंकीदेवीजी सालेचा
भाई-भाभी	:	श्री नरेन्द्रकुमारजी-पुष्पादेवीजी सालेचा
वीर भ्राता-भाभी	:	श्री महेशकुमारजी-प्रभादेवीजी सालेचा, श्री मोक्ष जी सालेचा
भुआ-फूफाजी	:	श्रीमती बीजोबाईजी-श्री दौलतराजजी भंसाली, श्रीमती भंवरीबाई जी-श्री तेजराजजी भंसाली, श्रीमती लीलाबाईजी-श्री रिखबचन्दजी तातेड़, श्रीमती सरस्वतीबाईजी-श्री राजेन्द्रजी भण्डारी, श्रीमती काजूबाईजी-श्री उत्तमचन्दजी पारख, श्रीमती इन्द्राबाईजी-श्री शान्तिलाल जी पारख
नाना-नानी	:	स्व. श्री गोकुलचन्दजी-चम्पादेवीजी बागरेचा
मामा-मामी	:	श्री छगनलालजी-बदामीदेवीजी बागरेचा, श्री लालचन्दजी-कमलादेवीजी बागरेचा, स्व. श्री सुमेरचन्दजी-वैशालीदेवीजी बागरेचा
मौसा-मौसीजी-		वीरपिता श्री रणजीतकरणजी-रेशमीदेवीजी संचेती, श्री मीठालालजी-काजू देवीजी चौपड़ा, श्री सोहनराजजी-पिस्तादेवीजी जीरावला, श्री लालचन्दजी-मधुदेवीजी श्रीश्रीमाल, श्री जवेरीलालजी-सुशीलादेवीजी जीरावला
बहन-बहनोई	:	श्रीमती संगीताजी-श्री दिनेशजी चौपड़ा
भतीजी	:	सुश्री प्रतीक्षाजी, सुश्री अवधिजी, सुश्री कोमलजी
भानजा-भानजी	:	सुश्री कुमकुमजी चौपड़ा, श्री हेमन्तजी चौपड़ा
लघु भगिनी	:	सुश्री दीक्षिताजी, सुश्री लब्धिजी, सुश्री सिद्धिजी सालेचा

दीक्षित बहनें: रत्नसंघीय महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. एवं महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.

धार्मिक अध्ययन

आगम कण्ठस्थ	:	दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, अनुत्तरोववाइयसूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, आचारांगसूत्र का प्रथम श्रुतस्कन्ध।
सूत्र वाचनी	:	ठाणांगसूत्र, समवायांगसूत्र, भगवतीसूत्र, प्रज्ञापनासूत्र, ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र, अंतगडदशासूत्र, प्रश्नव्याकरण सूत्र, विपाक सूत्र, उपासकदशांग सूत्र,

उववाइयसूत्र, जीवाजीवाभिगमसूत्र, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र।

स्तोक कंठस्थ : 25 बोल, 67 बोल, कर्म प्रकृति, लघुदण्डक, पांच समिति तीन गुप्ति, संजया, नियंठा, ज्ञानलब्धि, जीव-अजीव पज्जवा, 24 ठाणा, कर्मग्रन्थ 1-6, पंचसंग्रह 1-10 भाग आदि।

स्तोत्र कंठस्थ : कल्याणमंदिर, भक्तामर, महावीराष्टक।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गुजराती, कन्नड़।

धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षणबोर्ड 1 से 4

वैराग्यावधि : 6 वर्ष **पर्युषण सेवा** : 4 वर्ष

वीर परिवार, सम्पर्क-सूत्र

स्थायी निवास- **श्री उसबचन्दजी सालेचा,** Flat No. 301, Mahantesh Complex, Itagi Maruti Gali, Mangalwar Peth, Hubli-580028 (K.T.) Ph. 2369309 (o), 2367604 (R), 94496-35049(M)

अस्थायी निवास- श्री उसबचन्दजी सालेचा, 'अक्षयदीप', जालम विलास के बाहर, पावटा बी रोड, जोधपुर (राज.)

श्री उसबचन्दजी सालेचा	94497-71618	श्री महेशकुमारजी सालेचा	94496-35049
श्री विमलकुमारजी सालेचा	94489-23544	श्री ललितजी सालेचा	97429-72072
श्री नरेन्द्रकुमारजी सालेचा	94488-31710	श्री महेन्द्रजी सालेचा	94497-31331
श्री प्रवीणजी सालेचा	93600-30122	श्री भरतजी सालेचा	94220-44636
श्री विक्रमजी बागरेचा	98250-27057	श्री कमलेशजी भंसाली	98860-29642

दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम

वि.सं. 2072 वैशाख शुक्ला षष्ठी, शुक्रवार, 24 अप्रेल, 2015

शोभा यात्रा : प्रातः 8.30 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, धर्मनारायण जी का हत्था, पावटा से प्रारम्भ होकर पावटा सी रोड, सन्डे शॉप, श्रीराम वाटिका के सामने से होती हुई परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के श्रीचरणों में पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेंगी।

अभिनन्दन-समारोह : वीर परिवार एवं दीक्षार्थी का, समयः मध्याह्न 2.00 बजे से

स्थानः मीरा बाग पार्किंग स्थल, हनवन्त गार्डन के पीछे, पावटा 'बी' रोड, जोधपुर

अध्यक्षता : श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

मुख्य अतिथि : न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया
(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, झारखण्ड उच्च न्यायालय), सम्प्रति चेयरपर्सन, आर्मड फोर्सेज ट्रिब्यूनल, नई दिल्ली

विशिष्ट अतिथि : डॉ. महावीर जी गोलेच्छा
अन्तरराष्ट्रीय सामाजिक एवं स्वास्थ्य नीति विशेषज्ञ,इंस्पायर फेलो,भारत सरकार

सम्माननीय अतिथि : सुश्रावक श्री पारसमल जी बागरेचा (जिनाणी), बैंगलुरु

वि.सं. 2072 वैशाख शुक्ला 7, शनिवार, 25 अप्रेल, 2015

अभिनिष्क्रमण यात्राः प्रातः 7.30 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान 'अक्षयदीप' जालम विलास के बाहर, पावटा बी रोड, जोधपुर से प्रस्थान कर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प.रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** आदि सन्त-सतीमण्डल के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

प्रवचन एवं दीक्षा-विधि शुभारम्भ-प्रातः 8.15 बजे परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से।

दीक्षा-स्थल-मीरा बाग पार्किंग स्थल, हनवन्त गार्डन के पीछे, पावटा 'बी' रोड, जोधपुर

दीक्षा-समिति

श्री कांतिलाल जी चौधरी, धुलिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-अ.भा.रत्नसंघ, 98231-72765
श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, कोटा, राष्ट्रीय मंत्री-अ.भा. रत्नसंघ, 94141-77139

सम्पर्क-सूत्र

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, 0291-2636763,2641445

मानेन्द्र ओस्तवाल 9414132521, **संदीप भाण्डावत** 9828031482, संयुक्त महामंत्री, अ.भा. रत्नसंघ, **बीना मेहता**, 9772793625, महासचिव, अ.भा.श्राविका मण्डल, **श्रेयांस मेहता**, 9799506999 महासचिव, अ.भा.युवक परिषद्, **धनपतचन्द सेठिया**, 9829022472, अध्यक्ष-जोधपुर रत्नसंघ, **सुभाष हुण्डीवाल**, 9460551096, मंत्री-जोधपुर रत्नसंघ

स्वागत समिति

मोफतराज पराग मुणोत, रावलचन्द चौपड़ा, डॉ. चंचलमल अशोक चोरडिया,
कनकराज महेन्द्र कुम्भट, मूलचन्द प्रसन्नचन्द बाफना, धनपतचन्द दीपक सेठिया,
सुभाष विकास गुन्देचा, नवरतन पुनीत डागा, आदित्य शुभेन्द्र बाफना,
सुमतिचन्द श्रेयांस कोचर, नलिनी सम्पतसिंहसा भाण्डावत, सायरकंवर सूरजराजसा ओस्तवाल,
मालीदेवी नथमल सा कोचर, शांतिदेवी शिवचन्द सा ललवानी, पदमचन्द रत्नश्री मेहता,
कांतिलाल इन्दूदेवी बाफना, लालचन्द लाडकंवर चौधरी, सुरेश शुभम कांकरिया,
राजेश जबरचन्द श्रीमाल, कुशल सुरेश दिलीप बाफना, सुमेरमल मनोज राजेश कांकरिया, मनमोहन रजनीश राजेश कर्नावट, किशन यशवन्त गौतम भंडारी,
चंचलदेवी अनिल लोकेश कुम्भट, हस्तीमल सोहनलाल हुण्डीवाल, भीखचन्द पृथ्वीराज गोलेच्छा

दीक्षा आयोजन समिति

दीक्षा समिति संयोजक-अमरचन्द चौधरी, 9414130024, **सह संयोजक**-प्रकाश चौपड़ा, 9314709071, **भोजन व्यवस्था समिति**- अशोक मेहता, 9414475904, जुगल हुण्डीवाल, 9414913615, गौतमचन्द भंडारी, 9414373008, मनीष लोढा, 9414243249, **वाहन व्यवस्था समिति**- सुरेश कवाड़, 9460550471, अशोक बागमार, 9828166067, **आवास-निवास समिति**- हर्षवर्द्धन ललवानी, 9828197000, शांतिलाल ओस्तवाल, 9414475025, **प्रचार-प्रसार समिति**- नवरतन गिड़िया, 9414100759, गजेन्द्र चौपड़ा, 9414301785, **आहार विहार समिति**- विनय बाफना, 9413329326, नितेष लोढा, 9414601980, **स्वास्थ्य सेवा समिति**- मनमोहन कर्णावट, 9414135385, ललित बोथरा, 9314012695, **शोभायात्रा समिति**- नारायण चौपड़ा, 9414916357, महावीरचन्द बोथरा, 9828582391, महेन्द्र सेठिया, 9214594476, राजाबाबू चौपड़ा, 9461442400

English-Section

ŚRĀVAKĀCĀRA AND PAÑCĀCĀRA(3)

Dr. H. Kushal Chand

(Continue from the Last issue of March-2015)

5) Dhyāna (meditation or contemplation): This is of 4 kinds Ārtta, Raudra, Dharma and Śukla.

Dhyāna means meditation on something with an absolute concentration of mind. It is of 2 kinds: auspicious meditation and inauspicious meditation. Inauspicious meditation is not an austerity. It does not destroy karma. It is an Āsrava by means of which new karmas enter the soul. An auspicious meditation is an austerity. It can destroy karmas. Incidentally, the inauspicious meditations will also be described so that Śrāvaka may escape from them by keeping them off. The point is that meditations are tremendously efficacious. For example: Prasanna Chandra Rajarshi on account of his evil meditations gathered the sins that forced him to go to the seventh hell. But when he began auspicious meditations he could ascend straight up to the supreme level of Kevalgyana.

The inauspicious meditation is of 2 kinds namely Ārtta-dhyāna and Raudradhyāna. Each of these two has 4 kinds which a Śrāvaka should avoid.

In Ārttadhyāna -

(1) One meditates on these ideas. 'How can I get things which I like? How can I remain with it?'

(2) 'How can I get rid of undesirable things? How can I avoid them?' Thinking of these things.

(3) Thinking of getting rid of or remedying agony and malady.

(4) Nidan: that means a painful fear regarding materialistic pleasures.

In Raudradhyāna: (1. Hiṃsānubandhī, 2. Mriṣānubandhī, 3. Steyānubandhī). Raudradhyāna means carrying out cruel contemplations on violence, falsehood, stealing, robbery and such ignoble things. Saṃrakshaṇānubandhī Raudradhyāna-thinking carefully about safeguarding one's wealth, fame etc.[15] A Śrāvaka should try to avoid Ārtta-dhyāna and Raudradhyāna.

The auspicious meditations are of 2 kinds--(1) Dharma-dhyāna; (2)

Shukladhyāna, which a Śrāvaka should follow.

(I) Dharmadhyāna is of 4 kinds namely Āgyā, Apāya, Vipāka and Saṃsthāna

(1) *Āgyā Vichaya:* 'The commands of the Jin and the words of the Jin are extraordinary and beneficial to all jivās' --this kind of thinking.

(2) *Apaya Vichaya:* Terrible calamities can result from attachment, hatred, indifference, ignorance and vowlessness'; thinking of these things.

(3) *Vipāka Vichaya:* 'Happiness and sorrow are the result of the Vipāka or the ripening of our noble and ignoble karmas'-- thinking thus.

(4) *Saṃsthāna Vichaya:* Meditating with concentration on the 14 Rajulokas comprising the upper, the lower and the middle worlds.

(II) The four kinds of shukladhyānas:

(1) *Pṛthaktava-Vitarka Savicāra:* Means variety by meditating on the various substances and their mental differences, Vitarka = means 14 Purvās or Srutas. Vicāra = the mutual activity among substances, sounds and the three yogas. The Shukladhyāna comprises these three contemplations.

(2) *Ekatva Vitarka Avicāra Dhyāna:* Ekatva = not mutual but depending only on one substance--Avicāra - free from what is said already. These two kinds of meditations were carried out by masters of Āgams.

(3) *Sukshma Kriyā Apratipati:* This is a spiritual reaction born out of subtle yoga of the body at the time of the jīva reaching moksha which does not perish; which is Apratipāti and which prevents at that time the activities and the propensities of body and mind.

(4) *Vyuchchinna Kriya Anivṛti* --In this, ever the Sukshmakaya Yoga is destroyed; it is the mountain stage. On account of the destruction of all Karmas, Moksha is attained.[16]

6) *Vyutsarga:* This is a very great internal austerity. According to this, Śrāvaka should recite the Annattasūtra and fix firmly your body by means of a place, your voice by means of silence and your mind by means of a sublime meditation. After performing a perfect meditation by means of a vow one must remain without any activity of the body or the voice. This is its speciality. This destroys all karmas like Antarāyas. Kāyotsarga is a kind of renunciation (Vyutsarga). This is of 2 kinds: (1) of substances; (2) of thoughts.

The Physical *Vyutsarga* is of 4 kinds:

(1) *Ganatyāga:* For the sake of attaining some special knowledge or tapasyā (leaving one group with the permission of the Gurumāharaja and joining another group) or going away leaving one's group for the attainment of such things as jñānakalpa.

(2) *Dehatyāga:* This implies carrying out Kāyotsarga, Anashana (antim pādapopagamana) at the proper places discarding the conscious and the inert substances,

(3) & (4) *Upadhi Āhāratyāga:* Discarding defective or excessive clothes, vessels or food in a lonely place according to prescriptions.

The Psychic Vyutsarga: Bhāvavyutsarga: This means discarding passions, karmas and Saṃsāra.

(V) *Vīryācāra*

This must be carried out with body, mind and voice concealing one's abilities with the greatest enthusiasm and awareness in order to attain spiritual energy and elevation. The 8 ācāras of Jñāna, 8 ācāras of Darshan, 8 ācāras of Cāritrā and 12 ācāras of Tapa, all together comes to 36 ācāras while performing them the energy which we get is called as vīrya. 8 of Jñāna etc., 8 + 8 + 12 = 36.[17] Śrāvaka should always try to get more and more vīrya from the ācāras and follow the path explained by the Tīrthaṅkaras.

Pañcācāra and Jaina Lifestyle

When the soul sheds its karmic bonds completely, it attains divine consciousness. Those who have attained mokṣha are called siddhas, while those attached to the world through their karma are called Saṃsārin. Every soul, may be a monk or śrāvaka has to follow the path, as explained by the Jinas and revived by the Tīrthaṅkaras, to attain complete liberation or Nirvāṇa. The commonly accepted definition of the term 'God' is of a being who rules and created the universe. Jains do not believe in a creator deity that could be responsible for the manifestation, creation, or maintenance of this universe. The universe is self-regulated by the laws of nature. Jains believe that life exists in various forms in different parts of the universe including earth. Jainism has extensive classification of various living organisms including micro-organisms that live in mud, air and water. All living organisms have soul and have ability to perceive pain therefore, need to be interacted without causing much harm i.e. Ahiṃsā /Non-violence.

Just as in the life of a Sādhu such great vows as non- violence constitute

the path of renunciation, the sādhu must pursue the path of the Pancācāra in order to attain qualities like knowledge, development etc. and a Śrāvaka can also follow the path of renunciation. By observing these Ācāras (practices) the soul develops knowledge, faith, character, austerities and energy. A Śrāvaka should move towards the path of nirvāna and not nirmāṇa At present, karmas have to be destroyed only by means of Tapas or austerities. It must be remembered that if you are bearing with hunger, thirst, violence, involuntarily, karmas end by exhausting themselves then it is Akāmnirjarā. If we destroy karmas by means of willed endurance and by means of endeavours and austerities, with the idea of achieving spiritual purification and development and by enduring the effects of karmas and by carrying out austerities like fasting etc. and if we can destroy karmas thus, it is called Sakāmanirjarā.

The significance of the virtues have been proved all along time and again. The key virtue of non-violence, as explained and taught by the great tradition of Jain Ācāryas through their sermons and writings, and as practiced by the laity for centuries together, has imperceptibly percolated in Indian thought and permeated the Indian social order. R. Williams observes [18] that Jainism has strived for centuries to permeate the Indian social order, without challenging it, with the spirit of compassion. The striking features of Indian culture, particularly with its humanity, higher level of kindliness and gentleness',[19] could be, to a considerable-extent, owing to the Jaina contribution through its professed virtues of Ahiṃsā--non- violence and Anekānta dṛṣti (non-absolutistic attitude) etc. The Indian History and particularly those of the History of Karnataka, Tamil Nadu, Gujarat and Rajasthan, are eloquent about the mode and magnitude of such contribution.[20] Vegetarianism, attitude of charity, sense of accommodation and tolerance, which are prominently found among the peoples of these regions even to this day, hold evidence to this fact taking an peep into the way of living of the present day Jaina laity or śravāka, would very well encourage our approach. Behind Dr. Annie Besant's impression of the Jaina householder as 'quiet, self-controlled, dignified, rather silent, rather reserved"[21] etc., lie the effect of these virtues. What could be the reason behind the findings of Dr.V.A.Sangave[22] that comparatively there is found a very small number of criminals among the Jainas and that the habitual criminals are not at all found among them? Moreover drinking habits, as we

have observed, are found to the minimum degree among them. It is also interesting to note that recently, the Department of Social Anthropology at the university of Cambridge organized an International Seminar on the Jainas as a Community, on a major consideration that Jaina community is the only community in the world today that practiced non-violence, to which there was an excellent response from social scientists, social anthropologists and social historians from all over the world.[23]

When we look at the Jaina householder from the point of view of the virtue of limited attachment to worldly possessions, some of the Jaina sterling qualities and business and trade ethics have no parallels in other business quarters in India. It is interesting to note that some of these qualities, like nyāya-sampanna-vibhava (possessed of honestly earned wealth), pāpa- bhīru (apprehensive of sin), sadācāraiḥ krita saṇgha (attached to good moral standards), spending after properly thinking etc., are laid down as the constituent qualities of an illustrious householder,[24] which must have influenced these merchants all along centuries of years.

More over the Lay doctrine, besides through the virtue of Parigraha - parimāṇa-- limited attachment to possessions, has also kept a fair amount of check on the layman's acquisitive infatuation through the virtue of dāna--gift or charity;[25] and the virtue of charity, as obtaining even today among the members of the Jaina community, needs no further elucidation. We may point out that through centuries the Jain ācāryas have been almost and often imperative on the practice of charity by the laity. In this world, if anybody without daṇa could be called a gṛhastha--householder, then even a bird can be called so, for it too has a house a nest to live in. Jainism thus encourages and cultivates one's personal wisdom, self-reliance and self-control through five ācāras i.e. Pañcācāra - Jñānācār, Darshanācāra, Cāritrācāra, Tapācāra and Vīryācāra which provides the path for attaining liberation from the cycles of birth and death and also provides social, ecological and economic justice.

Conclusion

When Mahavira reformed Jainism in 600 BCE, he organized the Jain community into a four-fold saṅgha of monks, nuns, laymen, and laywomen (sādhu, sādhvi, śrāvaka and śrāvikā.) and mandated ascetics to be always on the move helping the laity in their spiritual pursuits. He also endowed the ācāryas - the heads of the ascetic orders-with the exclusive authority to

interpret the scriptures from time to time. There is a close relationship and mutual dependency between the Jain ascetics and the laity. Whereas the laity depends heavily on the ascetics for spiritual guidance, the dependence of the ascetic orders on laity for survival is equally heavy. This arrangement is a highly effective mechanism not only of adopting scriptural interpretations to meet the demands of the evolving universe but also to carry the message of change to the masses. Consequently, Jain ācāryas and their ascetic orders could become harbingers of the new spirituality, generate the critical mass of awareness needed for activism in ecological, social and economic justice.[26] The internal renunciation refers to the emasculation of the passions of anger and the like, while the external one, to the enervation of body. The saint renounces all parigrahas except broom, clothes and pot for water, attains all sorts of external and internal purity, and gives himself to the constant reflection on austerity, knowledge, fearlessness, loneliness and endurance. By abandoning all strengthening juices and accepting only unseasoned and simple meals and practising the six kinds of external austerities, the saint gradually weakens his body, though he takes care that his internal peace is not disturbed. Of all these methods of depriving the body of strength, the practice of two days fast, three days to five days fast and then light meals have been appreciated. Along with this it is imperative for the saint to remove anger by forbearance, pride by modesty, deceit by simplicity, and greed by contentment and also the Śrāvaka in their cāritra i.e. śrāvakācāra should try to follow the Pancācāra so that they can be liberated and nowadays we find more and more people engaged in following Pancācāra where by practice of 8 days fast of 1008 people together, 10 days, 15 days and 30 days tap etc. are practiced by śrāvaka and śrāvika in India. Jainism encourages spiritual development through cultivation of one's own personal wisdom and reliance on self-control through vows. The five ācāras (Pancācāras) of Jainism Jñānācāra, Darshanācāra, Cāritrācāra, Tapācāra, Vīryācāra - provide the path for attaining liberation from the cycles of birth and death.

References

15. ibid 16. ibid

17. ibid 18. Devasenacārya, Sāvaya-dhamma- dohā, 10th century, verse 76

19. R. Williams, Jaina Yoga. Op. cit., Introduction p. xix.

20. Prof. A. L. Basham, The Wonder that was India, Golden Jubilee Pub.introduction by Thomas Trautmann, p. 9

21. Dr. J. P. Jain, Bharatiya Samskriti, The Jaina Sources of the History of India

22. Dr. V. A. Sangave, All India Conference of Prakrit and Jaina Studies, Varanasi, Jan. 1988. p. 29.
23. Jaina Community, pp. 340-341.
24. (i) Dr. V. A. Sangave, All India Conference of Prakrit and Jaina Studies, Varanasi, Jan. 1988.
25. (i) Hemacandra, The Yogashāstra, English translation by Prof Dr Olle Qvarnstrœm 56.
(ii) Pt. Kailash Chandra Shastri, Jaina Dharma, Chaurasi Mathura, 1985, p. 192.
26. Vastupal Parikh Ph.D, Jainism and the new Spirituality, op.cit p.154

-Deptt. of Jainology, University of Madra, Chennai
29/3, Ranganthan Avenue, Kilpauk, Chennai-600010 (T.N.)

यही सत्य का सुखद मर्म है

श्री निर्मल जामड़

जीवन माने सुख या दुःख है।
चिन्तन के स्तर पर निर्भर है।
मैं पीड़ा को अनुभव कहता।
तुम अनुभव को पीड़ा समझते।
दोनों के अन्तरसम्बन्ध में।
समझ-समझ का बस अन्तर है.....।।1।।
राग-रंग को सब जन मानें,
भेद है इनमें कितने जानें,
राग, मोह-माया की खान है,
रंग प्रकृति का विधान है............।।2।।
सत्य लगे उपदेश में सुन्दर,
कठिन आचरण में लगता है,
वस्तु का स्वभाव धर्म है,
यही सत्य का सुखद मर्म है.........।।3।।
छोड़ने में सुख छुपा हुआ है,
छूटने में दुःख दबा हुआ है,
मुक्ति और बन्धन में कर्म ही,
देने वाले सुख या दुःख हैं...........।।4।।

-2/175, जवाहरनगर, जयपुर-302002 (राज.)

संवाद

जिनशासन की दीक्षा (4)

आचार्य विजययोगतिलक सूरिजी म.सा.

गुजराती पुस्तक 'जिनशासन की दीक्षा' का हिन्दी अनुवाद सुज्ञ श्रावकरत्न श्री स्वरूपचन्द जी बाफना 'सी.ए.', सूरत ने किया है। यह संवाद वैराग्य को पुष्ट करने वाला है। जनवरी-2015 से इसका क्रमिक प्रकाशन हो रहा है।- **सम्पादक**

विलास- महाराजजी, आपसे एक प्रश्न है। आप सी.ए. हैं, आपके पास बुद्धि है। आप चाहो तो लाखों रुपये कमा सकते हो, फिर उन पैसों से गरीब लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान देकर उनका उपकार कर सकते हो? तो आप ऐसा क्यों नहीं करते?

आचार्यश्री- सबसे बड़ा उपकार कौनसा, यह विचार करना है। एक दृष्टांत से तुमको समझाऊँ कि सबसे बड़ा उपकार क्या? एक राजा ने एक चोर को चोरी के माल के साथ पकड़ा। अभी तक वह बहुत सारी चोरियाँ कर चुका था। राजा ने उसे मृत्यु-दण्ड की सजा सुनाई। उसी समय राजा की चार रानियों ने राजा से विनति की कि एक-एक दिन इस चोर को हमें सौंप दीजिए। राजा ने हामी भर दी। पहली रानी ने स्नान, भोजन वगैरह कराया, उसका पूरा दिवस आनन्द में बीता। दूसरी रानी ने दस हजार और तीसरी रानी ने लाख खर्च करके उसे सुविधाएँ प्रदान कीं। चौथी रानी सवेरे चोर को स्वयं के महल में ले गयी। शांति से बिठाया फिर चोरी के नुकसान समझाए। चोर ने कसम ली कि अब चोरी नहीं करेगा और रानी ने उसे आश्वासन दिया कि मैं तुम्हें राजा द्वारा की गई मौत की सजा से बचाऊँगी। चोर आनन्दित हो गया। रानी ने उसे लूखी रोटी खिलाई। उसने शांति से खायी। दूसरे दिन सवेरे चोर और चारों रानियाँ राजा के समीप आये। चौथी रानी ने राजा से कहा मेरी एक विनति है जो आप स्वीकार करो तो मैं आपकी बहुत कृपा मानूँगी। इस चोर की मौत की सजा माफ करो। यह अब चोरी नहीं करेगा। राजा रानी की बात स्वीकार करता है। फिर चोर को पूछता है कि तुम्हें कौनसी रानी ने सबसे ज्यादा खुश किया?

विलास- चौथी रानी ही होगी?

आचार्यश्री– मेरी वार्ता का फैसला तुमने दे दिया। आदमी के ऊपर मौत का भय हो तब तक उसे कोई चीज़ आनन्द नहीं दे सकती। मौत का भय चला जाये फिर आदमी बिल्कुल सादी सामग्री में भी प्रसन्न रहता है। साधु पूरी दुनिया को स्वयं की तरह से अभयदान देता है। जिस तरह मनुष्य जीव है, उसी तरह पशु-पक्षी, मक्खी-मच्छर, कीड़े-मकोड़े, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी चेतना है, अनुभूति है। वो अनुभूति की अभिव्यक्ति भी करते हैं। अतः उनके प्रति हमारा आचरण कैसा हो? तो इसके लिए कहा गया है- ''अपने प्रति किया गया आचरण जो तुम्हें अच्छा नहीं लगता, वैसा आचरण दूसरों के लिए नहीं करना।'' क्या यह सिद्धान्त तुम्हें स्वीकार है?

विलास– बिल्कुल ठीक बात है।

आचार्यश्री– तुम्हारे साथ में कोई झूठ बोले तो क्या तुम्हें अच्छा लगता है? तुम्हारी वस्तु तुम्हारी जानकारी के बिना कोई ले लेवे, चोरी हो जाय तो क्या तुम्हें अच्छा लगता है? स्वयं की मौज के लिए कोई तुम्हें हैरान करे तो तुम्हें पसंद आएगा? तुम्हारा व्यवसाय कोई व्यक्ति टेक-ओवर कर ले, केप्चर कर ले, तो तुम्हें अच्छा लगेगा? न ही ना। इसीलिए तुम्हें तुम्हारी जिन्दगी में से हिंसा, झूठ-चोरी, मैथुन और परिग्रह यह पाँच वस्तुएँ सम्पूर्ण रूप से दूर करनी चाहिए। इसके सिवाय कोई विकल्प नहीं। कभी ऐसा हो कि तुम्हारी कमजोरी के कारण तुम ऐसा नहीं कर सको, परन्तु करना तो यही चाहिए, ऐसा तुम मानते हो कि नहीं?

विलास– मानता हूँ।

आचार्यश्री– अब मुझे बताओ कि संसार में रहकर तुम हिंसा किस तरह से दूर करोगे? पानी में जीव है। पानी का उपयोग बंद करने की बात तो जाने दो, कभी भी नहीं कर सकोगे। एक भी इलेक्ट्रिक साधन मोबाइल, लाइट, पंखा, ए.सी., कम्प्यूटर इन सभी का उपयोग बंद करना हो तो क्या कर सकते हो? तुम नीतिपूर्वक धंधा करते हो फिर भी तुम्हारी गाड़ी के नीचे कीड़े-मकोड़े आकर के मर जाय, उनकी ज़िन्दगी छीन लेने का तुम्हें अधिकार है क्या? तुम जब रुपयों का संग्रह रखते हो, तुम्हारी जरूरत से ज्यादा रुपये रखते हो, तब स्पष्ट है कि तुमने ऐसे कितने ही लोग, जिन्हें पेट भरने को, खाने को भी नहीं मिलता, उनकी आजीविका को ठेस पहुँचायी है। साधु का जीवन ही

ऐसा जीवन है जो कि आने वाले कल के लिए संग्रह किये बिना जीते हैं। परिग्रह रखना यही आज के विश्व अशांति का मूल है। यदि दुनिया भगवान महावीर का अपरिग्रह का संदेश समझ जाए तो विश्व भर की अशांति चुटकी में दूर हो जाए। पाँच महापापों को छोड़ना यही मोटी सज्जनता है और दुनिया पर सर्वश्रेष्ठ उपकार है। इससे बढ़कर कोई उपकार नहीं।'' तुम दे देकर कितने लोगों को सुख दे सकोगे? और मात्र मनुष्यों को सुख देने के लिए बाकी की सृष्टि का नाश करना, यह अन्याय है। जब साधु स्वयं मन अपसेट करने वाले दोषों के पुष्टिरूप पापों का आचरण करते नहीं तो ही दूसरों को सुखी बनाने का उपदेश दे सकते हैं, प्रयत्न कर सकते हैं। उसी से मनुष्य का भी भला होना है, दूसरी किसी रीति से नहीं। इसीलिए साधु ही स्व-पर और जगत् का हित सुख कल्याण कर सकते हैं। दूसरा कोई नहीं। इसीलिए सबसे बड़ा उपकार तो यही है कि तुम हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह के महापापों से सम्पूर्ण मुक्त हो जाओ।

विलास- आपकी इस बात को शत-प्रतिशत स्वीकार करता हूँ कि पाँच महापापों को जीवन से दूर करना चाहिए और इसे करने के लिए साधुता चाहिए। परन्तु महाराज श्री! एक बात पूछता हूँ? आज धर्म-गुरुओं की ज़िन्दगी देखो तो आपको अलग ही देखने को मिलता है। आचार्यों को भक्तों से ऐसा राग है कि बात ही न पूछो। मोक्ष जाने को निकले और ऐसे आडम्बर में कैसे फंस गए? कितनों के पाखण्ड खुलते हुए देखा तब ऐसा लगता है कि इससे तो संसार में रहकर अच्छा जीवन जीयें। संसारी आदमी का गुप्त संयम ज्यादा अच्छा है, परन्तु संयमी साधु का गुप्त संसार खतरनाक है। आपको नहीं लगता कि आज परिस्थिति ऐसी है कि साधु आडम्बर में फंसे हुए हैं।

आचार्यश्री- अभी तक हमने सिद्धान्त की चर्चा की थी। दीक्षा क्यों लेनी चाहिए, इस प्रश्न का अलग-अलग दृष्टिकोण से तुम्हें उत्तर दिया। जो तुम्हारे दिल में उतरा होगा, ऐसा मैं मानता हूँ। अब जिस प्रश्न का जिक्र हुआ है वह गम्भीर है। यह प्रश्न सिद्धान्त को प्रभावित नहीं करता व्यक्ति से संबंधित है। व्यक्ति की खराबी से कोई दीक्षा धर्म अयोग्य नहीं ठहरता। भौतिक जगत में कोई बाजार से उठ जाये, इतने मात्र से धंधा अनुचित नहीं माना जाता। कोई व्यक्ति तलाक ले ले, इसीलिए लग्न अनुचित नहीं माना जाता। कोई

आदमी व्यभिचारी, दुराचारी या क्रूर बने, इतने मात्र से आदमी जात खराब नहीं मानी जाती। उसी प्रकार से साधु वेष में रहे हुए कोई गैर वर्तन करे, इसीलिए दीक्षा धर्म अनुचित नहीं माना जाता। आज भी सच्चा संयम-जीवन जीने वाले साधु हैं ही।

विलास- ठीक फरमा रहे हैं! महाराज श्री, आपकी बात एकदम सही है। आज मुझे बहुत संतोष हुआ। दीक्षा लेने वाले साधु भगवन्तों की इतनी उच्च जीवन दृष्टि होती है वह आज ही जानने को मिली और मैं यह मानता हूँ कि ऐसी जीवन दृष्टि हो जाय फिर ही दीक्षा लेनी चाहिए। अच्छा है कि आप युवाओं को दीक्षा प्रदान करते हो। बाकी आज जिस तरह से छोटे अबोध बालकों को दीक्षा दी जाती है, वह बिल्कुल गलत है।

आचार्यश्री- सबसे पहले "मैं युवाओं को ही दीक्षा देता हूँ"। यह तुम्हारा भ्रम है। मेरे पास में दीक्षा लेने आने वाले 8 वर्ष से लेकर 70 वर्ष तक के कोई भी हो, उनकी योग्यता हो तो मैं दीक्षा देता हूँ।

कोई जो छोटे अबोध बालक को उसकी इच्छा के विरुद्ध दीक्षा देता है तो वह गलत है। इससे मैं सहमत हूँ। परन्तु कोई माता-पिता अपना लड़का दीक्षा ले, उस हेतु प्रयत्न करे और वह तैयार हो जाय और आचार्य दीक्षा दे उसमें जरा भी गलत नहीं है।

छोटे बालक कम समझने वाले हैं, उन्हें दीक्षा किस तरह से दी जा सकती है? इसका जवाब मैं देता हूँ। उसके पहले तुम मुझे समझाओ कि बाल दीक्षा क्यों नहीं दी जा सकती है? **(क्रमशः)**

विनम्र अनुरोध

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका के समस्त सदस्यों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रमोद हो रहा है कि 'जिनवाणी' परिवार आपके एवं आपके परिवार की खुशियों में शामिल होने जा रहा है। जिनवाणी परिवार जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि पावन प्रसंगों पर आपको बधाई संदेश प्रेषित करने का इच्छुक है।

अतः आप सभी सदस्यों से विन्रम अनुरोध है कि आप अपनी एवं परिवार के सभी सदस्यों की जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि की तारीख जिनवाणी कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करावें। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

विचार

फाल्गुनी चौमासी पर्व पर सन्तों के अभिव्यक्त विचार

मण्डावर जिला-दौसा में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की पावन सन्निधि में फाल्गुनी चौमासी (होली) पर सन्तों एवं महासती मण्डल ने जो विचार व्यक्त किए उन्हें संक्षेप में श्री जगदीश जी जैन अध्यापक ने सुलभ कराया है।-**सम्पादक**

पाप से बचने के दो उपाय हैं- (1) आत्मबोध और (2) अपराध बोध। आत्मबोध या अपराध जगने पर ही व्यक्ति पाप से, भूल से बचता है। आज की फाल्गुनी चौमासी हमें आत्मबोध करा रही है। अनादिकाल की भूल को मिटाने के लिये हमें आत्मबोध और अपराधबोध जगा लेना है। जैसे ही आत्मबोध या अपराध बोध जगता है, जीव जागृत हो जाता है। भूल को नहीं सुधारकर भूल को अधिक बढ़ाने वाला दुरात्मा होता है तथा भूल को सुधारने वाला महात्मा होता है और भूल ही नहीं करने वाला परमात्मा होता है। भूतकाल का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक, भविष्यकाल के प्रत्याख्यान करके हम भूतकाल के संसारी से वर्तमान काल के साधक और भविष्य में सिद्ध बनने की तैयारी करें। **-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.**

अनन्त उपकारी पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में रंगों का यह पर्व हमारे जीवन को रंगीन बनाने आया है। जैसे ज्वर का शमन करने के लिये उपचार स्वरूप गोली है, अंधकार को मिटाने के लिये प्रकाशवान दिवाली है, ऐसे ही गर्व मिटाने के लिये, भीतर में निहित दोषों को, अवगुणों को निकालने वाला यह आज का पर्व होली है। जिस लक्ष्य व उद्देश्य से आप पूज्य गुरु भगवन्त को क्षेत्र में लाये हैं, उसे पूरा करें। पूज्य गुरुदेव के चरणों में अपने दोषों की भेंट चढ़ाकर पावन प्रवास का सुलाभ लें, क्योंकि ऐसा अवसर बार-बार मिलने वाला नहीं है। **-महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.**

आज आपको अरिहंत बनाने वाले गुरु भगवन्त का अनुपम सान्निध्य मिला है। प्रवचन तो बहुत सुने हैं, पर जीवन में आंशिक परिवर्तन भी नहीं आ रहा है। आज परिवार में शांति तो दूर, पति-पत्नी भी आपस में आये दिन झगड़ रहे है। शांतता से जीवन जीना सीखें।

-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

अतिक्रमण से हटकर प्रतिक्रमण की प्रेरणा करने वाला फाल्गुनी चौमासी पर्व उपस्थित

है। अतिक्रमण करने वालों को परमाधामी देवों की आशातना सहन करनी पड़ती है। प्रतिक्रमण करने वाला परमेश्वर पद प्राप्त करता है। आप अवगुणों का नाश कर गुणों का विकास करें। आज आप सब चौमासा लेने की भावना से आये हैं। पर चौमासे से पहले अपनी तैयारी कर लें। पाप का प्रायश्चित्त कर शुद्धि की जा सकती है, पाप को जलाया जा सकता है। आप पूज्य गुरुदेव की देशना सुनकर जीवन को कल्याणकारी बनायें।

-महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

दृष्टि जब तक नहीं बदलेगी, तब तक सृष्टि बदलने वाली नहीं है। होली मनाने के नज़रिये भी अलग-अलग हैं। कुछ वर्षों पूर्व कीचड़ उछालकर या व्यक्ति को कीचड़ में पटककर होली मनाने की पद्धति रही है। अनाड़ी मूर्खों के लिये यह पर्व 'बुरा ना मानो होली है' कहकर अनपेक्षित व्यवहार करने का, रागियों की दृष्टि में मौज-मस्ती करने का, भांग घोटकर पीने का, भोगियों की नज़र में विलासिता करने या छेड़खानी करने का दिन हो सकता है, पर धर्मियों के लिये यह साधना-आराधना करने का पर्व है। जिसकी जैसी दृष्टि होती है वह वैसी भावना से पर्व मनाता है। कोई भांग, गांजा, ठण्डाई आदि लेने वाले भी हैं तो धर्मध्यान की सम्पूर्ति करने वालों का पर्व भी है। धर्मी लोग धर्म आराधना की संगति का लाभ मिले, इस भावना से चातुर्मास की प्रार्थना के लिये हर साल उपस्थित होते हैं। आज भी कई संघ उपस्थित हैं। हमारी भावना भी यही रहती है कि धर्म जागरणा के लिये क्षेत्रों की पूर्ति हो। धर्म के क्षेत्र में विशालता-उदारता रहनी चाहिए, संकीर्णता नहीं। खंदक ऋषि वैष्णव होते हुए भी भगवान महावीर के चरणों में आराधना करता है, ऐसा आदर्श पूर्व में रहा है। आज भी ऐसे साम्प्रदायिक सौहार्द की आवश्यकता है। 40 वर्ष पहले हम इस क्षेत्र में आये थे। उस समय सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की थी। सामायिक करना प्रारम्भ भी हो गया था, लेकिन आज स्थिति भिन्न दृश्यमान हो रही है। मुँहपत्ती लगाने वालों की संख्या अल्प रह गई है। चाहे मंदिर वाले हों, तेरापंथी हों या स्थानकवासी, सभी में सामायिक की महत्ता रही है। आप यदि जैन हैं तो एक घण्टे की साधना धर्मस्थान में आकर करें। सहज ही 18 पापस्थान का त्याग हो जायेगा। जैन आस्रव का त्याग करने का लक्ष्य रखता है। जैन होकर सामायिक नहीं करोगे तो कौन करेगा? चित्त की शान्ति एवं जीवन की उन्नति के लिए सामायिक करें। सामायिक के माध्यम से ज्ञान-दर्शन-चारित्र में चरण बढ़ाइए। तिरने-तारने वाले तीर्थ में शामिल होकर धर्म प्रवृत्ति से जुड़कर आगे बढ़िए, इसी मंगल भावना के साथ।

-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

'जिनवाणी' पत्रिका को मूल्यपरक मौलिक रचनाएँ प्रेषित करें।-**सम्पादक**

कविता

समाधान भगवान से

श्री प्रमोदचन्द महनोत

एक दुविधा थी कि
उस दिन कुछ काम नहीं था,
पर मन फिर भी शान्त नहीं था
दुनिया भर की सोच रहा था
पर अपने से बेसुध था।
मुझे मालूम है-
स्वास्थ्य खोया तो धन पाया
पर धन खर्चा तो स्वास्थ्य न आया।
भागे वैभव के पीछे, आकाँक्षाएँ पूर्ण करने
पर बढ़ती ही गई इच्छाओं की बेल
संतोष नहीं है जीवन में
सोचा हृदय-स्थल पर विराजित भगवान से पूछूँ
किया हाथ जोड़ सविनय 'नमंसामि मत्थएण वन्दामि'
अन्तर्यामी ने फरमाया-
सीमित कर ले इच्छाओं को
तो ही शान्ति पायेगा, वरना
इच्छा पूर्ति में सारा जीवन निकल जायेगा
और तू खाली हाथ चला जायेगा।
भले ही ये सपना हो, पर जीवन का 'सच' था,
सिर्फ 'सच' था,
सारगर्भित 'सच' था,
अन्तिम 'सच' था।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

बाल-स्तम्भ

उत्तराध्ययन सूत्र से सम्बद्ध संक्षिप्त कथाएँ

संकलन : श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्य रत्न'

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मई 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

---

(1)

अरिष्टनेमी

पशुओं की पुकार ने करुणा का मार्ग बताया

राजा समुद्रविजय के चार पुत्र थे। उनमें से अरिष्टनेमी सबसे बड़े थे। राजा उग्रसेन की पुत्री राजीमती से उनका विवाह निश्चित हुआ था। जब वे विवाह मण्डप के निकट पहुँचे तो विवाह की खुशी में बजाये जाने वाले वाद्यों के बीच भी उनको बाड़ों और पिंजरों में बंद पशु-पक्षियों का कोलाहल सुनाई दिया। उन्होंने सारथी से पूछा-"ये पशु-पक्षी क्यों बंद कर रखे हैं?" उसने उत्तर दिया-"महाराज! आपके विवाह के उपलक्ष्य में भोज दिया जाएगा, उसी के लिए इन पशु-पक्षियों को बंद कर रखा है। उनका मांस बारातियों को परोसा जायेगा।" अरिष्टनेमी ने सुना तो आगे नहीं जा सके। उन्होंने सारथी को सभी पशु-पक्षियों को छोड़ने की आज्ञा दी तथा बारात को छोड़कर लौट गये। करुणा के सागर अरिष्टनेमी विरक्त होकर मुनि बन गए। बाद में उनके छोटे भाई रथनेमी तथा राजकुमारी राजीमती भी दीक्षित हुई।

- उत्तराध्ययनसूत्र, अध्याय 22 के आधार पर

(2)

नमिराजर्षि

जहाँ अनेक है, वहाँ दुःख है, पीड़ा है,जहाँ एक है, वहाँ शान्ति है

मिथिला के राजा नमि एक बार छह मास तक दाह ज्वर से पीड़ित रहे। अनेक उपचार कराये, पर कोई लाभ नहीं हुआ। एक वैद्य ने शरीर पर चंदन का लेप बताया। रानियाँ चंदन घिसने लगीं। चंदन घिसते समय हाथों के कंगन परस्पर टकराये, राजानमि कंगन की आवाज सहन नहीं कर सके। रानियों ने सौभाग्यसूचक केवल एक-एक कंगन रखा, बाकी सब उतार दिये। आवाज बन्द हो गई। राजा ने पूछा- "क्या चंदन घिसना बंद कर दिया?" रानियों ने कहा- "सबने केवल एक-एक कंगन रखा है। अतः आवाज बंद हो गई।"

राजा के मन के भाव बदल गए। वह सोचने लगा, जहाँ अनेक है, वहाँ संघर्ष है, दुःख है, पीड़ा है, जहाँ एक है वहाँ पूर्ण शान्ति है। जहाँ शरीर, मन, धन और परिवार है वहाँ दुःख है। जहाँ केवल एक आत्मभाव है, वहाँ दुःख नहीं है। राजा संसार से विरक्त हो गया।

देवराज इन्द्र ब्राह्मण के वेष में राजा की परीक्षा लेने आया। उसने दस प्रश्न पूछे। राजा ने सबका सुन्दर रीति से समाधान किया। अंत में राजा ने कहा-"बाहर के हजारों शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा केवल एक अपनी आत्मा को जीतना बहुत कठिन है। वही वास्तविक विजय है।" नमि राजर्षि की त्यागवृत्ति से इन्द्र प्रभावित हुआ और अपने असली रूप में प्रकट हो, उन्हें वन्दन कर उनसे क्षमा मांग कर चला गया।

(उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय-9)

(3)

हरिकेशिमुनि

चाण्डाल भी आध्यात्मिक विकास कर सकता है

पूर्वजन्म के जातीय अहंकार के कारण हरिकेशीबल चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुआ। वह शरीर से कुरूप तथा स्वभाव से क्रूर था। एक दिन वह एक बड़े उत्सव में गया। वहाँ एक भयंकर सर्प निकला। लोगों ने उसे तत्काल मार दिया। थोड़ी देर में एक अलसिया निकला, लोगों ने उसे मारा नहीं, दूर फेंक दिया। वह सोचने लगा- "क्या मेरी क्रूरता के कारण ही सब मुझे मारते हैं। मुझे दयालु बनना चाहिये।" उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ और वह मुनि हो गया। वह साधना और तप में संलग्न हो गया। एक दिन वह एक उद्यान में ठहरा था। वहाँ एक वृक्ष पर एक यक्ष रहता था। वह मुनि के तप से प्रभावित होकर उनकी सेवा करने लगा। एक दिन राजा की राजकुमारी आई। उसने घृणा से उन पर थूक दिया। यक्ष क्रोधित हुआ

और उसने राजकुमारी को बीमार कर दिया। राजा के आने पर यक्ष ने कहा- "इसे कोई ठीक नहीं कर सकता। अगर वह मुनि से विवाह करे तो मैं ठीक कर दूँगा।" राजा ने यह बात स्वीकार कर ली, लेकिन मुनि ने कहा कि मैं विरक्त हूँ, मैं शादी नहीं कर सकता। यक्ष ने दया करके राजकुमारी को ठीक कर दिया।

एक दिन मुनि मासोपवास की तपस्या करके एक यज्ञमण्डप में भिक्षार्थ पहुँचे। ब्राह्मणों ने उनका अपमान किया तथा भिक्षा नहीं दी। यक्ष ने ब्राह्मणों को प्रताड़ित किया तथा कहा कि ये महान् तपस्वी भिक्षु हैं, इनका अपमान मत करो। ब्राह्मणों ने क्षमा मांगी। मुनि ने यज्ञ का वास्तविक स्वरूप समझाया तथा उनको बोध दिया। *(उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय-12)*

(4)

महानिर्ग्रंथ

तुम स्वयं अनाथ हो, तुम मेरे नाथ कैसे बन सकते हो?

एक बार राजगृह के निकट एक उद्यान में राजा श्रेणिक घूमने गए। वहाँ राजा ने एक वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए एक तरुण मुनि को देखा। मुनि के रूप और सौंदर्य को देखकर राजा आश्चर्यचकित हो गया। उसने मुनि से पूछा- "तुम युवावस्था में हो, यह उम्र सांसारिक सुख भोगने के लिये है। तुम मुनि कैसे बन गए?"

मुनि ने कहा- "राजन्! मैं अनाथ हूँ।" मुनि के उत्तर पर राजा ने कहा- "मैं तुम्हारा नाथ बनता हूँ। तुम मेरे राजमहल में चलो। मैं तुम्हें सब प्रकार की सुख-सुविधाएँ प्रदान करूँगा।" मुनि ने कहा- "राजन्! तुम स्वयं अनाथ हो। तुम मेरे नाथ कैसे बन सकते हो?" श्रेणिक ने कहा- "मैं मगध का राजा हूँ। मैं अनाथ कैसे हूँ?" मुनि ने कहा- "आप अनाथ और सनाथ की परिभाषा नहीं जानते। धन-सम्पत्ति और ऐश्वर्य होने मात्र से कोई सनाथ नहीं होता। मैं अपने पिता का प्रिय पुत्र था। पिता के पास ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं थी। किन्तु एक समय मेरी आँखों में तीव्र वेदना हुई। बड़े-बड़े चिकित्सक आए, पर वे मेरी वेदना को ठीक नहीं कर सके। मेरी माँ, बहन और पत्नी ने मेरी खूब सेवा की, पर पीड़ा कम नहीं हुई। मेरा कोई त्राण नहीं था, यही मेरी अनाथता थी।"

एक दिन रात को मैंने चिन्तन किया- "ये धन, परिजन आदि सब मिथ्या हैं। इनका आश्रय छोड़े बिना मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। मैं प्रातः होते ही सब संग छोड़कर मुनि बन जाऊँगा। और दूसरे दिन मैं मुनि बन गया तथा अक्षिपीड़ा भी दूर हो गई।" राजा ने श्रद्धापूर्वक मुनि को वंदना की और ध्यान में बाधा डालने के लिए क्षमा मांगी।

(उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय-20)

प्रश्न:-

1. अरिष्टनेमी के विवाह नहीं करने का निर्णय लेना क्या उचित था?
2. 'जहाँ एक है वहाँ शान्ति है' - अभिप्राय समझाइये।
3. हरिकेशीबल किस कारण से चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुआ।
4. जातिस्मरण ज्ञान से क्या तात्पर्य है।
5. अनाथ और सनाथ किसे कहते हैं?
6. ब्राह्मणों ने हरिकेशी मुनि को भिक्षा क्यों नहीं दी?

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2015] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'जीना सीखें Alphabate से' रचना के प्रश्नों के उत्तर 26 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	19
द्वितीय पुरस्कार-300/-	हर्ष भण्डारी-पीपाड़ शहर(राज.)	18.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	रजत जैन-सुवासरा-मन्दसौर (मध्यप्रदेश)	18
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	17.5
	लक्की कांकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	17.5
	भव्या भण्डारी-ब्यावर (राज.)	17
	अंशुल कचोलिया-बैंगलुरु (कर्नाटक.)	16
	प्रीतम रांका-भीलवाड़ा (राज.)	15.5

सुख-शान्ति

संकलयिता : श्री पीरचन्द चोरडिया

धन-दौलत पाकर भी सेवा, अगर किसी की कर न सका।
दया भाव ला दुःखित दिलों के, ज़ख्मों को जो भर न सका।।
वह नर अपने जीवन में, सुख-शान्ति कहाँ से पायेगा।
ठुकराता है जो औरों को, स्वयं ठोकरें खायेगा।।
रोता आया मानव जग में,अच्छा हो अब हँसता जाए।
और दूसरे रोतों को भी, जैसे बने हँसाता जाए।।

-सुतरखाना, नयाबास, जोधपुर-342001 (राज.)

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें (चतुर्थ प्रतियोगिता)

श्री अनुत्तरौपपातिक (अनुत्तरोववाइय) सूत्र प्रतियोगिता

आगम का स्वाध्याय जीवन-निर्माण एवं आत्मकल्याण का हेतु है। आगम में जानने योग्य, ग्रहण करने योग्य एवं छोड़ने योग्य विषयों का निरूपण प्राप्त होता है। जानने योग्य तो सभी विषय हैं, किन्तु जो अहितकर है वह छोड़ने योग्य तथा जो आत्मा के लिए हितकर है वह ग्रहण करने योग्य है। ज्ञेय, हेय एवं उपादेय का बोध कराने के लिए आगमों पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उसी क्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 'आओ स्वाध्याय करें' शीर्षक से 'द्विमासिक आगम प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता के अन्तर्गत इस बार 'अनुत्तरौपपातिक सूत्र' पर प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का स्वरूप इस प्रकार है-

1. इस प्रतियोगिता का आयोजन पाँच संभागों के आधार पर किया जाएगा- 1. पल्लीवाल क्षेत्र, दिल्ली, पंजाब क्षेत्र, 2. मारवाड़, गुजरात क्षेत्र, 3. कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश क्षेत्र, 4. जयपुर, पोरवाल क्षेत्र, मध्यप्रदेश क्षेत्र, 5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र।
2. प्रत्येक संभाग में 15-45 वर्ष तक एवं 45 वर्ष से अधिक के दो आयु वर्ग के ग्रुप रहेंगे, जिनमें प्रत्येक ग्रुप में प्रथम विजेता को- 1100/- रुपये, द्वितीय को- 500/-रुपये, तृतीय को-250/- रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।
3. इस प्रतियोगिता में कम से कम एक व्यक्ति एवं अधिकाधिक पाँच व्यक्तियों तक का ग्रुप भाग ले सकता है। प्रत्येक व्यक्ति एवं ग्रुप होने पर ग्रुप के प्रत्येक सदस्य का नाम एवं आयु का उल्लेख अपने उत्तर पत्रक के साथ करना आवश्यक है। उत्तर अन्तर्देशीय पत्र अथवा लिफाफे में भेजें।
4. प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दें।

आशा है आप इसमें पूर्ण उत्साह से भाग लेकर अपने आगम-ज्ञान का वर्धन करेंगे। उत्तर-पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 5 जून, 2015 है। ग्रुप वालों को संभाग क्रम से अलग रखकर पुरस्कृत किया जायेगा।

उत्तर भेजने का पता- श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर-342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141-40373

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री राजीव जी नाहर, सूरत-093751-65765

विशेष- Whatsapp पर भी युवक-परिषद् के सदस्यों द्वारा जिज्ञासा-समाधान का कार्य किया जा रहा है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्र के आधार पर दीजिए-

1. श्री अनुत्तरौपपातिक सूत्र के कितने वर्ग हैं व एक-एक वर्ग में कितने अध्ययन हैं?
2. तीनों वर्ग में किसका उल्लेख है?
3. इस सूत्र में विशेष कर्म-निर्जरा करने वाले साधक का नाम क्या है? वह काल, वह समय शब्द आगम में जहाँ-जहाँ आया, वहाँ-वहाँ उसका क्या अर्थ करना?
4. आर्य सुधर्मा स्वामी कौन-सी नगरी में पधारे थे व उनके कौनसे शिष्य प्रभु की वाणी सुनने के लिए उत्सुक थे?
5. इस सूत्र का समावेश अंग, उपांग, मूल एवं छेदसूत्र में से किसमें किया गया है तथा इसमें कितने महापुरुषों का वर्णन है?
6. प्रथम वर्ग में आए राजकुमारों के नाम लिखिए, ये सभी कितनी कला में निपुण थे?
7. जालि आदि सभी कुमारों की संयम पर्याय कितनी थी?
8. जालि आदि सभी का शास्त्रोक्त अभ्यास कितना था?
9. जालि कुमार ने कौनसा तप किया व किस पर्वत पर संथारा किया?
10. मयालि आदि 9 कुमार कहाँ उत्पन्न हुए? विमानों के नाम लिखें?
11. जालि आदि सभी कुमार देवलोक की स्थिति पूरी करके कौनसे क्षेत्र से मोक्ष जायेंगे?
12. द्वितीय वर्ग में आए राजकुमारों के नाम क्या हैं?
13. उनकी दीक्षा पर्याय कितनी थी?
14. एक माह का संथारा करके वे सब कहाँ-कहाँ उत्पन्न हुए?
15. दसों राजकुमारों की माताओं के क्या नाम थे?
16. काकंदी के राजा कौन थे?
17. प्रभु की प्रथम देशना सुनकर धन्य कुमार ने क्या भाव व्यक्त किए?
18. भगवान ने धन्य कुमार की विनति का क्या उत्तर दिया?
19. धन्यकुमार ने स्वयं के संयम की भावना व्यक्त की तब उनकी माता पर क्या प्रभाव हुआ, माता ने क्या कहा?
20. माता की भावना को जानकर धन्यकुमार ने क्या प्रत्युत्तर दिया?

21. भद्रामाता धन्य कुमार के दीक्षा महोत्सव के लिए जितशत्रु राजा के पास किसकी याचना करने गई ?
22. धन्यकुमार का पंचमुष्टि लोच किसने किया ?
23. धन्यकुमार ने प्रव्रजित होते ही उसी दिन भगवान के पास किसकी अनुज्ञा माँगी ?
24. भगवान ने साधक को किस तरह का आहार करने की आज्ञा दी है ?
25. धन्य अणगार का शरीर तप द्वारा कैसा बन गया था ?
26. तपाग्नि से तपे हुए धन्य अणगार ने कितना अभ्यास किया ?
27. धन्य अणगार ने प्रव्रजित होकर उसी दिन कौनसा तप प्रारम्भ किया ?
28. धन्य अणगार का शरीर तप द्वारा कैसा चमकता था ?
29. धन्य अणगार के पैर को किसकी उपमा दी गई ?
30. उनके हाथ व पैर की अँगुलियाँ कैसी थीं ?
31. तपस्वी धन्य अणगार की जंघा कौन-कौन से पक्षी के साथ समान है।
32. तपस्वी धन्य अणगार के घुटने किसके साथ साथ समान हैं ?
33. तप द्वारा धन्य अणगार का उरु (घुटनों का ऊपरी प्रदेश (जांघ)) का लावण्य कैसा हो गया था ?
34. तप द्वारा धन्य अणगार की कमर कैसी हो गई थी ?
35. तप द्वारा धन्य अणगार का पेट कैसा लगता था ?
36. तपस्वी धन्य अणगार की पसलियाँ कैसी लगती थी ?
37. तपस्वी धन्य अणगार की पीठ कैसी हो गई थी ?
38. तपस्वी धन्य अणगार का वक्षस्थल कैसा था ?
39. तपस्वी धन्य अणगार के बाहु को किसकी उपमा दी है।
40. तपस्वी धन्य अणगार की गर्दन कैसी लगती थी ?
41. तप द्वारा धन्य अणगार की भुजाएँ कैसी हो गई थी ?
42. तप द्वारा धन्य अणगार के आँख-नाक-कान कैसे हो गये थे ?
43. तपस्वी धन्य अणगार का मस्तिष्क कैसा दिखता था ?
44. गुणशील उद्यान में दर्शनार्थ पधारे श्रेणिक महाराज ने प्रभु से क्या प्रश्न किया ? उसका प्रभु ने क्या उत्तर दिया।
45. धन्य अणगार ने कितनी संयम पर्याय पाली ?
46. धन्य अणगार ने क़िस जगह कितने समय का संथारा किया ?

47. धन्य अणगार काल धर्म प्राप्त करके कहाँ उत्पन्न हुए व कितनी स्थिति प्राप्त की?

48. वेहल्ल कुमार की दीक्षा पर्याय कितनी थी?

49. वेहल्ल कुमार का दीक्षा महोत्सव किसने किया?

50. दसों कुमार किस से क्षेत्र से मोक्ष पधारेंगे?

आओ स्वाध्याय करें

श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पर आधारित प्रतियोगिता-द्वितीय का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आगम अध्ययन के लक्ष्य से जिनवाणी के माध्यम से प्रारम्भ की गई श्री ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र की प्रतियोगिता द्वितीय (दिसम्बर- 2014) में 189 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम संभागक्रम से इस प्रकार रहा-

संभाग/क्षेत्र	15 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
1. कर्नाटक/तमिलनाडु /आंध्रप्रदेश	(1) रेखा नंगावत-मैसूर	(1) हेमा बाघमार-बोलारम
	(2) मधुबाला सहलोत-मैसूर	(2) मनीषा कांकरिया-चेन्नई
		(3) पारस जैन-बैलारी
2. पल्लीवाल/दिल्ली /पंजाब	(1) मधुरिका जैन-गुडगाँव	(1) बबीता संचेती-अलवर
	(2) संजय कुमार जैन-भरतपुर	(2) अरुणा जैन-होशियारपुर
	(3) सुश्री जया जैन-भरतपुर	(3) सुरेशचन्द जैन-खेरली
3. मारवाड़/गुजरात	(1) सिमोना बोदिया-भोपालपुरा	(1) देवेन्द्रनाथ मोदी-जोधपुर
	(2) शैली मेहता-जोधपुर	(2) कमलादेवी सेठिया-मसूदा
	(3) ऋतु जैन-जोधपुर	(3) नरपतराज लोढ़ा-जोधपुर
4. जयपुर/पोरवाल/ मध्यप्रदेश	(1) कल्पना जैन-सवाईमाधोपुर	(1) नीलम जैन-जयपुर
	(2) चंचल गोलेछा-जयपुर	(2) नरेन्द्र लुंकड़-कोटा
	(3) मीनू जैन (मेहता)-जयपुर	(3) निशा लुंकड़-कोटा
5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र	(1) कविता श्रीमाल-नवी मुम्बई	(1) दीपचंद मिश्रीलाल जैन-पाचौरा
	(2) सौ. आरती मुथा-अमरावती	(2) सौ. भारती मंडलेचा-पूना
	(3) सौ. भावना छाजेड़-चांदवड	(3) मूलचंद जैन बागरेचा-वणी

6. ग्रुप में- (1) शशि कांकरिया, मनोज सेठिया, अभय सुराना, वीरेन्द्र कांकरिया-चेन्नई

(2) कविता डागा, नीलू कोठारी-जयपुर

(3) चंद्रलता मेहता, नीरा मेहता, प्रमिला महता, नीलम चौपड़ा, कंचन नाहर-दूदू
सरोज गोलेछा, साधना डोसी-सतावद
बुद्धिप्रकाश जैन, रखबचन्द सालेचा-भैंसोदामण्डी

परिणाम के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री गौतम जी जैन, पचाला-090010-17837

श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पर आधारित प्रतियोगिता द्वितीय के प्रश्नों के उत्तर

1. प्रभंकरा	2. रूपांशा	3. शिवा
4. वसुन्धरा	5. रूपा	6. पद्मा
7. मदना	8. निशुंभा/निरंभा	9. भारिका
10. काली	11. कूटाकार	12. कालिक
13. मथुरा	14. दावद्रव	15. सिंहगुफा
16. काल	17. अदीनशत्रु	18. आधा/आधे/अर्द्ध
19. तेतलिपुत्र	20. पोट्टिला	21. सूर्याभ
22. सुधर्मा	23. देवदत्ता	24. अहिच्छत्रा
25. पुण्डरीक	26. छठी/षष्ठ	27. नन्दीफल
28. कण्डरीक	29. सागर/सागरदत्त	30. कपिल
31. सुबुद्धि	32. सोलह रोगातंक	33. राजा पदमनाभ
34. बावडी का मेंढक	35. वासुदेव श्रीकृष्ण	36. धर्मघोष अणगार
37. पुण्डरीक	38. कनकध्वज	39. चिलातदास
40. चम्पानगरी	41. सिद्धि	42. तीतुर/तितिर
43. उदक	44. आहार	45. दीक्षा
46. गिरनार 536	47. धर्मरुचि अणगार	48. मिथ्यात्व
49. कण्डरीक	50. सर्वविराधक	

जिनवाणी पर अभिमत

श्री दुलीचन्द जैन

मैं 40 वर्षों से जिनवाणी का पाठक हूँ। आपकी पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख सुचिंतित एवं विचारोतेजक होते हैं। फरवरी-2015 में प्रकाशित आपका संपादकीय मुझे बहुत पंसद आया। खास तौर से परिग्रह भाव के दुष्परिणाम। इसके अतिरिक्त 'वीर पिता का दीक्षार्थी पुत्र के लिए संदेश'' बहुत ही मार्मिक था। पृष्ठ 114 पर आदरणीय प्रो. चाँदमलजी कर्णावट का परिचय भी प्रेरणादायक है। *-70, टी.टी.के.रोड़, अलावरपेठ, चेन्नई-600018*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जीव विचार विवेचन- आचार्य श्रीमद् विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा., ***प्रकाशक***- दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाइन्स (पूर्व), मुम्बई-400002 (महा.) फोनः 022-22034529, मोबाइल-098920-69330, ***पृष्ठ***-128+24, ***मूल्य***-60 रुपये, सन्-2014

प्रस्तुत पुस्तक वादिवेताल श्रीमद् शांतिसूरिजी म. द्वारा रचित 'जीव विचार' नामक प्रकरण-ग्रन्थ की सुन्दर विवेचना है। इस प्रकरण में 51 प्राकृत पद्य हैं। विवेचनकार ने प्रत्येक पद्य का शब्दार्थ एवं भावार्थ के साथ विस्तार से विवेचन किया है। पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक जीवों के क्रमशः 19,4,6,6 प्रकार तथा वनस्पतिकायिक जीवों के भेद-प्रभेद वर्णित हैं। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय में तिर्यंच, मनुष्य और देवों के बारे में भी विशेष वर्णन है। अढाई द्वीप, षट्खण्ड भरत क्षेत्र और चौदह राजूलोक रंगीन चित्रों में संयोजित हैं।

मार्गदर्शन- मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी, ***प्रकाशक***- गुरुश्री रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल (राज.), ***प्राप्ति स्थान***- शा. देवीचंद छगनलालजी, सुमति दर्शन, नेहरुपार्क के सामने, माघ कॉलोनी, भीनमाल-343029, फोन नं.-02969-220387, ***पृष्ठ***-197+8, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं

धर्म के विषय में युवा पीढ़ी के कई प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ होती हैं। इन जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयत्न इस ग्रन्थ में किया गया है ताकि वे अपने जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। कतिपय प्रश्न इस प्रकार हैं- धर्म कहाँ स्थित रहता है? क्या संसार की इच्छा से किए हुए धर्म का फल मिलता है?, दीक्षा के लिए आज्ञा न मिले तो क्या करना?, क्या सभी सम्प्रदायों की एकता की आवश्यकता है? पुस्तक लेखन कब से प्रारम्भ हुआ?, आत्मा सुखी कब बनता है?, कटुवचन कान में पड़ने पर क्या करना चाहिए?, क्या चित्त-शुद्धि दुष्कर है? आदि। अन्त में 'अखण्ड ज्योति' से विभिन्न प्रकार के किस्सों का भी समावेश यहाँ किया गया है।

मंगल अनुभूति- शिखरचन्द छाजेड़, ***प्रकाशक***- जैन चेरिटीज, जैन पाइप पार्क, जैन पाइप नगर, निमखेड़ी रोड़, जलगाँव-425001 (महा.), मोबाइल- 094240-55041,

पृष्ठ-122+22, ***मूल्य***- 151/- रुपये, सन्-2009

यह पुस्तक सहृदय कवि की अनुभूतियों का खज़ाना है। एक-एक अनुभूति मोती सदृश चमक से पाठकों को आकृष्ट करती है। गद्य और पद्य शैली में रचित रचनाओं का संकलन इसमें किया गया है। कुछ अनुपम मोतियों की छटाएँ इस प्रकार हैं- "छोटी सी जिन्दगी में क्यों किसी से कड़वा बोलूँ? बहाऊँ झरना, अमृत नीर, क्यों ज़हर को घोलूँ", "समय बीत रहा है घट रीत रहा है, सोया सो खोया। बस! जागा वह जीत रहा है", "जब कभी कोई करे तेरी बुराई तो समझ लेना- ये सबके सब तेरी आत्मा के चौकीदार हैं मेरे भाई"।

प्रभावशाली अहिंसक चिकित्सा पद्धतियाँ- डॉ. चंचलमल चोरड़िया, ***प्रकाशक***- कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, 'चोरड़िया भवन', जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.), फोनः-0291-2621454, 9414134606, ***मूल्य***-45/- (सहयोग राशि), ***पृष्ठ***-80, ***द्वितीय संशोधित संस्करण***- सन्-2015

आज के युग में स्वस्थ रहना सबसे बड़ी चुनौती है। ऐसी परिस्थितियों में प्रभावशाली प्राकृतिक एवं देशी चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी रखना अत्यावश्यक है। लेखक ने इस पुस्तक में एक्यूप्रेशर, चुम्बक, शिवाम्बु, सूर्य किरण, मेथी, तेल, जल, मुद्रा, स्वर, खिंचाव आदि चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी उपलब्ध करवाई है। अपने स्वास्थ्य को उत्तम रखने के लिए प्रयत्नरत पाठक वर्ग के लिए यह पुस्तक उपादेय है।

कौन हूँ मैं, कौन है मेरा?

सुश्री लक्ष्मी जैन

क्यूँ मैं आयी इस दुनियाँ में, क्या है मकसद मेरा,
कुछ भी तो पता नहीं मुझे कौन हूँ मैं, कौन है मेरा?
नहाना, धोना, खाना, पीना, सोना,
क्या यही है मेरी दिनचर्या?
पढ़ना-लिखना, पैसा कमाना,
और कुछ नहीं कर सकती क्या?
हर पल यही सोचती मैं रहती,
कौन हूँ मैं, कौन है मेरा?
अब तुम्हीं बताओ
कौन हूँ मैं, कौन है मेरा?

-रेलवे स्टेशन के पास, सोसायटी बैंक के सामने,
चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर-322702 (राज.)

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(31 मार्च, 2015)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 खोह में विराज रहे हैं। खेरली की ओर विहार सम्भावित है।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर के जगदीश कॉलोनी स्थित स्थानक भवन में विराज रहे हैं। जयपुर में उनका विचरण चल रहा है।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 भरतपुर में विराज रहे हैं।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 10 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 जड़ाव में विराज रहे हैं। अग्र विहार अजमेर की ओर संभावित है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 शहतोकपुर विराज रहे हैं। अग्रविहार खेरली की ओर संभावित है।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 भरतपुर में विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 भीलवाड़ा विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 पिलोदा विराज रहे हैं। अग्रविहार गंगापुर की ओर सम्भावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9 गुजरात के अंकलेश्वर में विराज रहे हैं। सूरत की ओर विहार सम्भावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 7 कर्नाटक के बेलगाँव विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 गुलेजगढ़ विराज रहे हैं। अग्रविहार बागलकोट की ओर संभावित है।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 गेहनोली विराज रहे हैं।

अग्रविहार मण्डावर की ओर संभावित है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5** कोरना विराज रहे हैं। अग्रविहार आगोलाई की ओर संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 5** दुब्बी विराज रहे हैं। अग्रविहार काला खोह की ओर संभावित है।
- **महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3** कोपल (कर्नाटक) पधारे हैं।
- **महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3** इलकल विराज रहे हैं।

आचार्यप्रवर द्वारा मण्डावर, हरसाना, मौजपुर आदि क्षेत्र लाभान्वित

लगभग 50 आजीवन शीलव्रती एवं सैकड़ों रात्रिभोजन-त्यागी बने

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, पोरवाल-पल्लीवाल क्षेत्र के उद्धारक, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरसव्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 का विचरण विहार पल्लीवाल क्षेत्र में चल रहा है। पूज्य गुरुदेव का 1 मार्च को प्रातः रसीदपुर से विहार बरसात के कारण 11 बजे के लगभग हो पाया एवं सायं पूर्व नंगला मीणा (मण्डावर रोड़) पहुँचे। जयपुर से U Turn के 20 से अधिक भाई-बहिन तथा सोनीपत से आगत दर्शनार्थियों ने पूज्य श्री के दर्शन-वन्दन-सेवा का लाभ लिया।

2 मार्च को पूज्यप्रवर का मंगलमय पदार्पण 100-125 के लगभग भाई/बहनों की जयघोष के साथ मण्डावर में हुआ। संघसेवी श्री हरिप्रसाद जी जैन वर्षों से पूज्य गुरुदेव के पधारने की राह देख रहे थे। पूज्यश्री के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण करने की उनकी अंतरंग भावना थी, पर कुछ दिन पूर्व ही उनका समाधिमरण हो गया। मण्डावर में पूज्यश्री का 15 दिन विराजना हुआ। समीपस्थ क्षेत्रों से पल्लीवाल भाइयों के पधारने व दर्शन लाभ लेने का क्रम अनवरत बना रहा। बड़ौदा मेव गढ़ी, बिचगांवा, हरसाना, लक्ष्मणगढ़, मौजपुर, खोह, नदबई, बड़ौदाकांन आदि क्षेत्र शेखेकाल में फरसने की विनति लेकर उपस्थित हुए। 3 मार्च को सुमेरगंज मण्डी व प्रतापनगर-जयपुर संघ चातुर्मास की विनति लेकर श्री चरणों में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने मण्डावर संघ को भगवान आदिनाथ के जन्मकल्याणक एवं खोह संघ को भगवान महावीर के जन्मकल्याणक का लाभ देने की स्वीकृति फरमाई। 4 मार्च को उमरगांव रोड़ संघ चातुर्मास की भावना से उपस्थित हुआ। 5 मार्च को फाल्गुनी चौमासी पर प्रमोदजन्य उपस्थिति रही। 17 तेले, उपवास तथा एकाशन की आराधना हुई। सभा का संचालन श्री अशोक जी जैन ने किया। धर्मसभा में जयपुर, कोटा, सवाईमाधोपुर आदि 33

स्थानों से भाई-बहिन उपस्थित थे। 6 मार्च को सोरापुर संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। 8 मार्च को अनेक संघों की उपस्थिति में सम्वत् 2072 के 19 चातुर्मासों की घोषणा के साथ मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा सुपुत्र श्री उसबराज जी सालेचा-हुबली (कर्नाटक मूलनिवासी जेठन्तरी) की जोधपुर में 25 अप्रेल को भागवती दीक्षा की स्वीकृति फरमाई। 11 मार्च को वीर पिता श्री विजयराज जी खींवसरा-निवासी माण्डल पूज्य श्री की सेवा में पधारे एवं ज्ञानार्थिनी बहिन नेहाजी खींवसरा का आज्ञा पत्र पावन श्री चरणों में प्रस्तुत किया। 12 मार्च को जयपुर की धर्मप्रेमी सुश्राविका श्रीमती शकुन्तला जी बोथरा के स्वर्गवास पर उनके पीहर पक्ष से परिजन मांगलिक श्रवणार्थ उपस्थित हुए।

14 मार्च को भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक व पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 77 वां जन्मदिवस सामूहिक उपवास की साधना के साथ वर्षा की झड़ी लगी रहने के बावजूद उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। मण्डावर में अधिकांश भाई-बहनों के उपवास थे। इस दिन 55 भाई-बहनों ने 108 व भाई अमित जी सुपुत्र श्री टीकमचन्दजी नदबई वालों ने 1008 बार तिक्खुत्तो के पाठ से सविधि वन्दन कर गुरुदेव के जन्मदिन पर श्रद्धा भक्ति का अर्घ्य अर्पित किया। 15 मार्च को भी दिन भर बरसात का मौसम रहा। पीपाड़सिटी संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। 16 मार्च को मंदिरमार्गी महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. आदि ने दर्शन लाभ लिया। मण्डावर संघ की स्वधर्मी वात्सल्य भावना प्रमोदजन्य रही। श्री वीरेन्द्र जी जैन जयपुर, श्री किशनचन्द जी जैन (संघाध्यक्ष), श्री महेन्द्रजी जैन (बंगाली), श्री अशोककुमार जी जैन, श्री गजानन्दजी जैन एवं युवारत्नों में श्री सुविधकुमारजी जैन, भूपेन्द्र जी जैन, अनिलजी जैन, राकेश जी जैन, दिलीप जी जैन, प्रदीप जी जैन, पारसजी जैन, हार्दिकजी जैन, रोहित जी जैन की सेवाएँ प्रमोदजन्य रही।

17 मार्च को पूज्यश्री खेड़ा मंगलसिंह तथा 19 व 20 मार्च को बिचगांवा विराजे। यहाँ किशनगढ़-मदनगंज से जामड़ परिवार दर्शनार्थ आए। 21 मार्च को हरसाना की वीर भूमि पर 150 से अधिक भाई-बहनों के जयघोष के साथ पूज्य श्री का पदार्पण हुआ। श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. की यह सांसारिक जन्मभूमि है। वीर पिता श्री शिवदयालजी, वीर भ्राता श्री मनीषजी की वर्षों से पूज्य गुरुदेव के पधारने व विराजने की भावना सफलीभूत हुई। हरसाना में पाँचों ही दिन जैन-अजैन भाई-बहनों का दिन भर दर्शन-सेवार्थ आने का तांता लगा रहा। प्रवचन में प्रतिदिन 250-300 से अधिक की उपस्थिति रही। सीमित घरों में इतनी संख्या का होना उनकी भक्ति भावना का परिचायक है। पाँचों ही दिवस हर्ष और उल्लास का सुन्दर वातावरण रहा। श्रद्धालुओं ने पाँच दिनों में 36 आजीवन शीलव्रती बनाकर पूज्य गुरुदेव के प्रवास को ऐतिहासिक एवं स्वर्णिम बना दिया। प्रवास काल में श्री जिनेश्वर जी बक्शी, श्री

शिवदयाल जी जैन, श्री राजेन्द्र जी जैन, श्री मनीषकुमारजी जैन, श्री अनुज कुमार जी जैन, श्री अरुण जी जैन, श्री सुरेश जी जैन, श्री निजाम खाँ, श्री विजन जी बागड़ी, श्री जितेन्द्र जी शर्मा, श्री दीपचन्द जी जैन, श्री अशोक जी जैन, श्री बच्चू जी जैन, श्री सुभाष जी जैन (लालाजी) आदि की सेवाएँ प्रमोदजन्य रहीं। 22 मार्च को एक साथ 12 शीलव्रत के खंध हुए, जो एक रिकार्ड है। 24 मार्च को मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा अपनी माता श्रीमती शोभनादेवी एवं पिताश्री उसबराज जी सालेचा के साथ पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए। हरसाना संघ की ओर से उनकी शोभायात्रा निकाली गई एवं धर्मसभा में बहुमान किया गया।

25 मार्च को हरसाना संघ व कुशतला संघ ने चातुर्मास की विनति पावन श्री चरणों में रखी। पूज्यश्री ने महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का पीपाड़ व महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास सोरापुर के लिये फरमाया। पूज्य आचार्य श्री, श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने संयम मार्ग का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए मुमुक्षु श्री अविनाश जी के संयम पथ पर अग्रसर होने व उनके माता-पिता के संघ के प्रति समर्पण पर आशीर्वचन फरमाया। हरसाना संघ की आतिथ्य सत्कार भावना प्रमोदजन्य रही।

पूज्य गुरुदेव मौजपुर में 26 व 27 मार्च को विराजे। नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. के वीर पिता श्री महावीरचन्द जी, वीरमाता श्रीमती मंजूदेवीजी, वीर चाचा श्री गिर्राजजी जैन व समस्त परिवारजनों तथा अनन्य गुरुभक्त श्री हरीशचन्द्र जी जैन ने भावभक्ति पूर्वक सेवा का लाभ लिया। 28-29 मार्च को लक्ष्मणगढ़ में धर्मजागरणा कर 30 मार्च को पटावपुर फरसते हुए 31 मार्च को खोह पधारे। यहाँ महावीर जयन्ती का पर्व पूज्यश्री के सान्निध्य में होना संभावित है।

पूज्य गुरुदेव के द्वारा विचरित क्षेत्रों की यह विशेषता रही कि सामायिक की प्रेरणा करने पर वहाँ के क्षेत्रवासियों ने सामायिक करना प्रारम्भ कर दिया है। शीलव्रत के खंध हुए हैं। बीड़ी-गुटखों का त्याग भी विपुल संख्या में भाइयों ने करके व्यसन मुक्ति अभियान में सहकार किया है।

उपाध्यायप्रवर द्वारा घोड़ों का चौक तथा शासनप्रभाविकाजी द्वारा पावटा स्थानक में धर्मप्रभावना

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में जोधपुर नगर के घोड़ों का चौक एवं पावटा स्थानक में निरन्तर धर्मप्रभावना का लाभ मिल रहा है। 1

मार्च को सरदारपुरा नेहरूपार्क क्षेत्र में चातुर्मास हेतु उपाध्यायप्रवर के समक्ष भावभरी विनति प्रस्तुत की गई। 5 मार्च को फाल्गुनी चौमासी के अवसर पर 50-55 दया-संवर, 15 उपवास एवं 10 पौषध हुए। जयपुर, पीपाड़, पाली आदि क्षेत्रों से दर्शनार्थियों का आगमन हुआ। इन दिनों मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र के 21 वें अध्ययन पर तथा श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. दशवैकालिक के छठे अध्ययन पर प्रवचन फरमा रहे हैं। चैत्र कृष्णा अष्टमी 14 मार्च 2015 को आदिनाथ जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वां जन्म-दिवस तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। लगभग 50 दया-संवर, 20 एकाशन एवं एकान्तर तप की आराधना हुई। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनिजी म.सा. ने आदिनाथ प्रभु कृत लोकोद्धार तथा आचार्यप्रवर के उपकारों का स्मरण किया। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर हीरा को सुपर डाइमण्ड की भाँति बताते हुए रात्रिभोजन त्याग, आजीवन शीलव्रत, व्यसनमुक्ति आदि अभियानों की चर्चा की। व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. ने पूज्य आचार्यप्रवर हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन पर प्रकाश डालते हुए- 'ऐसे हीरा गुरुवर महान्' भजन प्रस्तुत किया। व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा. ने अपनी भावभीनी श्रद्धा अर्पित करते हुए पूज्य आचार्य श्री हीरा के गुणों का स्मरण किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने पूज्य आचार्य श्री हीरा के आचार्य पदारोहण का रजत वर्ष उपस्थित होने के उपलक्ष्य में विशेष धर्माराधन हेतु प्रेरित किया तथा 25 अप्रेल को मुमुक्षु अविनाश जी सालेचा के दीक्षा-प्रसंग पर 11 शीलव्रती बनने हेतु प्रेरणा की। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन की तुलना उत्कृष्ट हीरे से की। हीरे की परीक्षा कट, कलर, क्लेरिटी एवं कैरट से की जाती है, उसी प्रकार पूज्य आचार्य हीरा इन चारों परीक्षाओं में खरे उतरते हैं। हीरा किस रूप में तराशा गया है, यह कट है। हीरे का रंग कैसा है, उसकी पारदर्शिता (क्लेरिटी) कैसी है तथा उसका वजन (कैरट) कितना है इस पर उसकी उत्कृष्टता निर्भर करती है। आचार्य हीरा आचार्य हस्ती के द्वारा तराशे गये हैं यह उनका कट है। वे आठ सम्पदाओं से सम्पन्न हैं, यह उनका रंग है। उनके वचन और व्यवहार में जो एकरूपता है वह उनकी पारदर्शिता है तथा उनके जीवन में आचरण का जो पक्ष है वह उनका कैरट है। आचार्य हीरा में निर्णय शक्ति गजब की है। वे जैसा अनुशासन रखते हैं, वैसा स्वयं भी पालन करते हैं। साधना की डायरी स्वयं भी नियमित भरते हैं।

19 मार्च को पाक्षिक पर्व के अवसर पर 50 दया-संवर एवं 7 पौषध हुए। 21 मार्च को नवसंवत्सर के अवसर पर श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने मैत्री एवं प्रमोदभावना को जीवन में अपनाने की प्रेरणा की। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने भव्ययात्रा एवं

भावयात्रा का निरुपण करते हुए नवसंवत्सर पर नव संकल्प हेतु प्रेरित किया। उन्होंने राजा विक्रमादित्य द्वारा किए गए उपकारों की भी चर्चा की। 27 मार्च को नवपद ओली का शुभारम्भ हुआ। प्रथम दिन 20-25 आयम्बिल हुए, जिनमें 10 व्यक्ति लगातार आयम्बिल कर रहे हैं। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने नवपद की आराधना का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि अरिहन्त की आराधना से अहिंसा, सिद्ध की आराधना से सत्य, आचार्य की आराधना से अचौर्य, उपाध्याय की आराधना से ब्रह्मचर्य तथा साधुपद की आराधना से अपरिग्रह गुण की पुष्टि होती है। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने चार गतियों में सम्यक्त्व प्राप्ति की चर्चा की।

श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी का जयपुर में विचरण

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जयपुर के विभिन्न उपनगरों में विचरण हो रहा है। जैन स्थानक झोटवाड़ा में फाल्गुनी चौमासी पर्व तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। वहाँ से विहार कर आप अम्बाबाड़ी, विद्याधर नगर सेक्टर-8, शास्त्रीनगर में रामनगर, बनीपार्क, कान्तिनगर, अचरोल हाउस विराजते हुए 12 मार्च को नेमीसागर कॉलोनी, क्वीन्स रोड़ पधारे। यहाँ पर 14 मार्च को आचार्यप्रवर श्रद्धेय श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वां जन्मदिवस 77 आयम्बिल एवं एकाशन के साथ मनाया गया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. एवं सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. ने पूज्य आचार्यप्रवर के जीवन एवं दर्शन पर प्रकाश डाला। 16 मार्च को मुनि-मण्डल का जैन स्थानक, नित्यानन्द नगर में पदार्पण हुआ। यहाँ लगभग एक सप्ताह तक लाभ देकर 23 मार्च को धर्म पार्क, अजमेर रोड़ पधारे। वहाँ से 'आराधना भवन' श्यामनगर पधारे। 26 मार्च को मुमुक्षु भाई श्री अविनाशजी का स्थानीय संघ, लालभवन, रत्न हितैषी श्रावक संघ, महिला मण्डल, युवक परिषद् द्वारा अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर उनके माता-पिता का भी अभिनन्दन किया गया।

8 मार्च 2015 को चातुर्मासों की घोषणा एवं पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा अभिव्यक्त विचार

चैत्र कृष्णा-तृतीया, रविवार, 8 मार्च 2015 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा विक्रम संवत् 2072 वीर संवत् 2541-42 वर्ष 2015 हेतु मण्डावर में साधु मर्यादा के साथ चातुर्मासों की घोषणा की गई।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने चातुर्मास की सफलता के लक्ष्य से फरमाया- आप सभी चातुर्मास पाने के लिये उत्साहित हैं। उत्सुक का आनन्द क्षणभर रहता है, जबकि

उत्साह का आनन्द जीवन भर रहता है। आप चातुर्मास कराने के लिये, गुरु भगवंत को ले जाने के लिये, महासतियों का वर्षावास पाने के लिये उपस्थित हुए हैं। चातुर्मास खुलने पर आप श्रावक-श्राविका भी आवागमन का त्याग कर, चातुर्मास स्थल पर साधना-आराधना करें, तो चातुर्मास ऐतिहासिकता लिये हुए होगा ही, ऐसी मेरी धारणा है। चातुर्मास धन से नहीं, धर्म से होता है। तन-मन की समर्पणता से चातुर्मास सफल होता है। चातुर्मास साधु-साध्वियों का ही नहीं, चतुर्विध संघ का होता है। चातुर्मास नेता बनने के लिए नहीं, अपितु नैतिक बनने के लिये है। चातुर्मास पंचायती करने के लिये नहीं, अपितु पाँच महाव्रत के पालन की भावना को पुष्ट करने के लिए होता है। संयोग का सदुपयोग कर हम आत्म उपयोगवान बन जाएं, इन्हीं शुभ भावों के साथ.....।

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया- तीर्थंकर भगवान महावीर ने हर क्षण आत्म स्वभाव में रहने की प्रेरणा की है। स्वभाव में आने के लिये चाहे सर्दी हो, गर्मी हो या बरसात हो, हर मौसम अनुकूल है। पूर्व में फाल्गुनी चौमासी पर 5 मार्च को कहा गया- हमारी दृष्टि बदलनी चाहिए। धर्मीजन इस फाल्गुनी चौमासी पर ज्ञान प्रक्रिया की पूर्ति करने की भावना से चातुर्मास के लिये विनति रखते हैं। कई संघ आज 8 मार्च को अपना पक्ष रखने के लिये यहाँ पर उपस्थित हैं।

आप अपने क्षेत्र में किस भावना की पूर्ति करने का लक्ष्य लिये यहाँ आये हैं? ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की अभिवृद्धि की भावना से पधारे हैं, साथ ही क्रोध, मान, माया, लोभ को घटाने का संकल्प लेकर चातुर्मास की भावना से पधारे हैं तो आपकी भावना श्रेष्ठ है, अनुमोदनीय है। शरीर एक है, विनतियाँ चार-चार हैं, लाभ तो किसी एक क्षेत्र को मिलेगा। वैक्रियलब्धि वाला तो हूँ नहीं जो सबकी पूर्ति कर सकूँ। कुछ ऐसे अहंकारी भी हैं, जो कहते हैं- यदि चातुर्मास नहीं मिला, तो आगे विनति नहीं करेंगे। कुछ ऐसी आग्रह भरी विनति रख रहे हैं कि हमें तो अमुक संत-सती ही चाहिए। ऐसे भाइयों से मेरा कहना है- क्या आप महल-बंगलों में ही रहोगे, कभी झोपड़ी में रहने का प्रसंग भी आ सकता है। बादाम का हलवा मिले, क्या तब ही खाओगे, अन्य किस्म के हलवे खाना पसन्द नहीं करोगे तो क्या भूखे ही रहोगे? इन सब पर आपको उदार भावना का परिचय देना है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, गुरु छद्मस्थ, चेला केवली बन सकता है। आगे कह दूँ- चेला गुरु को पढ़ा सकता है। यह अपना-अपना उपादान है। आने वाला हर संघ, उनको जो भी संत-सती मिलें, उन पर सन्तोष रखे। संत-सतियों की संख्या सीमित है- विनतियाँ अधिक हैं।

भरतपुर, खेड़ली, हिण्डौन, अलीगढ़-रामपुरा, नदबई वाले मेरे चातुर्मास की विनति कर रहे हैं। सांथा एक छोटा-सा गाँव है। वहाँ के जिनेश जी ने मेरे ही चातुर्मास की विनति

रख दी। इन्होंने सांथा में जैन-अजैन की भीड़ इकट्ठी कर दी। चार शीलव्रत के खंध करवाये। बहुत अच्छी भावना है इनकी।

जितना विहार इन चार महीनों में अब तक किया, उतना गत वर्षों में कभी करने का प्रसंग कम आया। पल्लीवाल क्षेत्र के हर गांव को फरसने की भावना से कोहरे के कारण कभी 11 बजे, कभी 2 बजे बिना आहार किए विहार का क्रम बनाये रखा। यहाँ हर गाँव की यह विशेषता रही कि सभी जगह शीलव्रत के खंध हुए। कई भाइयों ने बीड़ी छोड़ी। बुजुर्गों ने भी कुव्यसन का त्याग किया। पल्लीवाल भाइयों ने सहजता से रात्रिभोजन का त्याग किया। पोरवाल क्षेत्र में इस अभियान का पालन वृहद् स्तर पर हो रहा है। पल्लीवाल क्षेत्र में 80 प्रतिशत रात्रिभोजन के त्यागी बने हैं। नवकार पर श्रद्धा, रात्रिभोजन नहीं, मद्यमांस का सेवन नहीं, ये ओसवाल समाज के 3 नियम थे। दृढ़ता से वर्षों तक पालन किया, पर अब स्थिति विपरीत है। जैनत्व की मोटी पहचान यही है कि वह रात्रि में भोजन नहीं करता। बात चातुर्मास की चल रही थी- अलीगढ़-रामपुरा वाले कह रहे हैं- जब तक चातुर्मास नहीं होगा, विनति करते रहेंगे। उनकी भावना प्रमोदजन्य है। पर पोरवाल क्षेत्र व अलीगढ़ वालों को भरपूर समय देकर लाभान्वित किया है। संगति के लिये आप सब विनति कर रहे हैं। इस वर्ष हिण्डौन सिटी में मेरी चातुर्मास की भावना है। (हिण्डौन सिटी शब्द उच्चारित होते ही हिण्डौनवासियों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई- जयनिनाद के उच्च समवेत स्वर गुंजायमान हो उठे।) पूज्य आचार्यदेव ने आगे फरमाया कि यह चातुर्मास हिण्डौन वालों का है, ऐसा नहीं, अपितु समूचे पल्लीवाल क्षेत्र का है। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के विहार करने की स्थिति नहीं है। फिर भी वे विराम लेते हुए 1-2 किमी. का विहार कर जोधपुर के उपनगरों को फरसकर उपकृत कर रहे हैं। उनका चातुर्मास हाउसिंग बोर्ड, नेहरूपार्क संघ वाले चाह रहे हैं। नेहरूपार्क क्षेत्र के लिये उनका चातुर्मास स्वीकृत किया जा रहा है। जोधपुर से पधारे भाइयों में हर्ष की लहर दौड़ गई और जयघोष कर अभिव्यक्ति की। पूज्य आचार्यप्रवर ने विरक्त बन्धु अविनाश जी की भागवती दीक्षा की स्वीकृति 25 अप्रेल 2015 को जोधपुर के लिये फरमाई। जय-जयकार कर अनुमोदना की गई। फिर क्रम से अन्यान्य क्षेत्रों के लिये चातुर्मास की स्वीकृति फरमाकर अन्त में मांगलिक प्रदान की।

चैत्र कृष्णा तृतीया 8 मार्च 2015 को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम संवत् 2072 सन् 2015 के निम्नांकित चातुर्मासों की घोषणा की गई है-

1. **हिण्डौन शहर (करौली)-** परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. **नेहरू पार्क, जोधपुर-** उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा
3. **महावीर नगर, जयपुर-** सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा

4. अलवर (राज.)– तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा
5. पावटा, जोधपुर– साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा
6. मानसरोवर–जयपुर– विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा
7. सरवाड़ (अजमेर)– विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
8. भिनाय (अजमेर)– व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा
9. नित्यानन्दनगर, जयपुर– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
10. दूदू (जिला–जयपुर)– व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
11. सूरत (गुजरात)– व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.आदि ठाणा
12. रायचूर (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा
13. कोपल (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा
14. माधवनगर(महा.)– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
15. गाँधीनगर–दिल्ली– व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
16. उमरगाँव रोड़ (गुजरात)– व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा
17. बीकानेर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
18. वैशाली नगर (अजमेर)– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा
19. बीजापुर (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

25 मार्च 2015 को घोषित चातुर्मास

1. पीपाड़शहर (जोधपुर)– व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा
2. सोरापुर (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 77 वें जन्म-दिवस पर तप-त्याग एवं सन्तों के उद्गार

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म–कल्याणक एवं जिनशासन गौरव, रात्रिभोजन–त्याग, निर्व्यसनता एवं सामूहिक सामायिक के प्रेरक आगमज्ञ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वां जन्मदिवस देश–विदेश के विभिन्न ग्राम–नगरों में चैत्रकृष्णा अष्टमी, 14 मार्च 2015 को तप–त्यागपूर्वक मनाया गया। पूज्य आचार्यप्रवर इस दिन मण्डावर (जिला–दौसा) विराज रहे थे। वहाँ पर उपवास, एकाशन, बेले एवं तेले के प्रत्याख्यान हुए तथा विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 1200 उपवास सम्पन्न हुए। उपाध्यायप्रवर एवं सन्त–सतियों के सान्निध्य में सर्वत्र धर्माराधन एवं तपाराधन हुआ तथा आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। मण्डावर में सन्तों एवं श्रावकों ने पूज्य आचार्यप्रवर के लिए भाव भरी भावाभिव्यक्ति की, जो संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत है।

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया- दशवैकालिक सूत्र की वाचना करते समय पाँच प्रकार के मंगल का वर्णन आया। उनमें एक मंगल जन्म मंगल भी है। जो जन्म लेकर शुभ प्रवृत्तियों में अपना जीवन लगा देते हैं। जो साधना कर जीवन को सार्थक बना लेते हैं ऐसे महापुरुषों का जन्म-दिवस मनाया जाता है। कोटा से विहार के बाद कई बार विषम मार्ग पर चलने का प्रसंग आया, लेकिन पल्लीवाल क्षेत्र को फरसने की भावना से पैरों में चल रही अशक्तता के बावजूद उपकार भावना के कारण पावन कदम आगे बढ़ते गये। पूज्य गुरुदेव का चेहरा शांत व सौम्य है। आपश्री में उच्चकोटि की सहनशीलता है। हम सब आपके उपकारों से कभी उऋण नहीं हो सकते।

महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ने फरमाया- "रोम-रोम में है मेरे गुरुवर का नाम, तेरी अर्चना करें हम दिन और रात.......।" आपश्री के आशीर्वचन मेरे अन्तर मन की लब्धि बनें। हमें सद्गुरु की सन्निधि मिली है, धर्म मिला है- यह जीव ऐसी करणी करे ताकि छठे आरे में जन्म लेना नहीं पड़े। सम्यग्दृष्टि बन मोक्ष का स्वप्न देखें। गुरुदेव का आज 77 वां जन्मदिवस है- जिसका योग 14 होता है। आप सभी 14 नियम का पालन करें, 14 दिन संवराराधना कर, 14 सामायिक की साधना कर, 14 नवकारसी कर, 14 दिन रात्रिभोजन त्याग कर अपना अर्घ्य अर्पित करें। समुद्र में असंख्य लहरें उठती है, उनकी गणना संभव नहीं, इसी तरह गुरु भगवन्त के गुणगान संभव नहीं - यही भावना है- आप शतायु हों, दीर्घायु हों।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता श्रीजी म.सा.- गुरु भगवन्त के गुण लेखनी लिख नहीं सकती, जिह्वा गुणगान कर नहीं सकती, पर अन्तर की भावना रुक नहीं रही। गुरु हीरा ने मेरा जीवन बदल दिया, आदिनाथ भगवान के गुणगान करूँ या गुरुदेव के? मेरे तो हीरा गुरु ही आदिनाथ हैं। जिनशासन की शान हैं। भक्तों के प्राण हैं। भगवान हैं। हीरा गुरु सागर सम गंभीर हैं। 'समयं गोयम मा पमायए' वाक्य का पालन कर अप्रमत्त हैं। गुरु हीरा मेरे लिए वरदान भी हैं, वर्धमान भी हैं। हरपल यही भावना है, गुरु चरणों में ही रहूँ। "गुरुवर के चरणों में हमको रहना है....रहना है....।" बन्धुओं! गुरुवर का सान्निध्य पाकर यदि जीवन में बदलाव नहीं हुआ तो भविष्य में पछताना पड़ेगा।

नवदीक्षित श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.- गुरु भगवन्त के जीवन में गुण ही गुण हैं। मुख मण्डल की सौम्यता, चन्द्रमा से भी अधिक है। ललाट की दिव्यता व क्रान्ति सूर्य की चमक को भी फीकी कर रही है। आपश्री की तेजस्विता बेजोड़ है। आपकी साधना के प्रभाव से अनेक घटनाएँ सहज घटित हो जाती हैं। पूज्य गुरुदेव को नसियाँ कॉलोनी में नीचे विराज कर स्वाध्याय साधना करते हुए जब श्रमणसंघीय संत श्री पंकजमुनिजी ने देखा तो वे आचार्य

श्री की सरलता से अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने कहा- महान् आचार्य होते हुए भी कितने सरल हैं। ऐसे है हमारे GURU- G से Good हैं, आपका जीवन अच्छा है। U से Understanding आपकी समझ एवं विचारधारा उच्चस्तरीय है, R से Right आप सोच विचार कर सही निर्णय लेते हैं। आपकी शरण में आने वाले को सही मार्ग बताकर मार्गदर्शन किया करते हैं। U से U-TURN संसार के कीचड़ से निकालकर संयम प्रदान करने वाले उपकारी गुरु हैं। ''तेरे नाम की प्रीत, गुरुवर हो गई मुझको.......।''

नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.- भगवान आदिनाथ ने सर्वप्रथम तीर्थ की स्थापना की। हमारे लिये तो आप ही आदिनाथ हैं, अरिहंत हैं, भगवती सूत्र में आया है- आचार्य अरिहंत के समान हैं। अनन्त उपकारी होने से आप ही आदिनाथ हो। भगवान आदिनाथ की सेवा में महान् इन्द्र, देवेन्द्र, रवि इन्द्र आदि पलकें बिछाएँ खड़े रहते हैं। वे कुछ समय के लिये ही सेवा में आते हैं, लेकिन आपकी सेवा में तो महेन्द्र-देवेन्द्र-रवीन्द्र आदि सभी सेवा में सतत अहर्निश खड़े रहते हैं। आदिनाथ भगवान की सेवा में महान् श्रुतज्ञानी आगम मनीषी ज्ञान-प्राप्ति के लिये सेवा में समर्पित रहते थे, यहाँ आपश्री की भी सेवा में आगममनीषी आपके आशीष को प्राप्त करने के लिये विनम्रतापूर्वक सन्नद्ध रहते हैं और आपकी कृपा से विवेक को, प्रज्ञा को, संवेग को निरन्तर वर्धित करते हैं। ''तेरी बगिया का फूल हूँ मैं, फूल खिलाये रखना। धूल हूँ चरणों की, धूल बनाये रखना।''

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.- ''हीरा का नाम अनमोल, बोलो जय-जय हीरा। इसका ना लगता कोई मोल, बोलो जय-जय हीरा।'' धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले अरिहन्तों द्वारा प्ररूपित आगमों का पान कराने वाले आप आचार्य भगवन्त लोगस्स के पाठ के अनुसार समस्त अरिहंतों में निहित गुणों के समान विभूषित हैं। जिनशासन की जिम्मेदारी का निर्वहन ऋषभदेव के समान कर रहे हैं। आप दान्त होने से अजीत हैं। आपकी भव-मुक्ति संभव होने से संभवनाथ हैं। आनन्दित करने वाले उपकारी होने से अभिनन्दन हैं। आपकी मति सुमति होने से सुमतिनाथ हैं। निर्लिप्तता की सुवास से सुरभित होने से पद्म हैं। जो आपके पास है उसका संसार परीत हो जायेगा, उससे सुपार्श्व हैं। आपका चेहरा सौम्य व कांतिमय होने से चन्द्रप्रभु हैं। आपके सारे कार्य विधिपूर्वक होने से सुविधिनाथ हैं। शील के तल पर विचरण करने से शीतलनाथ हैं। श्रेय की उपासना करने से श्रेयांस हैं। समस्त धरती के पूज्यपाद होने से वासुपूज्य। निर्मल साधक होने से विमलनाथ। आत्मा को अंतहीन बनाने से अनन्तनाथ। विमल भाव से धर्माराधना का बिगुल बजाने से धर्मनाथ। दुर्गति, दुर्मति, दुर्वृति से बचाने वाले शांति प्रदायक होने से शांतिनाथ। धैर्यधारी होने से कुंथुनाथ। महान् राज की खोज में लगे होने से अरहनाथ। क्षमाधारी का गुण होने से मल्लिभगवती। अन्तर मुखता का

गुण होने से मुनिसुव्रत। नम्रता का अगाध गुण होने से नेमिनाथ। जहाँ है नेम और प्रेम, वहाँ कुशलक्षेम। यथा नाम तथा गुण होने से अरिष्टनेमि। जिन्होंने आत्मा का रस पी लिया है ऐसा होने से पारसनाथ। आत्मा के गुणों में वृद्धि करने वाले होने से वर्धमान। श्रमणों में श्रेष्ठ, सन्मति के धारी पूज्य गुरुदेव अरिहंत के सदृश हैं। उनकी अन्तर से अर्चना कर यही निवेदन है कि सिद्धत्व का मुझे भी स्वरूप दिखायें, इन्हीं मंगल भावों के साथ.....।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.- "श्री आदेश्वर स्वामी हो, प्रणमूँ सिरनामी तू भववाणी प्रभु अन्तर्यामी आप" आदिनाथ भगवान ने जो धर्म की प्ररूपणा कर सन्मार्ग दिखाया तथा आचार्यश्री ने अपनी चर्या में जिसे जिया, उससे पावन प्रेरणा ग्रहण करने का दिन है। भगवान आदिनाथ का जीवन पुरुषार्थ करने की प्रेरणा कर रहा है। उन्होंने दान देकर सम्यक्त्व पाया। वज्रनाभ के भव में 20 बोलों का उपार्जन किया। अभी सन्तों व सतियाँ जी ने गुरु भगवन्त को अरिहंत समान उपमित किया। आपश्री में दिवाकर सी दिव्यता, भास्कर सी तेजस्विता है। शरीर एक इन्द्रियाँ अनेक हैं, बंगला एक है पर खिड़कियाँ अनेक हैं, समुद्र एक पर लहरें असंख्य उठती हैं, सूर्य एक पर रश्मियाँ सहस्रों हैं, फूल एक पर पंखुड़िया बहुत हैं, इसी तरह गुरुदेव तो एक हैं पर गुण अनेकानेक हैं। आज पल्लीवाल क्षेत्र में समीपस्थ सात स्थानों पर संत-सती विराज रहे हैं, उनकी सन्निधि में भी जन्मदिवस मनाया जा रहा है। उत्तराध्ययन का प्रथम अध्ययन विनय है, हमारे गुरुदेव भी विनय की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। आपश्री अपने गुरु का तो विनय करते ही हैं, पर गुरु भ्राताओं का भी विनय करते हैं। 24 साल से संघ की बागड़ोर आपके हाथों में हैं। संघ में हर दृष्टि से संवर्धन हो रहा है। शताधिक संत-सती हैं। आचार्य भगवन्त-उपाध्याय भगवन्त में जो सौहार्द है, वह उल्लेखनीय है। उपाध्यायप्रवर फरमाया करते हैं आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. संघ की बागड़ोर आचार्य हीरामुनिजी को संभला गये। आज संघ में जो उन्नति हो रही है, वह प्रशंसनीय है। जोधपुर में आचार्यप्रवर पधारे- तब उपाध्यायप्रवर अगवानी में पधारे- समागम गंदगीयुक्त गली में हुआ। आचार्यश्री ने विधिवत् वन्दना का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह आज भी स्मृति में है। आचार्य श्री स्वयं पुरुषार्थ कर रहे हैं। चेले व क्षेत्र बढ़ाने का मोह नहीं है। प्रमाद से परे हैं। शास्त्रस्वाध्याय-माला की आराधना में लगे रहते हैं।

चतुर्विध संघ की यही कामना है- जहाँ भी आर्यधरा पर गुरुदेव का विचरण हो, शासन की प्रभावना इसी तरह होती रहे। निरामय शरीर से ऐसी साधना चलती रहे।

पूज्य आचार्यप्रवर का भक्तों के निवेदन पर मांगलिक प्रदान करने की भावना से पदार्पण हुआ। सभा का संचालन करते हुए **श्री अशोक जी जैन-महुवा** ने कहा- सामायिक धर्मस्थान में शुद्ध होती है। यह हम जान रहे, पर मान नहीं रहे। व्यसनमुक्ति का अभियान

चलाने वाले विराजमान हैं। आप गुटखा, बीड़ी आदि छोड़ें। शीलव्रत के नियम लिरावें। रात्रिभोजन का त्याग करें। परिवार में कम से कम एक व्यक्ति प्रतिक्रमण का जानकार हो। ऐसा आचार्यप्रवर का एक मिशन चल रहा है। व्रती श्रावक बनें। नियमित स्वाध्याय करें। अच्छे संस्कार के लिये धार्मिक पाठशालाओं में बालक/बालिकाओं को भिजवायें।

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपनी भावाभिव्यक्ति में फरमाया- "तीर्थ की आदि करने वाले ऋषभदेव का आज जन्म कल्याणक है। भगवान आदिनाथ ने किसी प्रतीक को धर्म का आधार नहीं बताया। भरत महाराज को आरिसा भवन में शरीर की शोभा निहारते, अनित्य का चिंतन करते-करते केवल ज्ञान हो गया। माता मरुदेवी को हाथी के ओहदे पर बैठे-बैठे केवल ज्ञान मिला। **महावीर साढ़े बारह वर्ष विचरे, पर शास्त्रों में कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि कभी वे जैन मंदिर में ठहरे हों। क्योंकि उस समय मंदिर थे ही नहीं,** अतः वर्णन आता ही कहाँ से? आचारांग उठाकर देख लो- तिरना-तारना भावना व साधना से होता है। चूड़ी की आवाज से वैराग्य आया, तो क्या चूड़ी वन्दनीय हो गई। क्या हाथी का ओहदा या आरिसा भवन वन्दनीय हैं? ये सब मात्र निमित्त हैं। अहिंसा में ही धर्म बताया है, पूजा प्रतिष्ठा में नहीं। अहिंसा धर्म का पालन करने वाले वन्दनीय हैं। प्रभु आदिनाथ का सारा परिवार मोक्ष में पहुँच गया, ऐसा उदाहरण अन्य परिवार में मिलना दुर्लभ है। अतः आप जो भी धर्म-साधना करें, धर्मस्थान में करें। दुकान, व्यवसाय, नौकरी आदि अन्य काम जब आप दूर जाकर कर सकते हैं, तो धर्मस्थान में जाकर सामायिक करने का समय निकालने में कौनसी रुकावट आ रही है। नमाज में मस्जिद ही नहीं सड़क भी भर जाती है। पिता अपने लाड़लों को साथ लाते हैं। क्या उनको कोई कहने जा रहा है? उनकी धर्म के प्रति श्रद्धाभक्ति है। भगवान महावीर के शासन में एक लाख उनसठ हजार व्रती श्रावक व तीन लाख अठारह हजार व्रती श्राविकाएँ थीं। यहाँ यह गिनती केवल व्रती की है- अव्रतियों की कभी कोई गणना करते नहीं सुना। आप भी व्रती बन धर्मकरणी में प्रवेश करें तब ही जन्म कल्याणक मनाना सार्थक होगा।"

अनन्य गुरुभक्त श्री हस्तीमल जी गोलेछा-ब्यावर एवं श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार ने सुन्दर स्वरों में गुरु की गरिमा का संगान किया।

हिण्डौन- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. व श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व तप, त्याग और सामायिक-साधना से मनाया गया। 27 तेले, उपवास, एकाशना, नवकार मंत्र का अखण्ड जाप व सामायिक-साधना के रूप में तीन दिवसीय ध्यान-साधना शिविर लगाया गया, जिसमें प्रतिदिन 60-70 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं।

हिण्डौन- व्याख्यात्री महासती सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 के सान्निध्य में पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वां जन्मदिवस तप, त्याग और सामायिक साधना से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में 400 से अधिक उपवास, एकाशन व पाँच-पाँच सामायिक तथा दो दिवसीय नवकार मंत्र का जाप हुआ।

करौली- महासती श्री इन्दिराप्रभाजी व महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व तप, त्याग और सामायिक साधना से मनाया गया। 15 उपवास, 21 एकाशन, बेआसना अच्छी संख्या में हुए। 11 नवयुवकों ने 11-11 सामायिक तथा कई भाई-बहनों ने 5-5 सामायिक कीं।

कटकड़ (करौली)- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी व महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में होली चातुर्मासिक पर्व एकाशन, उपवास व सामायिक साधना व प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम सहित मनाया गया।

पूज्य आचार्यश्री हस्ती के 24 वें स्मृतिदिवस पर करें श्रद्धा समर्पण

प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वाँ स्मृति दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार 26 अप्रेल 2015 को उपस्थित हो रहा है। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के पावन सान्निध्य में तथा पूरे भारतवर्ष में तप-त्याग की आराधना के साथ स्मृति दिवस मनाया जायेगा। हम सब उस दिव्य दिवाकर के गुण स्मरण-गुण कीर्तन तो करें ही, गुरु हस्ती के प्रति त्याग-तप की श्रद्धा भी समर्पित करें। *-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री*

अक्षय तृतीया हेतु खेरली संघ को स्वीकृति

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 29 जनवरी, 2015 को गंगापुरसिटी में आयोजित दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर **अक्षय तृतीया 21 अप्रेल, 2015** को खेरली विराजने की साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ स्वीकृति खेरली संघ को प्रदान की है, जिससे खेरली संघ हर्षित एवं प्रमुदित है। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर तप-साधकों के साथ अनेक श्रद्धालुजन नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करेंगे। एकान्तर तप-साधक अपने नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख कर सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने पधारने की सूचना संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763, 2641445 एवं खेरली संघ को भिजवाने का श्रम करावें। **खेरली सम्पर्क सूत्र-** श्री रामबाबूजी जैन-

अध्यक्ष, मो. 92141-52601, श्री महेन्द्रजी जैन-**मंत्री,** वार्ड नं.-8, खेरली-321606, जिला-अलवर (राज.), मो. 9414483185, 85039-68820, श्री सुरेशचन्दजी जैन-संयोजक, मो. 9413064618, 9784208690, **आवागमन के साधन-** खेरली जयपुर-आगरा रेलवे लाइन पर स्थित है। जयपुर से बस सेवा उपलब्ध है। जयपुर-आगरा हाईवे पर खेरली मोड़ उतरकर खेरली पहुँचा जा सकता है। अलवर से खेरली 90 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। भरतपुर से बस एवं ट्रेन दोनों साधन उपलब्ध हैं।

संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वां आचार्य पदारोहण दिवस 9 मई को

(पूज्य आचार्यश्री हीरा आचार्यपद रजत साधनावर्ष)

जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस ज्येष्ठ कृष्णा 5 शनिवार 09 मई 2015 को उपस्थित हो रहा है। आचार्य पदारोहण दिवस को पूरे भारत वर्ष में त्याग-तप के साथ मनाया जायेगा। सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि इस दिवस को आप सभी त्याग-तप की आराधना के साथ मनाकर संघनायक के प्रति त्याग-तप की श्रद्धा अभिव्यक्त करें। **आचार्य पदारोहण दिवस को पूरे भारत वर्ष में सामूहिक एकाशनव्रत की आराधना के साथ मनाने का संघ ने निश्चय किया है।** अतः आप सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि इस दिन अधिक से अधिक संख्या में सामूहिक एकाशन व्रत की आराधना करने का लक्ष्य रखें, साथ ही सम्पर्क में आने वालों को भी प्रेरित करावें।

आचार्य पद के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने के कारण इस वर्ष को **पूज्य आचार्य श्री हीरा आचार्यपद रजत साधना-वर्ष** के रूप में मनाने का संघ ने निश्चय किया है, जिसके अन्तर्गत 09 मई 2015 से एक वर्ष पर्यन्त त्याग-तप एवं धर्माराधना के साथ ज्ञानदर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना के कार्यक्रम चलेंगे। रजत साधना वर्ष में होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा जिनवाणी के आगामी अंक में प्रकाशित करने का प्रयास रहेगा। इस सम्बन्ध में आप अपने अमूल्य सुझाव संघ कार्यालय को भिजवाने का श्रम करावें।

-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री

'संस्कारम्' पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल की प्रस्तुति 'संस्कारम्' (संकलन-श्रीमती नीलू डागा-बीकानेर) पुस्तक पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता प्रारम्भ होने जा रही है। प्रश्न पुस्तिका वितरण प्रारम्भ की तिथि 15 अप्रेल 2015, उत्तर पुस्तिका जमा कराने की

अंतिम तिथि 15 अगस्त, 2015 एवं परिणाम की घोषणा की सम्भावित तिथि 17 नवम्बर, 2015 है। प्रतियोगिता में पुरस्कार निम्नप्रकार देय हैं- **प्रथम पुरस्कार**- 21000/- रुपये, **द्वितीय पुरस्कार**- 11000/-रुपये, **तृतीय पुरस्कार**-5100/-रुपये, **अगले 10 प्रतियोगियों को** 3100/- रुपये, **अगले 10 प्रतियोगियों को** 2100/- रुपये, **अगले 20 प्रतियोगियों को**- 1100/- रुपये, **अगले 50 प्रतियोगियों को** 500/-रुपये तथा सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। **'संस्कारम्' पुस्तिका**- 100 रुपये में तथा संस्कारम् आराधना (प्रश्न पुस्तिका) 30 रुपये में उपलब्ध है। **सम्पर्क सूत्र**- श्रीमती इन्दिराजी बोहरा, चेन्नई (तमिलनाडु)- 09176806000, श्रीमती नीलूजी डागा, बीकानेर (राज.)-09314879797, सुश्री विधिजी कोठारी, कोटा (राज.)-09461916309, श्रीमती रजनीजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.) - 09460230950, श्रीमती सुनीताजी चौधरी, पीपाड़ (राज.)-07597451157, श्रीमती अनीताजी जागीरदार, बालोतरा (राज.)-07877223269, श्रीमती अनुपमाजी गुलेच्छा, पाली (राज.)-09414121999, श्री राजीव जी नाहर, सूरत (गुजरात)-09375165765, श्री मनोजजी संचेती, जलगाँव (महा.)-09422591423, श्रीमती मंजूजी जैन, मुम्बई (महा.)-09820388903, श्रीमती रेखाजी मेहता, बैंगलोर (कर्नाटक)-09900152457, श्रीमती पदमाजी गुलगुलिया, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)-09553901195, **पुस्तिका प्राप्ति-स्थान**- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763, 2641445, 2624891, 2630490, 2622623

रत्नवंशीय खानदेश क्षेत्रीय श्रावक सम्मेलन जलगांव में सम्पन्न

खान्देश (जलगांव, धुलियाँ, नंदूरबार जिले) के गुरुभाई-बहनों का श्रावक सम्मेलन 1 मार्च 2015 को अहिंसा तीर्थ (कुसुम्बा) में सम्पन्न हुआ। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी सी. बाफना, संघ-संरक्षक श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, उपाध्यक्ष श्री कान्तिलाल जी चौधरी, श्री कस्तूरचन्द जी बाफना, संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राजीव जी नाहर आदि मंचासीन थे।

संघ-सेवा का महत्त्व, संघ की गतिविधियाँ, संघ-सेवा में सहयोगिता कैसे? आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी, सुश्री नेहाजी चोरडिया, श्री

रतनलाल जी बाफना, श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी, श्री कंवरलाल जी संघवी, श्रीमती विजया जी मलारा, श्री प्रकाशचन्द जी जैन, श्री मोफतराज जी मुणोत आदि ने आगन्तुकों का आह्वान किया।

द्वितीय सत्र में सभी वीर परिवारों का तथा जिनके दीक्षा-आज्ञापत्र हो चुके हैं उन परिवारों का, वर्षीतप करने वालों का तथा लघुवय में प्रतिक्रमण कंठस्थ करने वाले संयम विक्रम जी मुणोत एवं प्राकृत भाषा में नाटिका प्रस्तुत करने वालों का सम्मान किया गया। जलगाँव जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष के रूप में श्री कंवरलाल जी संघवी को मनोनीत किया गया। कार्यक्रम में जलगांव सहित धुलिया, फत्तेपुर, शिरपुर, कजगांव, भड़गाँव, निफाड़, नाशिक, नरडाना, शिरुड़, तोंडापुर, पाचोरा, बोदवड़, मुम्बई आदि स्थानों से गुरु भाई-बहनों और महाराष्ट्र जैन स्थानीय संघ के स्वाध्यायियों ने भाग लिया। सायंकालीन कार्यक्रम में आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड डॉ. दिलीपजी धींग-चेन्नई, 2. श्री महेन्द्र जी मुणोत-बैंगलोर एवं 3. राजस्थान अहिंसा प्रचारक समिति-चित्तौड़गढ़ को प्रदान किया गया। सभी को पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये का चेक, स्मृतिचिह्न, अभिनन्दन पत्र, शाल व माला से श्री मोफतराजी मुणोत, श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी, श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना द्वारा नवाजा गया।

उत्तराध्ययन सूत्र पर आयोजित खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 13 अप्रेल, 2015 से भगवान महावीर की अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र के माध्यम से पंचम आगम प्रतियोगिता प्रारम्भ होने जा रही है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में पूर्ण होगी। इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में मूल्यांकन प्रश्न पत्र 13 अप्रेल 2015 को वितरित करना प्रारम्भ किया जायेगा तथा प्रश्न-पत्र पूर्ण कर भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2015 रखी गई है। **सम्पर्क सूत्र-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2570753, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625, श्री धर्मेन्द्र जी जैन, जयपुर-096943-79209

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने ड्रेस कोड के रूप में लाल चून्दड़ी एक समान रंग व रूप (डिजाइन) में निर्धारित की है। रत्नसंघ की सभी श्राविकाओं से निवेदन है कि रत्नसंघ की ड्रेस कोड को प्रत्येक श्राविका को लेना अनिवार्य है। संघ द्वारा आयोजित दीक्षा महोत्सव, संवत्सरी, सामूहिक संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन आदि सभी कार्यक्रमों में समस्त श्राविकाएँ उक्त साड़ी पहन कर भाग लेने का लक्ष्य रखें, जिससे

कार्यक्रमों में एकरूपता एवं अनुशासन बना रहे। साड़ी मंगवाने हेतु महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता से शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें, साड़ी का मूल्य 450/- रुपये निर्धारित है।

25 अप्रेल, 2015 को जोधपुर में होने जा रहे दीक्षा-महोत्सव पर आप सभी बहनों से पुनः निवेदन है कि सभी ड्रेस कोड पहनकर पधारें।

श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा से सम्बन्धित सूचना

1. जिनवाणी माह मार्च-2015 में प्रकाशित इस प्रतियोगिता सम्बन्धी सूचना में निम्न प्रकार परिवर्तन किया गया है- प्रथम पुरस्कार राशि- 31,000/-, द्वितीय पुरस्कार- 21,000/-, तृतीय पुरस्कार- 10,000/-, प्रोत्साहन पुरस्कार (दस) - 1000/- प्रत्येक, सांत्वना पुरस्कार (दस) 500/- प्रत्येक एवं अचम्भित पुरस्कार के अन्तर्गत 8 से 15 वर्ष तक के प्रतिभागियों के लिए विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार रखे गये हैं।
2. प्रश्नावली-8 के प्रश्न नं. 29 को बत्तीस दोषों में से एक दोष पढ़ा जावे।
3. प्रश्नावली-10 के प्रश्न नं. 5 को उत्कृष्ठ-तीर्थंकर को उत्कृष्ट तीर्थंकर पढ़ा जावे।
4. प्रश्नावली-19 में त्रुटिवश 23 नं. की लाइन अधिक बढ़ गयी है। इसमें 22 उत्तर ही दिये जाने हैं। *-कमला लोढ़ा-086969-02204, राजकुमारी सेठ-099299-26042*

संस्कार वृद्धि हेतु संस्कार केन्द्रों का संचालन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सदुपदेशों से प्रभावित होकर जनवरी-2007 में 'अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र' की स्थापना की गई। वर्तमान में निम्नांकित स्थानों पर संस्कार केन्द्र संचालित हो रहे हैं-

जोधपुर क्षेत्र- 1. सिंहपोल, 2. घोड़ों का चौक, 3. पावटा, 4. ढ़ालिया (महामंदिर), 5. डंको बाजे रे स्थानक, 6. लक्ष्मीनगर, 7. विनायक सदन-पावटा (साप्ताहिक), 8. राम मौहल्ला, 9. प्रतापनगर, 10. हाउसिंग बोर्ड।

मारवाड़ क्षेत्र- 1. भोपालगढ़, 2. नागौर, 3. बिलाड़ा।

मेवाड़ क्षेत्र- 1. बेगूँ, 2. मोरवन बांध।

पोरवाल क्षेत्र- 1.आलनपुर, 2. बजरिया, 3. अलीगढ़, 4. चौथ का बरवाड़ा, 5. हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, 6. महावीर भवन-सवाईमाधोपुर, 7. सूरवाल, 8. मांगरोल, 9. कुश्तला, 10. दूनी (साप्ताहिक)।

पल्लीवाल क्षेत्र- 1. नसिया कॉलोनी-गंगापुर सिटी, 2. महावीर भवन-गंगापुरसिटी, 3. वर्द्धमान नगर-हिण्डौन, 4. खेरली, 5. महुआ, 6. खोह, 7. गढ़ी सवाईराम, 8. हरसाना, 9. सेंथली।

-राजेश भण्डारी, संस्कार केन्द्र प्रभारी

जैन परम्परा का संस्कृत वाङ्मय के प्रति अवदान विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी दिल्ली में सम्पन्न

दिल्ली संस्कृत अकादमी एवं भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री विजय वल्लभ स्मारक जैन मंदिर के परिसर, दिल्ली में 27 से 29 मार्च 2015 तक जैन परम्परा के संस्कृत वाङ्मय विषयक योगदान से सम्बद्ध राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से उपस्थित हुए लगभग 50 विशिष्ट विद्वानों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। शोधपत्रों में जैन आचार्यों द्वारा संस्कृत की विभिन्न शाखाओं में किए गए योगदान को रेखांकित किया गया। संगोष्ठी में महाकाव्य, काव्य, नाटक, दूतकाव्य, पादपूर्ति, साहित्य-शास्त्र, गद्य, व्याकरण, शब्दकोश, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, न्यायशास्त्र, वास्तु, अध्यात्म विद्या, कर्मसिद्धान्त, योग एवं ध्यान, नीतिशास्त्र, आगम-व्याख्या साहित्य, जैनेतर ग्रंथों पर व्याख्या साहित्य आदि विभिन्न विधाओं में विद्वानों ने शोध पत्र प्रस्तुत कर जैन विद्वानों के द्वारा किए गए योगदान से अवगत कराया। संगोष्ठी में प्रमुख रूप से उपस्थित विद्वान थे- प्रो. सागरमल जैन-शाजापुर, प्रो. राजाराम जैन-नोयडा, प्रो. जितेन्द्र बी. शाह-अहमदाबाद, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. अशोक कुमार जैन, डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन, प्रो. अशोक कुमार सिंह-वाराणासी, प्रो. ऋषभचन्द जैन-वैशाली, प्रो. मीनल कतरनिकर-मुम्बई, श्रमणी डॉ. कुसुमप्रज्ञा-लाडनूँ, ब्रह्मचारी संदीप सरल-बीना, प्रो. विजयकुमार जैन-लखनऊ, प्रो. वृषभप्रसाद जैन-लखनऊ, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन-गाजियाबाद, श्री श्रीयांश कुमार सिंघई-जयपुर, प्रो. कमलेशकुमार जैन-जयपुर, प्रो. शुभचन्द्र-मैसूर, डॉ. विजय शंकर शुक्ल-दिल्ली, प्रो. वीर सागर जैन-दिल्ली, प्रो. सुदीप जैन-दिल्ली, डॉ. अनेकान्त कुमार जैन-दिल्ली, डॉ. बलराम शुक्ल-दिल्ली, डॉ. कल्पना जैन-दिल्ली, डॉ. श्वेता जैन-जोधपुर।

27 मार्च को उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रो. जितेन्द्र बी. शाह-अहमदाबाद, उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. महावीर प्रसाद अग्रवाल ने इस प्रकार की संगोष्ठियों की महत्ता प्रतिपादित की तथा उल्लेख किया कि जैन आचार्यों का संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाने में महान् योगदान रहा है। बी.एल. इंस्टीट्यूट के शैक्षिक निदेशक प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। दिल्ली संस्कृत अकादमी के डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने कहा कि भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों के ज्ञान में जैन संस्कृत साहित्य उपयोगी है तथा इस प्रकार के विषयों पर नियमित रूप से संगोष्ठियों की आवश्यकता है। इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने विद्वानों और अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। 29 मार्च को संगोष्ठी का सम्पूर्ति सत्र प्रो.सागरमल

जैन की अध्यक्षता, वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर के पूर्व निदेशक डॉ. जगदीश सेमवाल के मुख्य आतिथ्य तथा श्रमणी डॉ. कुसुम प्रज्ञा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी तथा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने दोनों संस्थाओं की ओर से आभार ज्ञापित किया।

दिल्ली में रत्नसंघीय चातुर्मास

अति हर्ष का विषय है कि रत्नसंघ आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. का चातुर्मास गाँधीनगर-दिल्ली के लिए स्वीकृत किया है। महासतीजी का प्रथम बार चातुर्मास दिल्ली में हो रहा है। हम आचार्यश्री के आभारी हैं कि उन्होंने हमारे ऊपर अनुकम्पा बरसायी है। दिल्ली स्थित सभी कॉलोनियों में निवासरत रत्नसंघ के गुरुभाइयों से निवेदन है कि निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर आप अपना नाम, पूर्ण पता, फोन नम्बर, ई-मेल एवं मोबाइल नम्बर से शीघ्र अवगत करावें, जिससे समय-समय पर आपको संघ की गतिविधियों एवं चातुर्मास के कार्यक्रमों के बारे में सूचित कर सकें। अन्य प्रान्तों में रहने वाले गुरु भाइयों से भी निवेदन है कि आपके दिल्ली निवासित परिवारजनों की सूची मय नाम, पता, फोन नं., ई-मेल एवं मोबाइल नम्बर दिल्ली संघ को भिजवाने की कृपा करें, जिससे हम उनसे भी सम्पर्क साधकर उन्हें भी चातुर्मास संबंधित सूचना प्रेषित कर सकें। **सम्पर्क सूत्र**-अशोक सुराणा-क्षेत्रीय प्रधान, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, डी-139, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065, मोबाइल नं. 09811020399, ई-मेल-suranaashok@hotmail.com

जैन धर्म का मौलिक इतिहास 'जैन ई लाइब्रेरी' पर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग 1 से 4) गुजराती भाषा में प्रकाशित है। ये पुस्तकें जैन ई-लाइब्रेरी में 005685, 005686, 005687, 005688 नम्बरों पर देखी जा सकती हैं। जिज्ञासु एवं पाठक वर्ग इसका लाभ उठा सकते हैं।

प्राकृत भाषा को राजस्थान प्रान्त की शिक्षा में स्थान प्रदान किए जाने के सम्बन्ध में प्रगति

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् आदि के प्रयत्नों से राजस्थान के गृह एवं न्यायमंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया के द्वारा राजस्थान के शिक्षा मंत्री को लिखे पत्र से प्राकृत भाषा प्रेमियों को यह जानकर सुखद अनुभव होगा कि शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी ने शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा जयपुर को संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा

को ऐच्छिक विषय के रूप में सम्मिलित करने के सम्बन्ध में 25 मार्च 2015 को पत्र प्रेषित किया है। इससे प्राकृत भाषा भी संस्कृत की भाँति कक्षा ग्यारह एवं बारह में ऐच्छिक विषय के रूप में तथा छठी से दसवीं तक भी पठनीय विषय के रूप में उपलब्ध हो सकेगी। इससे प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य का आगे चलकर गहन अध्ययन हो सकेगा, जो भारतीय इतिहास, संस्कृति और अध्यात्म की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

श्रमणसंघीय सम्मेलन में महेन्द्रऋषिजी महाराज युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित

इन्दौर में श्रमणसंघीय आचार्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में लगभग 560 साधु-साध्वियों की महती उपस्थिति में 20 से 29 मार्च 2015 तक आयोजित श्रमणसंघीय सम्मेलन में 27 मार्च 2015 को आचार्य डॉ. शिवमुनिजी द्वारा ऋषि परम्परा के सन्त श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को युवाचार्य घोषित किया गया। 29 मार्च को दशहरा मैदान में उन्हें चतुर्विध संघ की उपस्थिति में युवाचार्य पद के आदर की चादर ओढायी गई। इस कार्यक्रम में साधु-साध्वियों के साथ लगभग 60-70 हजार श्रावक-श्राविका साक्षी रहे। भारत सरकार के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, विश्व हिन्दू परिषद् के अशोक सिंघल, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की परम्परा के सुयोग्य एवं स्वच्छ छवि वाले सन्तप्रवर सरलता, सादगी, शरीर सम्पदा, प्रवचन पटुता आदि सद्गुणों के धनी हैं। इसी अवसर पर श्रमण संघ के महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी 'कुमुद' को 'महाश्रमण' पद से विभूषित कर आचार्य श्री द्वारा आदर की चादर ओढ़ायी गई।

सम्मेलन में आचार-सम्बन्धी बिन्दुओं पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ तथा संघ एवं समाज-सुधार की दृष्टि से अनेक उपयोगी निर्णय किए गए। जिनकी चर्चा इसी अंक के सम्पादकीय में की गई है।

निःशुल्क परामर्श जाँच शिविर 26 अप्रेल को

श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, घोड़ों का चौक, जोधपुर द्वारा रविवार, 26 अप्रेल 2015 को निःशुल्क परामर्श जाँच शिविर का आयोजन प्रातः 9.00 से 1.00 बजे तक रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति अपना पंजीयन 05 अप्रेल से 20 अप्रेल के मध्य करवा लेवें। शिविर में मधुमेह (डायबीटिज) जाँच , ई.सी.जी. जाँच (कम्प्यूटराइज्ड), रक्तग्रुप जाँच, अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँचें लागत मूल्य पर की जायेगी तथा अनुभवी चिकित्सकों की सेवाएँ उपलब्ध रहेंगी। शिविर का आयोजन श्री नगराजजी मेहता, कमलजी मेहता,

प्रदीपजी मेहता, अंकितजी मेहता-जोधपुर के सौजन्य से किया जा रहा है।

पाठकों व संघ सदस्यों को सूचना

पिछले कुछ समय से कुछ सदस्यों व कार्यकर्त्ताओं द्वारा स्वेच्छा से चातुर्मास, विहार दीक्षा, विशिष्ट तिथियों आदि के बारे में समाचार दिये जा रहे हैं। संघ मुख्यालय से विश्वस्त सूचना के बिना व्हाट्सअप, ई-मेल आदि साधनों से समाचार दिया जाना अनधिकृत है।

राष्ट्रीय संघ अध्यक्ष/महामंत्री/संघ मुख्यालय से प्राप्त जानकारी ही अधिकृत है। संघ कार्यकर्त्तागण एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्त्तागण इस बारे में विशेष तौर पर सजग रहें। *-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय संघ महामंत्री*

संक्षिप्त-समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 14 मार्च 2015 को प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म एवं दीक्षा-कल्याणक एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा का 77 वां जन्मदिवस तीन सामायिक के साथ एकाशन दिवस के रूप में साधनापूर्वक मनाया गया। वक्ताओं ने अपने विचार भी अभिव्यक्त किए। गुणगान सभा का संचालन करते हुए संघ के सहसचिव श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया ने आचार्य भगवन्त के वर्ष 1980 एवं 2005 चेन्नई चातुर्मास की विशिष्ट उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़ में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, सामाजिक ज्ञान, गणित, विज्ञान व जैन दर्शन विषयों के जैन अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। आवेदन हेतु सम्पर्क सूत्र- मंत्री, श्री जैन रत्न उ. मा. विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः- 09380102607

श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़ में कक्षा ग्यारवीं एवं बारहवीं के विज्ञान एवं वाणिज्य विषय में कक्षा छः से दस में प्रवेश पाने हेतु जैन परिवार के छात्र/छात्राओं से फार्म आमंत्रित है। छात्रों के लिए आवास की व्यवस्था भी है। आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति वाले छात्रों को आवश्यकतानुसार शिक्षण व छात्रालय शुल्क में छूट भी दी जा सकेगी। सम्पर्क सूत्र- मंत्री, श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः- 09380102607

बैंगलुरु- हनुमंत नगर विजयनगर बसवनगुडी जैन मित्र मण्डल की ओर से संघ के गुणीजनों का अभिनन्दन करने के क्रम में वीरपति श्री धनरूपचन्द जी मेहता, मूल निवासी पीपाड़ का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। उनकी धर्मपत्नी मंजूदेवी जी जैन ने गत वर्ष बैंगलुरु में दीक्षा

ग्रहण की है।

सूरत- मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा-हुबली एवं उनके वीर माता-पिता का अभिनन्दन 20 मार्च 2015 को श्री सोहनलाल जी नाहर स्वाध्याय भवन में किया गया। मुनिश्रेष्ठ श्री प्रेमचन्दजी महाराज के सान्निध्य में लगभग 450 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में यह अभिनन्दन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुनिश्री ने वैराग्यपरक प्रवचन फरमाया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने रात्रिभोजन-त्याग, शीलव्रत, धोवनपानी आदि से सम्बद्ध नियम ग्रहण किए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सुधर्म संघ, शान्त-क्रान्ति संघ, उत्तर भारतीय संघ, जयमल संघ आदि ने मुमुक्षु अविनाश जी एवं वीर माता-पिता का स्वागत अभिनन्दन किया। -*सुनील नाहर*

चेन्नई- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, तमिलनाडु शाखा द्वारा श्रावक-श्राविकाओं के ज्ञानार्जन में वृद्धि हेतु द्विदिवसीय स्वाध्यायी शिविर 21 एवं 22 मार्च 2015 को स्वाध्याय भवन, चेन्नई के प्रांगण में आयोजित किया गया। शिविर में साधना के सोपान रूप में श्रावक जीवन में स्वाध्याय की उपयोगिता, प्रतिक्रमण व अन्तगड सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, आत्म-विशुद्धि की कला, थोकड़ों से सम्बन्धित सामान्य जानकारी, उत्तराध्ययन के चयनित अध्ययन व जीवनोपयोगी गाथाएँ, प्रत्याख्यान सम्बन्धी जानकारी, उपयोगिता, पौषध व दया का स्वरूप आदि विषयों पर अध्ययन करवाया गया तथा प्रत्येक स्वाध्यायी को अपने विषय पर बोलने का अभ्यास करवाया। शिविर में लगभग 80 स्वाध्यायियों को श्री नेमीचन्द जी कर्नावट, श्री अशोक जी कवाड़, श्री त्रिलोक जी जैन, श्री राजेन्द्र जी लुंकड़, श्री धर्मेन्द्र जी जैन ने सुन्दर ढंग से अध्यापन सेवा से लाभान्वित किया। 40 स्वाध्यायियों ने पर्युषण के लिए स्वाध्यायी सेवा देने की तुरन्त स्वीकृति प्रदान की। इस शिविर के आयोजन में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद्-तमिलनाडु का सराहनीय सहयोग रहा। - *सुधीरकुमार सुराणा*

बधाई

जिनवाणी के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन 'रामरतन कोचर स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित

स्व. रामरतन कोचर स्मारक समिति, बीकानेर द्वारा 'सद्भावना दिवस 12 मार्च 2015 को आयोजित भव्य सम्मान समारोह में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग के आचार्य एवं **'जिनवाणी'** मासिक पत्रिका के प्रधान-सम्पादक **डॉ. धर्मचन्द जैन** को पत्रकारिता के

क्षेत्र में प्रदत्त उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु अठारहवें **रामरतन कोचर स्मृति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मान-स्वरूप 11000/- रुपये की राशि, प्रशस्ति-पत्र आदि प्रदान किये गये। सम्मान समारोह में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री सचिन पायलट मुख्यातिथि थे तथा राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री डॉ. बी.डी.कल्ला ने अध्यक्षता की। डॉ. धर्मचन्द जैन लगभग 21 वर्षों से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका **'जिनवाणी'** के प्रधान-सम्पादक के रूप में पत्रकारिता एवं साहित्य सर्जन के क्षेत्र में महनीय कार्य कर रहे हैं। यह सम्मान वस्तुतः **जिनवाणी पत्रिका** का सम्मान है।

जयपुर- प्राकृत भाषा के मूर्धन्य विद्वान साहित्य वाचस्पति महोपाध्याय विनयसागरजी को

मरणोपरान्त भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया। महोपाध्याय विनयसागरजी न केवल प्राकृत भाषा के ही परम्परागत प्रौढ़ विद्वान् थे अपितु संस्कृत वाङ्मय एवं जैन आगम के मनीषी तथा मौलिक चिन्तक थे, आपके द्वारा लिखित, सम्पादित व अनूदित 103 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप प्राकृत भारती अकादमी संस्थान के स्थापना वर्ष 1977 से ही जीवनपर्यन्त सम्मानीय निदेशक पद पर रहे। 23 मार्च 2015 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में उनके पुत्र मंजुल जैन ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के कर-कमलों से यह सम्मान ग्रहण किया।

उदयपुर- आर.सी. बाफना फाउण्डेशन, जलगाँव की ओर से अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन

व शोध केन्द्र-चेन्नई के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप जी धींग को 1 मार्च 2015 को आचार्य हस्ती अहिंसा अवार्ड से सम्मानित किया गया। समारोह में राज्यसभा सांसद ईश्वरलाल ललवाणी, उद्योगपति मोफतराज मुणोत आदि अतिथियों ने डॉ. धींग को एक लाख रुपये की सम्मान राशि स्मृति-चिह्न, प्रशस्ति-पत्र, पगड़ी, शॉल और मुक्ताहार से सम्मानित किया।

मुम्बई- श्री अरिहंत जैन सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी जैन-जयपुर (हिण्डौन-कंजौली

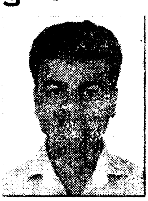

वाले) को वर्ष 2014 का पश्चिमी क्षेत्र का हिन्दी अवार्ड प्रदान किया गया। आप आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्था के पूर्व छात्र रहे हैं तथा वर्तमान में कॉनकॉर (रेलवे मंत्रालय) में (आयात-निर्यात) Exim Incharge के पद पर कार्यरत हैं। यह अवार्ड आपको हिन्दी भाषा को कार्यालय प्रक्रियाओं में बढ़ावा देने, प्रचार करने हेतु कॉनकॉर द्वारा प्रदान किया गया। पूर्व में 2013 का अवार्ड भी इन्हें ही प्रदान किया गया था। आप महासती श्री मुक्तिप्रभाजी

म.सा. के सांसारिक भतीजे हैं। नियमित सामायिक, प्रतिक्रमण, माला आदि प्रवृत्तियाँ आपके जीवन को सुशोभित कर रही हैं और पर्युषण पर्व में निरन्तर चार वर्षों से सेवा दे रहे हैं।

हैदराबाद- आचार्य हस्ती फाउण्डेशन, हैदराबाद की ओर से 'आचार्य हस्ती सेवा सम्मान-2015' 22 मार्च 2015 को एक समारोह में जीवदया प्रेमी, गौ-सेवी, अहिंसा-रत्न श्री धरमराज जी रांका को प्रदान किया गया। आपका सम्पूर्ण जीवन सत्यं शिवं सुन्दरं गौशाला, गगन पहाड़, शमशाबाद में 4500 गायों की सेवा में समर्पित रहा है।

चेन्नई- सुश्री पूजा तातेड़ सुपौत्री श्री नेमीचन्द जी तातेड़ (रियाँ बड़ी) ने सी.एस. फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। आपने महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के सान्निध्य में सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल 7 दिन में कंठस्थ किए तथा अभी दशवैकालिक आगम का स्वाध्याय चल रहा है।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- सजग, सद्गुणी सुश्रावक श्री हीराचन्द्र जी गुलेच्छा सुपुत्र स्व. श्री त्रिलोकचन्दजी गुलेच्छा का 27 फरवरी, 2015 को परलोकगमन हो गया। वे नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आप दानशील, सहृदय, कर्मठ और सकारात्मक सोच के धनी थे। आपने बैंगलोर को अपनी कर्मभूमि बनाया। आप वहाँ कई सामाजिक संगठनों में अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते थे। आपकी माताश्री श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ में सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। सम्पूर्ण गुलेच्छा परिवार संघ सेवा, संत-सेवा और समाज-सेवा में अग्रणी रहा है।

जोधपुर- सुश्राविका भजन-प्रेमी श्रीमती प्रीतिजी सिंघवी धर्मपत्नी श्री अजय जी सिंघवी (पौत्री श्री मूलराजजी धारीवाल) का 44 वर्ष की अल्पायु में कैंसर से 18 मार्च 2015 को स्वर्गारोहण हो गया। आप एम.बी.ए. (गोल्ड मेडलिस्ट), सफल कर्मठ व्यवसायी, मृदुभाषी, हँसमुख, मिलनसार, आत्मविश्वासी तथा धर्म के प्रति दृढ़ निष्ठावान थीं।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी, संत-सेवी सुश्रावक श्री सुरेशजी भण्डारी का 16 मार्च 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आपका ज़ीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आपका धर्ममय जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय में अपने जीवन के क्षणों का उपयोग करते थे। आपने

अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे।

सवाईमाधोपुर- संघसेवी वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री विनेश्वरजी (शांतिलालजी) जैन

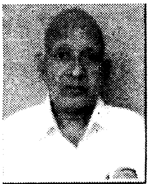

'करेला वाले' का 27 जनवरी, 2015 को 75 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। आप वर्षों तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बजरिया-सवाईमाधोपुर के अध्यक्ष पद पर रहे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सभी संत-सतियों के प्रति आपकी विशेष श्रद्धा भक्ति थी। आप नियमित पाँच सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावकरत्न थे। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

भीलवाड़ा- सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी सकलेचा सुपुत्र स्व. श्री अमरचन्दजी सकलेचा

का 66 वर्ष की आयु में 24 फरवरी 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक करते थे तथा व्रतादि के साथ सेवाकार्य के लिए तत्पर रहते थे। संत-सतियों के विहार एवं गोचरी में सेवा देने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। आपका जीवन सहज, सरल एवं शान्तिपूर्ण बीता। आपकी इच्छानुसार आपके नेत्रदान किए गए।

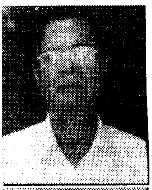

जोधपुर- सुश्रावक श्री माणकचन्दजी बरडिया सुपुत्र स्व. श्री हेमराजजी बरडिया का 16 मार्च 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप दृढ़धर्मी, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आप नित्य स्वाध्याय एवं सामायिक साधना करते थे। रत्नसंघ के प्रति आपकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी।

मण्डावर- सरलमना, सुश्राविका श्रीमती अंजू देवीजी जैन धर्मपत्नी श्री अशोकजी जैन का 50 वर्ष की वय में 9 मार्च 2015 को देवलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक-साधना, त्याग एवं प्रत्याख्यान करती थीं। आप मृदुभाषी, दानशीला, धर्मपरायणा एवं अनुपम व्यक्तित्व की धनी थीं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती चंचलकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री चंचलचन्द जी सिंघवी का 80 वर्ष की वय में 13 फरवरी 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपका धर्ममय जीवन उदारता, सरलता, विनम्रता, सेवा-भावना आदि सद्गुणों से युक्त था।

बालोतरा- सुश्रावक श्री अम्बालाल जी सुपुत्र श्री प्रभुलालजी बागरेचा का 13 मार्च 2015 को स्वर्गारोहण हो गया। आप सहृदयी, हँसमुख एवं दयालु श्रावक थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बालोतरा- सुश्रावक श्री मदनलाल जी सुपुत्र श्री अचलदासजी गोलेच्छा का 20 फरवरी 2015 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज एवं सरल था। धर्मनिष्ठ सुश्रावक अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती कविताजी धर्मपत्नी श्री अशोक जी जैन (चौथ का बरवाड़ा) का 30 वर्ष की अल्पायु में 7 मार्च 2015 को स्वर्गगमन हो गया। श्रद्धानिष्ठ श्राविका अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जगदलपुर- सुश्राविका श्रीमती चंपादेवी जी धर्मपत्नी श्री दलीचन्द जी सांखला का 10 फरवरी, 2015 को 63 वर्ष की वय में विशाखापट्टनम में स्वर्गगमन हो गया। आपकी तीन सुपुत्रियाँ वर्तमान में आचार्य श्री रामेश के शासन में दीक्षित हैं।

जयपुर- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री राधेश्यामजी जैन (कुण्डेरा वाले) का 76 वर्ष की आयु में 19 मार्च 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आपने कई दयाव्रत, अठाई, वर्षीतप आदि की तपस्या की थीं। सरलता, विनम्रता, वत्सलता एवं आतिथ्य सेवा में आप अग्रणी थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

लघु कविताएँ

अन्तर

डॉ. रमेश 'मयंक'

अशुभ ध्यान से देह के प्रति
ममता, कामना, आसक्ति,
बढ़ती जाती है,
चेतना मलिन कहलाती है
और- शुभ ध्यान से
चित्त की एकाग्रता बढ़ती जाती है,
आसक्ति से उत्पन्न जड़ता
दूर होती जाती है और चिन्मयता
अपना प्रभाव दर्शाती है।

जो
स्व और पर में,
आत्म और अनात्म में,
चेतन और अचेतन में,
अन्तर दर्शाते हैं
वही- विवेकवान कहलाते हैं।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15399 से 15407 तक 9 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री विनयचन्दजी प्रकाशचन्दजी बम्ब, जयपुर, सौ. पलकजी सुपुत्री श्री प्रकाश चन्दजी-प्रमिलाजी (सुपौत्री स्व. श्री ज्ञानचन्दजी) बम्ब के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

11000/- श्री अजयराजजी सिंघवी, जोधपुर, धर्मपत्नी श्रीमती प्रीतिजी सिंघवी की पुण्यस्मृति में।

5100/- श्री सिंघवी परिवार, ब्यावर, पूज्य श्री मानमलजी एवं श्रीमती उगमकंवरजी सिंघवी की पुण्यस्मृति में।

3100/- श्री किस्तूरचन्दजी, संजय कुमारजी, शैलेन्द्र कुमारजी, दीपक कुमारजी डोसी, ब्यावर।

3000/- श्री कुशलराजजी, पदमचन्दजी, महावीरजी कोठारी, निमाज, स्व. श्री कनकमल जी कोठारी की पुण्यस्मृति में।

2101/- श्री विजयराजजी जैन, औरंगाबाद, चि. अमितजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री किशचन्दजी, त्रिलोकचन्दजी, गजानन्दजी, वीरेन्द्रजी जैन, मण्डावर-दौसा, पूज्य पिताश्री श्री हरिप्रसादजी जैन का 17 फरवरी, 2015 को समाधिमरण हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्री आनन्दजी, संतोष कुमारजी, मनोजजी, दिनेशजी कटारिया, नागपुर, पूज्य माताश्री श्रीमती हुलसीदेवीजी कांतिलालजी कटारिया का 21 फरवरी 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

2100/- श्रीमती रतनजी कर्णावट, जयपुर, स्व. श्री मोतीचंदजी कर्णावट की पुण्यस्मृति में।

1111/- श्री गौतमचन्दजी, पारसचन्दजी (एण्डवा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री रूपचन्दजी जैन (पूर्व संयोजक स्वाध्याय संघ एवं सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक) की पुण्यस्मृति में।

1111/- श्री महेन्द्रमलजी, ललिताजी गांग, सूरत, स्व. श्रीमती झंकारदेवीजी धर्मपत्नी श्री जतनराजजी कुम्भट (जोधपुर निवासी) की द्वितीय पुण्यस्मृति पर।

1101/- श्री रतनलालजी जैन, उनियारा-टोंक, चि. अंकितजी जैन के विवाहोपलक्ष्य में।

1101/- श्री रतनलालजी जैन, मंत्री-आलनपुर-सवाईमाधोपुर, चि. मुकेशजी जैन के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री सुरेन्द्र कुमारजी जैन 'चौधरी', सवाईमाधोपुर चि. संदीपजी जैन के शुभ-विवाह

के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री अरूण कुमारजी जैन 'बैंक वाले', चि. अंशुल के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री धर्मचन्दजी, प्रदीप कुमारजी जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. पूनमजी जैन के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया, बेंगलोर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री महेन्द्र कुमारजी मुणोत, नागपुर, श्री प्यारेलालजी मुणोत की प्रथम पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री धर्मेन्द्र कुमारजी, निर्मल कुमारजी मुणोत, अमरावती, सहयोगार्थ।

1100/- श्री लाभश्वेरजी जैन (करेला वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, श्री विनेश्वरजी जैन (शांतिलालजी जैन, करेला वाले) का 27 जनवरी 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री राधेश्यामजी-सुरेशचन्दजी जैन (कुण्डेरा वाले), मानसरोवर, जयपुर, सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री राधेश्यामजी जैन का 19 मार्च 2015 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री प्रकाश जी, राजेश जी बरडिया, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री माणकचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री हेमराज जी बरडिया का 16 मार्च 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

65000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र' पुस्तक के पुन: प्रकाशन हेतु।

21000/- श्री रिखबचन्दजी बोथरा, औरंगाबाद-जयपुर, पुस्तक 'आत्म-चिन्तन' के पुन: प्रकाशन हेतु।

2100/- पोखरणा परिवार, अजमेर, सहयोगार्थ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

9000/- श्री कुशलराजजी, पदमचन्दजी, महावीरजी कोठारी, निमाज, स्व. श्री कनकमल जी कोठारी की पुण्यस्मृति में।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्रीमती अरुणा जी कर्णावट धर्मपत्नी श्री महेन्द्रसिंह जी कर्णावट, जयपुर, सुपौत्र आह्वान कर्णावट (सुपुत्र श्री विक्रमजी-श्रीमती रूनाजी कर्णावट) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड
(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)
दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

100000/- श्री राजेशजी, विमलजी, पवनजी बोहरा, चेन्नई।

24000/- श्री रंगरूपमल जी चोरडिया, चेन्नई।

24000/- श्री रिखबचन्द जी बोथरा, औरंगाबाद, श्री भंवरलाल जी बोथरा एवं श्रीमती सुमनजी बोथरा की पुण्यस्मृति में।

12000/- श्रीमती कंचनजी, राजीवजी, संजीवजी बापना, जोधपुर-कोलकाता, श्री रतनलाल जी बापना की चतुर्थ पुण्यस्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व

वैशाख कृष्णा 8, रविवार	**12.04.2015**	**अष्टमी**
वैशाख कृष्णा 14, शुक्रवार	**17.04.2015**	**चतुर्दशी**
वैशाख कृष्णा 30, शनिवार	**18.04.2015**	**पक्खी**
वैशाख शुक्ला 3, मंगलवार	**21.04.2015**	**अक्षय तृतीया**
वैशाख शुक्ला 8, रविवार	**26.04.2015**	**पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. की 24 वीं पुण्यतिथि**
वैशाख शुक्ला 14, रविवार	**03.05.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी**
ज्येष्ठ कृष्णा 5, शनिवार	**09.05.2015**	**आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वां आचार्य पदारोहण दिवस**
ज्येष्ठ कृष्णा 6, रविवार	**10.05.2015**	**पूज्य श्री कुशलचन्दजी म.सा. की 232 वीं पुण्यतिथि**
ज्येष्ठ कृष्णा 8, सोमवार	**11.05.2015**	**अष्टमी**
ज्येष्ठ कृष्णा 14, रविवार	**17.05.2015**	**चतुर्दशी, पक्खी**

संस्कारों का दायित्व

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आपके बच्चे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं। वे कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं आपको ध्यान नहीं रहता। उनका खान-पान, रहन-सहन और आदतें बदल जाती हैं। घर के जितने चाहिये उतने संस्कार नहीं, फिर संगति दोष से बच्चों में विकृतियाँ आ जाती हैं, तब आप महाराज से आकर कहते हैं- "महाराज! आप बच्चे को समझाओ।" मैं पूछूँ- आपने बच्चों को संस्कार कब दिए? क्या उन्हें जैन धर्म और निर्ग्रंथ परम्परा का कभी ज्ञान दिया है? आपको तो बच्चों के साथ बैठकर बात करने का समय नहीं, तो संस्कार कौन दे? कभी किसी का बच्चा अध्ययन के लिए विदेश गया और वहाँ से कोई मेम ले आए तो हमसे कहेंगे- "बाबजी! क्या करें?" *-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-3 से गृहीत*

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 69 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 11 से 18 सितम्बर 2015** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2015** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763,मो.-9460441570(संयोजक),9461013878(सचिव), 94142-67824,9462543360(का.प्रभारी),ईमेल-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री पुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए – 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट 93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

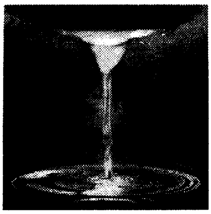
Electric Arc Furnace

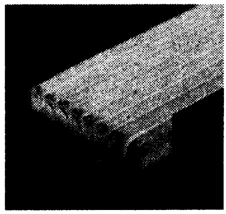
Billets

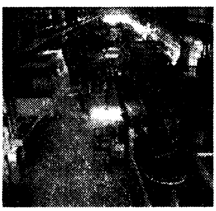
Rolling Mill

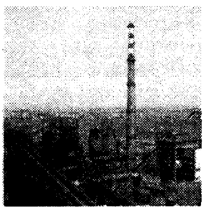
Captive Power Plant

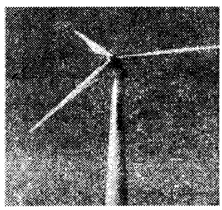
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/– रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् राजीव जी डागा, ह्यूस्टन। श्रीमती नीता जी डागा, ह्यूस्टन। श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पून्नामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road,Annanagar West Extn.,**CHENNAI-600101** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

K.L. COTTON MILLS
Kanti
T.M.J. No. 1393

kelico®
remembering quality

स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण
और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन
को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।
-आचार्य हस्ती

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
• PACHPADRA • PALI • ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali - 306 401 (Raj.)
Mobile: 094141 22757
135, N.M.S.Compound, ERODE - 638 001 (T.N.)
✆ Off : 3205500, Mobile: 93600 25001

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को
आत्म-कल्याण के लिए
स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के
साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य
का विचार करके ही
अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व
तामसी आहार होता है।
समाधि का अभिलाषी साधक
ऐसी तामसी आहार से
दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या
न करें, अगर त्याग नहीं है तो
उसे दोष लग ही रहा है। अतः
रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान
करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – **समस्त जैन समाज**

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अप्रेल, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 04 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रेल, 2015 ★ वैशाख, 2072

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी वाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, वापू वाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन